चौथी दुनिया

www.chauthiduniya.com

हिंदी का पहला साप्ताहिक अख़बार

मूल्य 5 रुपये

1986 से प्रकाशित | 12 अक्टूबर–18 अक्टूबर, 2015 | हर शुक्रवार को प्रकाशित | Postal Regn. No. DL (ND)-11/6139/2015-17, RNI No. DELHIN/2009/30467

हास्य फिल्मों का सबसे सशक्त पक्ष उसके संवाद होने चाहिए और आज यही चीज फिल्मों में नहीं दिखाई देती. होगया दिमाग का दही इस अर्थ में अलग फिल्म है. इस फिल्म का हर संवाद हंसाता है, इस फिल्म का हर संवाद ज़िंदगी से जुड़ा है, इस फिल्म का हर संवाद लोगों के मन में सवाल खड़े करता है, चिंता पैदा करता है और उनका हल भी देता है. उदाहरण के तौर पर ओम पुरी साहब एक संवाद में कहते हैं, भूसे के ढेर पर बैठकर बीड़ी मत पी, खाक हो जाएगा. यह ज़िंदगी से जुड़ा हुआ संवाद है. हमने देखा कि इस फिल्म के सारे संवाद लोगों को हंसाते हैं, उनके चेहरे पर मुस्कान लाते हैं और ज़िंदगी की सच्चाइयों से भी जोड़ते हैं.

संतोष भारतीय

पहले कॉमेडी होती थी, उसमें ऊल-जलूल हरकतें भी होती थीं, लेकिन फूहड़ता का अंश कम रहता था. अगर दादा कोंडके को छोड़ दें, जो मराठी फिल्मों में द्विअर्थी संवादों के प्रणेता रहे और जिन्होंने अपनी फिल्मों में द्विअर्थी संवादों को लेकर हास्य पैदा करने की कोशिश की. कम से कम हिंदी में ऐसा कोई उदाहरण मुझे दिखाई नहीं देता. पिछले दिनों जितनी हास्य फिल्में हिंदी में आईं, वे सब द्विअर्थी संवादों और भौड़े एक्शन का उदाहरण बन गईं. हास्य फिल्मों में संवाद का कोई स्थान ही नहीं रहा और जिन फिल्मों में रहा भी, उनके संवाद ज़िंदगी से जुड़े हुए कभी नहीं रहे. हास्य फिल्मों में संगीत के ऊपर ध्यान ही नहीं दिया जाता. कुछ भी आयं-बायं-शायं बना दो, वह हास्य फिल्मों में चल जाता है, ऐसा कहा जाने लगा.

16 अक्टूबर को दर्शकों के सामने आने वाली फिल्म **होगया दिमाग का दही** बिल्कुल विपरीत उदाहरण है. कैसे एक स्वस्थ, मनोरंजक, हेल्दी कॉमेडी, फैमिली कॉमेडी फिल्म बनाई जा सकती है, इसका अगर कोई एकमात्र उदाहरण अभी हमारे सामने है, तो वह फिल्म **होगया दिमाग का दही** है. फिल्म **होगया दिमाग का दही** उन सारे प्रतिमानों पर खरी उतरती है, जिनकी अभी हम आलोचना कर रहे हैं. इस फिल्म का सबसे बड़ा आकर्षण कादर खान साहब का दोबारा सिनेमा में आना है. कादर खान साहब ने फिल्मों से तौबा कर ली थी, वह अपने एक तरह के रोल से ऊब गए थे. उन्होंने कहा, मैं तो प्रकाश मेहरा और मनमोहन देसाई जैसे निर्देशकों के साथ काम करना चाहता था, पर जब वे दोनों नहीं रहे, तो बाद के निर्देशकों ने फूहड़ता की पराकाष्ठा पार कर ली. मैं पेट के लिए काम करता रहा, लेकिन मेरा मन कभी संतुष्ट नहीं हुआ.

जब उनसे पूछा गया कि आपने फिर फिल्म **होगया दिमाग का दही** में काम करना क्यों स्वीकार किया? जवाब में उन्होंने कहा, जब मैंने फिल्म की कहानी सुनी, स्क्रिप्ट सुनी, तो मुझे लगा कि फिल्म बनाने वाले शायद मेरे साथ न्याय करें. कादर खान साहब ने फिल्म की निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी के सामने एक सवाल रखा कि आप मुझे फिल्म के डायलॉग सुनाइए, तब मैं इस फिल्म में काम करने के बारे में हां या ना करूंगा. फ़ौज़िया अर्शी ने डायलॉग लिखे और उन्हें जाकर कादर खान साहब को सुनाया. डायलॉग सुनकर कादर खान साहब को लगा कि उन्हें इस फिल्म में काम करना चाहिए और उन्होंने फिल्म में काम किया. इतना ही नहीं, फिल्म की शूटिंग की समाप्ति पर उन्होंने घोषणा की कि वह चाहते हैं कि उनकी बनाई और निर्देशित फिल्म शमा, जिसमें शबाना आज़मी लीड रोल में थीं, उसे डेली मल्टीमीडिया पुर्ननिर्मित करे और उसका निर्देशन फ़ौज़िया अर्शी करें. उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें इतना भरोसा डेली मल्टीमीडिया लिमिटेड और फ़ौज़िया अर्शी पर हो गया है कि उनके दिमाग में एक कहानी चल रही है, जिसके ऊपर वह फिल्म बनाना चाहते हैं, उसकी स्क्रिप्ट मैं लिखवाऊंगा और उसका शीर्षक होगा परछाईं. यह दादा और पोती की कहानी है.

कादर खान साहब का इस फिल्म में काम करना, बल्कि यह विश्वास दिलाना कि डेली मल्टीमीडिया लिमिटेड प्रकाश मेहरा एवं मनमोहन देसाई जैसे निर्देशकों की सोच और समझ को आगे बढ़ा सकता है, डेली मल्टीमीडिया के लिए एक बड़े गर्व का विषय बन गया. कादर खान साहब ने फिल्म में काम किया और उनके साथ इस फिल्म में ओम पुरी, राजपाल यादव, संजय मिश्रा, रज्जाक खान, चित्राशी रावत जैसे लोग हैं. इसमें तीन नए लड़के भी हैं, जिनकी यह पहली फिल्म है, अमित जे, दानिश भट्ट और बंटी चोपड़ा. इसमें तीन लड़कियां हैं, जिनमें चक दे इंडिया की सबको याद रहने वाली लड़की, जिसने चक दे इंडिया में हरियाणवी लड़की का रोल निभाया था यानी कोमल चौटाला, वह इस फिल्म में अपने पूरे ग्लैमरस अवतार में है, जिसका असली नाम चित्राशी रावत है. इसके अलावा इस फिल्म में भावना चौहान और नेहा कराद भी हैं.

यह फिल्म पांच बड़े कॉमेडियंस का गुलदस्ता है. फिल्म बनाने वाले कह रहे हैं कि यह फाइव ग्रेट कॉमेडियंस ऑफ द सेंचुरी का पहली बार पर्दे पर पदार्पण है. ओम पुरी साहब, राजपाल यादव, संजय मिश्रा, सुभाष यादव, रज्ज़ाक खान के साथ इस फिल्म में मराठी फिल्मों के मशहूर हास्य अभिनेता विजय पाटकर भी हैं. इस फिल्म के कैरेक्टर्स भी बड़े इंटरेस्टिंग हैं. मिर्जा किशन सिंह जोसफ, मसाला, एडवोकेट आशिक अली डायवोर्स स्पेशलिस्ट,

(शेष पृष्ठ 2 पर)

आज के दिलीप कुमार हैं ओम पुरी

आज के दौर में जब कहीं अभिनय नहीं दिखाई देता, तब लगता है कि अभिनय के नाम पर अंधेरा छा रहा है. इस अंधेरे में एक ही रोशनी है, जिसका नाम ओम पुरी है. अगर ध्यान से देखें, तो ओम पुरी आज के दौर के दिलीप कुमार हैं. जिस तरह दिलीप कुमार ने फिल्म सगीना महतो और शक्ति में गेटअप के साथ अद्भुत अभिनय किया है, वैसा ही बेजोड़ अभिनय ओम पुरी ने फिल्म होगया दिमाग का दही में गेटअप के साथ किया है. आवाज़ की गंभीरता, आवाज़ का जादू और आवाज़ की अदायगी में ओम पुरी का कोई सानी नहीं है. व्यक्तिगत ज़िंदगी में ओम पुरी वैसे ही बेलौस, मोहब्बत से भरपूर, आत्मसम्मान लिए शख्सियत के मालिक हैं, जैसे दिलीप कुमार. इसलिए जिस फिल्म में भी ओम पुरी होते हैं, उनका रोल लोगों के लिए यादगार बन जाता है. चाहे पुरानी फिल्म आक्रोश हो, सद्गति या अर्द्धसत्य हो अथवा नई फिल्म बजरंगी भाईजान हो. बजरंगी भाईजान से ओम पुरी साहब का चरित्र हटा दीजिए या छोटी बच्ची का चरित्र निभाने वाली हर्षाली का, फिल्म बजरंगी भाईजान औसत दर्जे की बनकर रह जाती. ■

अंदर के पन्नों पर...

- छा गए मिर्ज़ा साहब, मसाला बिखेर गए अपनी खुशबू
- अख़बारों और न्यूज़ पोर्टल्स की सुर्खियों में होगया दिमाग़ का दही
- यह फिल्म बेहतर कॉमेडी के लिए याद की जाएगी: कादर ख़ान
- सोशल मीडिया पर धूम मचाती फिल्म होगया दिमाग़ का दही
- कादर ख़ान को मिले पद्मश्री : रंग ला रही है मुहिम
- मौला मेरी आवाज को पसंद करता है : कैलाश खेर
- होगया दिमाग़ का दही : विदेशी मीडिया ने भी की तारीफ
- यह दही मसालेदार है : राजपाल यादव

होगया दिमाग़ का दही

यह फिल्म हमें क्यों देखनी चाहिए

पृष्ठ 1 का शेष

पव्वा और एक अन्य कैरेक्टर है, जो कुत्ता है, जिसे फिल्म में गब्बर नाम दिया गया है. फिल्म की निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी के मुताबिक, इस फिल्म में एक बड़ी हवेली है, वह भी एक कैरेक्टर है.

दरअसल, यह फिल्म एक ऐसी कहानी है, जो बहुत आसान तरीके से कही गई है. इस कहानी में बाप है, उसके तीन बेटे हैं. फिल्म में एक गाना है, जो बताता है कि कहानी के आसपास कैसी बनावट है, जिसे मीका ने गाया है कि बाप होना पाप...अल्लाह माफ़ करे. हमारे दौर में पैंतालिस साल से बड़े हर शख़्स की ऐसी ही कहानी है कि बेटे उनकी बात नहीं मानते, उम्र के अंतर को पीढ़ी गत अंतर बताते हुए अपने बाप को बेवकूफ समझते हैं. और, बाप अपना सिर पीटता है कि मैंने क्यों औलादें पैदा कीं, मैंने कोई पाप किया है शायद. इसे मीका ने बड़े खूबसूरत तरीके से बाप होना पाप...अल्लाह माफ़ करे गाने के रूप में गाया है.

हास्य फिल्मों का सबसे बड़ा सशक्त पक्ष उसके संवाद होने चाहिए और आज यही चीज फिल्मों में नहीं दिखाई देती. होगया दिमाग का दही इस अर्थ में अलग फिल्म है. इस फिल्म का हर संवाद हंसाता है, इस फिल्म का हर संवाद ज़िंदगी से जुड़ा है, इस फिल्म का हर संवाद लोगों के मन में सवाल खड़े करता है, चिंता पैदा करता है और उनका हल भी देता है. उदाहरण के तौर पर ओम पुरी साहब एक संवाद में कहते हैं, भूसे के ढेर पर बैठकर बीड़ी मत पी, खाक हो जाएगा. यह ज़िंदगी से जुड़ा हुआ संवाद है. हमने देखा कि इस फिल्म के सारे संवाद लोगों को हंसाते हैं, उनके चेहरे पर मुस्कान लाते हैं और ज़िंदगी की सच्चाइयों से भी जोड़ते हैं.

फिल्म का संगीत अनूठा है. इस फिल्म में चार गाने हैं, जिनमें पहला गाना कुणाल गांजावाला एवं रितु पाठक ने गाया है, दूसरा गाना मीका सिंह ने गाया है, तीसरा गाना खुद फिल्म की संगीत निर्देशिका फ़ौज़िया अर्शी ने गाया है, जिसका मुखड़ा है, कभी तो सुन ग़ौर से...तेरी आवाज़ हूं...मना ले ज़रा प्यार से...ज़रा-सा नाराज़ हूं. हिंदी फिल्मों, विशेषकर हास्य फिल्मों से 100 प्रतिशत मैलोडी गायब हो चुकी है. यू-ट्यूब के ऊपर यह गाना वॉयरल हो चुका है और लोगों को बहुत

दिनों के बाद एक मैलोडियस गाना सुनने को मिल रहा है. फिल्म का आख़िरी सबसे बड़ा हाईलाइट उसकी कव्वाली है. खुद कैलाश खेर का कहना है कि उनकी यह कव्वाली उन्हें अवॉर्ड दिलाएगी. कैलाश खेर ने मौला-मौला गाया है और जिन लोगों ने इस मौला को सुना है, वे मंत्रमुग्ध रह गए और यही संगीत की ताकत है. यह मौला की ताकत है. जो इस गाने को सुनता है, सीधा अपने को ईश्वर से, अल्लाह से, खुदा से, वाहेगुरु से जोड़ लेता है. इस गाने को कई लोगों ने कई बार सुना और हर बार उनके रोंगटे खड़े हो गए. इस कव्वाली में फीमेल आवाज़ खुद फ़ौज़िया अर्शी की है, जिन्होंने एक और गाना गाया है. जिन लोगों ने इसे सुना है, वे इसके दीवाने हो गए हैं.

खुद फिल्म के अभिनेता ओम पुरी ने कहा, अगर संभव होता, तो मैं इस कव्वाली को री-शूट कराता और खुद इसकी लिपसिंग यानी इस पर एक्ट करता. मशहूर अभिनेता शाहबाज़ खान ने इस कव्वाली में अपनी आवाज़ दी है और एक मशहूर रेडियो जॉकी माधुरी ने इसमें फीमेल आवाज़ पर एक्शन किए हैं. फिल्म हंसाती है, गुदगुदाती है, मुस्कराने पर विवश कर देती है, सीख भी देती है और संगीत के ज़रिये ईश्वर से जोड़ देती है. इस फिल्म की निर्देशिका फ़ौज़िया अर्शी हैं और इस फिल्म का निर्माण डेली मल्टीमीडिया ने किया है. जो तर्क इस फिल्म के बारे में इतना लिखने के लिए मजबूर कर रहा है, वह तर्क है कि यह एक ट्रेंड सेट करने वाली फिल्म है. इस फिल्म में राजपाल यादव ने कमाल का काम किया है. मसाला के रूप में उन्होंने सारे चरित्रों को एक जगह जोड़ा है. संजय मिश्रा ने आशिक अली एडवोकेट डायवोर्स स्पेशलिस्ट के माध्यम से ज़िंदगी में आने वाली तकलीफों से कैसे लड़ा जाए, यह सीख देने की कोशिश की है. फिल्म देखने के बाद महसूस होता है कि तनाव से लड़ने के लिए किस तरह का सिनेमा चाहिए. टेंशन भगाने के लिए किस तरह की कहानी चाहिए, किस तरह का निर्देशन चाहिए और मन को प्रफुल्लित करने के लिए किस तरह का संगीत चाहिए. जब ये सारी चीजें मिल जाएं, तो फिल्म ट्रेंड सेटर हो जाती है और इसमें कोई दो राय नहीं कि **होगया दिमाग़ का दही** नामक यह फिल्म 16 अक्टूबर को जब पर्दे पर आएगी, तो हिंदी सिनेमा के इतिहास में एक नया ट्रेंड सेट करेगी. इस फिल्म से लोगों को चार लड़कियों से इश्क फरमाने का संदेश नहीं मिलता, इस फिल्म से लोगों को एक ही लड़की के पीछे चार लोगों के लगे होने और उसे इम्प्रेश करने का संदेश नहीं मिलता. इस फिल्म से यह संदेश मिलता है कि हमारे पिता ने हमारे लिए जो सोचा, वह सही है और मेरा बाप सचमुच में सही आदमी है. बाप को भी आख़िर में लगता है कि बच्चों का होना पाप नहीं है और बच्चों को भी आसान तरीके से सुधारा जा सकता है. फिल्म देखकर मुस्कान, खुशी, संतुष्टि का भाव दिखाई देता है, इसलिए हम कह सकते हैं कि यह फिल्म फिल्मी दुनिया में एक ऐसा नया ट्रेंड सेट करेगी, जिससे लोगों को ऐसी फिल्में बनाने की प्रेरणा मिलेगी, ताकि समाज में व्याप्त घटियापन, वहशीपन, धोखा देने की वृत्ति, आगे बढ़ने की होड़ में अपने साथी को टांग मारने की वृत्ति रुकेगी और एक स्वस्थ मनोरंजन लोगों को अच्छा संगीत सुनने के लिए प्रेरित करेगा. ■

editor@chauthiduniya.com

काश, क़व्वाली मौला-मौला पर मैं एक्ट कर पाता: ओम पुरी

सिनेमा की दुनिया में गुणात्मक परिवर्तन आया है. आज से 20-25 साल पहले तक किसान फिल्मों के केंद्र में रहा करता था. मदर इंडिया इसका एक बड़ा उदाहरण है. फिल्मों में गांव दिखाई देता था, खलिहान दिखाई देते थे, किसान का दर्द दिखाई देता था. अचानक क्या हुआ कि फिल्में इससे बहुत दूर चली गईं? न गांव के गीत हैं, न गांव की झलक है, न गांव की समस्याएं हैं.

मैं पूरी तरह से आपकी बात से सहमत हूं. मैं कहता रहा हूं कि 80 प्रतिशत लोग गांव में रहते हैं और हम देहात की बात ही नहीं कर रहे. हम बना रहे हैं वह सिनेमा, जिसका कोई ताल्लुक ही नहीं है, 80 प्रतिशत लोगों से. हम बना रहे हैं कैलेंडर गर्ल, पेज थ्री, जिस्म और धूम. जो लोग हमारा पेट भरते हैं, वे खुदकुशी कर रहे हैं. हमें उनकी कोई चिंता नहीं है. सिनेमा बहुत महत्वपूर्ण माध्यम है, बहुत शक्तिशाली माध्यम है. यह हम सबको जागरूक कर सकता है, सरकार को सोचने पर मजबूर कर सकता है. जो अच्छे फिल्म निर्माता हैं, यदि वे अच्छा-खासा रिसर्च करके फिल्म बनाते हैं, तो शायद निवारण भी बता सकें.

क्या गांव, खेत, खलिहान से जुड़ी कहानियां लिखने वाले ख़त्म हो गए या फिर फिल्म निर्माता उन्हें पसंद नहीं करते? यह चारित्रिक बदलाव कैसे हुआ?

यह तो हर विभाग में आ गया, ऊपर से लेकर नीचे तक. जब हम अपने पुराने लीडर्स को देखते हैं, महात्मा गांधी, सरदार पटेल, नेहरू जी, मौलाना आज़ाद, राजेंद्र प्रसाद आदि को, तो आज हम उन्हें ढूंढते हैं कि इतनी संजीदगी, इतनी सहनशीलता एक-दूसरे के प्रति! अब पार्लियामेंट टीवी पर दिखाने लगे. हम उनकी क्या इज्जत करेंगे, जो मारपीट करते हैं, हाथापाई करते हैं, मिर्ची पाउडर फेंकते हैं, एक-दूसरे पर कुर्सियां फेंकते हैं, माइक तोड़कर फेंकते हैं. रवींद्र नाथ टैगोर का एक नाटक है, जिसका सारांश है कि अगर आप बदलाव लाना चाहते हैं, तो आपको नीचे से नहीं, ऊपर से शुरुआत करनी पड़ेगी. यथा राजा तथा प्रजा नॉट, यथा प्रजा तथा राजा.

आप शायद यह कह रहे हैं कि जिस तरीके से राजनीति में, समाज में परिवर्तन हुआ और वे लोग, जिनका ज़िंदगी से नहीं, पैसे से जुड़ाव है, जैसे-जैसे उनका वर्चस्व बढ़ा, फिल्मों में ग़रीबी, धरती, मिट्टी की महक आदि सब ख़त्म हो गया?

बिल्कुल. मतलब जो गांधी जी के आदर्श थे कि हम अपने यहां के लोगों को रोज़गार दें. अंग्रेजों के कपड़े न पहनें. उन्होंने विदेशी कपड़े जलवा दिए, जिससे उनकी इकोनॉमी पर फ़र्क़ पड़ा और उन्हें समझ में आ गया कि हम तो आए थे पैसा कमाने और इस बुजुर्ग ने सब गड़बड़ कर दिया, ये तो अपना कपड़ा बनाने लगे हैं. बहुत किस्म के ऐसे बदलाव आ गए. मुझे तो मालूम नहीं, मैं कोई विशेषज्ञ तो हूं नहीं. जो बाहर की इतनी कंपनियां आ रही हैं, अच्छी बात है आएं, लेकिन क्या हमें कहीं नुक़सान तो नहीं हो रहा? इस पर कमेंट्स नहीं कर सकता, लेकिन शक ज़रूर होता है कि यह हमारे लिए अच्छा है या बुरा? कहीं ऐसा तो नहीं कि वे हमारे यहां का धन ले जा रही हों, हमारी सोने की चिड़िया को और ग़रीब कर रही हों? कहीं ऐसा तो नहीं कि एक तरफ़ हमारे पास डॉलर आ रहे हैं, लेकिन दूसरी तरफ़ यहां के कारीगर भी मज़दूर बन गए. जो कपड़ा बुनता था, वह मज़दूर बन गया. जो कुम्हार था, वह मज़दूर बन गया. क्योंकि, हम प्लास्टिक के कप यूज करते हैं, कुल्हड़ का इस्तेमाल नहीं करते.

ओमपुरी जितने बेहतरीन अभिनेता हैं, उतने ही बेहतरीन एवं संवेदनशील इंसान भी. चौथी दुनिया ने पिछले कुछ सालों में फिल्मों में आए परिवर्तन और उनकी आने वाली फिल्म होगया दिमाग़ का दही को लेकर उनसे विस्तार से बातचीत की. पेश हैं, उस बातचीत के मुख्य अंश:-

आपको अगर फिल्म प्रोड्यूस या डायरेक्ट करनी पड़े, तो कैसी फिल्म प्रोड्यूस या डायरेक्ट करना पसंद करेंगे?

प्रोड्यूस करने की बात तो आप मत कीजिए. मैं तो ग़रीब सिनेमा से आया हूं. 20 सालों तक मैंने वही सिनेमा किया. फिर देखा कि थोड़ा घर भी चलाना है. कोई पेंशन तो मिलेगी नहीं. हमें थोड़ा बुढ़ापे के लिए भी बचाना है. मेरे पास इतना अपार धन नहीं है कि मैं फिल्म प्रोड्यूज कर सकूं. मैं ऐसी फिल्मों में योगदान कर सकता हूं, फिल्म बनाने वाले के साथ रियायत कर सकता हूं. बस इतनी ही क्षमता है मुझमें.

मैं कहता रहा हूं कि 80 प्रतिशत लोग गांव में रहते हैं और हम देहात की बात ही नहीं कर रहे. हम बना रहे हैं वह सिनेमा, जिसका कोई ताल्लुक ही नहीं है, 80 प्रतिशत लोगों से. हम बना रहे हैं कैलेंडर गर्ल, पेज थ्री, जिस्म और धूम. जो लोग हमारा पेट भरते हैं, वे खुदकुशी कर रहे हैं. हमें उनकी कोई चिंता नहीं है. सिनेमा बहुत महत्वपूर्ण माध्यम है, बहुत शक्तिशाली माध्यम है. यह हम सबको जागरूक कर सकता है, सरकार को सोचने पर मजबूर कर सकता है.

आपने फिल्म होगया दिमाग का दही में अपना किरदार निभाया. आपकी नज़र में इस फिल्म की अच्छी बातें क्या हैं?

सबसे पहले लोकेशन का चयन. जो लोकेशन चुनी गई, वह एक पहाड़ी इलाका है. जिधर भी आप कैमरा रखेंगे, खूबसूरत फ्रेम होगा, हरियाली दिखाई देगी, पहाड़ दिखाई देंगे, फूल दिखाई देंगे. दूसरी चीज इसके अल्फाज हैं, डायलॉग हैं, जो बहुत मजेदार हैं और किरदार भी बहुत अच्छे हैं. कव्वाली बहुत अच्छी है. आप मुझे यह कव्वाली दिखाएंगे, तो मैं फिल्म देखने चला जाऊंगा. बहुत अच्छा म्यूजिक दिया है मोहतरमा ने. इस फिल्म की डायरेक्टर भी हैं फ़ौज़िया अर्शी और बहुत प्रतिभाशाली हैं. वह हाई क्वालीफाइड महिला हैं. एमए किया, एलएलबी किया. संगीत की समझ, भाषा की समझ और आई भोपाल से हैं, तो तहजीब पैदाइशी हक़ है उनका. उन्होंने गाया भी बहुत अच्छा है, बिल्कुल प्रोफेशनल सिंगर हैं, लेकिन कहती हैं, मैंने तो सीखा भी नहीं था.

मौला-मौला क़व्वाली में आपको क्या अच्छा लगा?

यह एक सूफी क़व्वाली है. जब आप किसी ऐसी शक्ति के गुण गाते हैं, जिसे देखा नहीं है, लेकिन उसकी दुनिया देखकर आप इतने मुतासिर होते हैं उससे कि एक तरह से उसका शुक्रिया अदा कर रहे हैं, उससे दुआ कर रहे हैं और उसके गुण गा रहे हैं. यह सब इमोशंस इस क़व्वाली के अंदर हैं. सुनकर दिमाग में ठंडक पड़ती है, ऐसा लगता है कि आप किसी सजदे में बैठे हैं. जिस भी धर्म-दर्शन में आप विश्वास रखते हैं, यह आपको उससे दूर नहीं ले जाएगी, यही इसकी अच्छाई है. अगर आप हिंदू हैं, तो भी आपका मन शांत हो जाएगा और मुसलमान हैं, तो भी आपका मन शांत हो जाएगा. आप भाषा नहीं समझते, तो उसकी धुन से आपको शांति मिलेगी.

किसी ने कहा कि यह क़व्वाली देखकर आपके मन में कोई ख्वाहिश जगी है. वह ख्वाहिश क्या है?

जब मैं मौला-मौला क़व्वाली देख रहा था, तो मुझे रश्क हो रहा था उस बेचारे बच्चे पर. शाहबाज और उसने बहुत अच्छा काम किया. इस तरह की क़व्वाली का मेरा बहुत मन है. यह सूफी क़व्वाली बिल्कुल लीन होकर लिखी गई. बड़ी अच्छी खुशबू आ रही है फिल्म से. काश, इस क़व्वाली पर मैं एक्ट कर पाता. ■

feedback@chauthiduniya.com

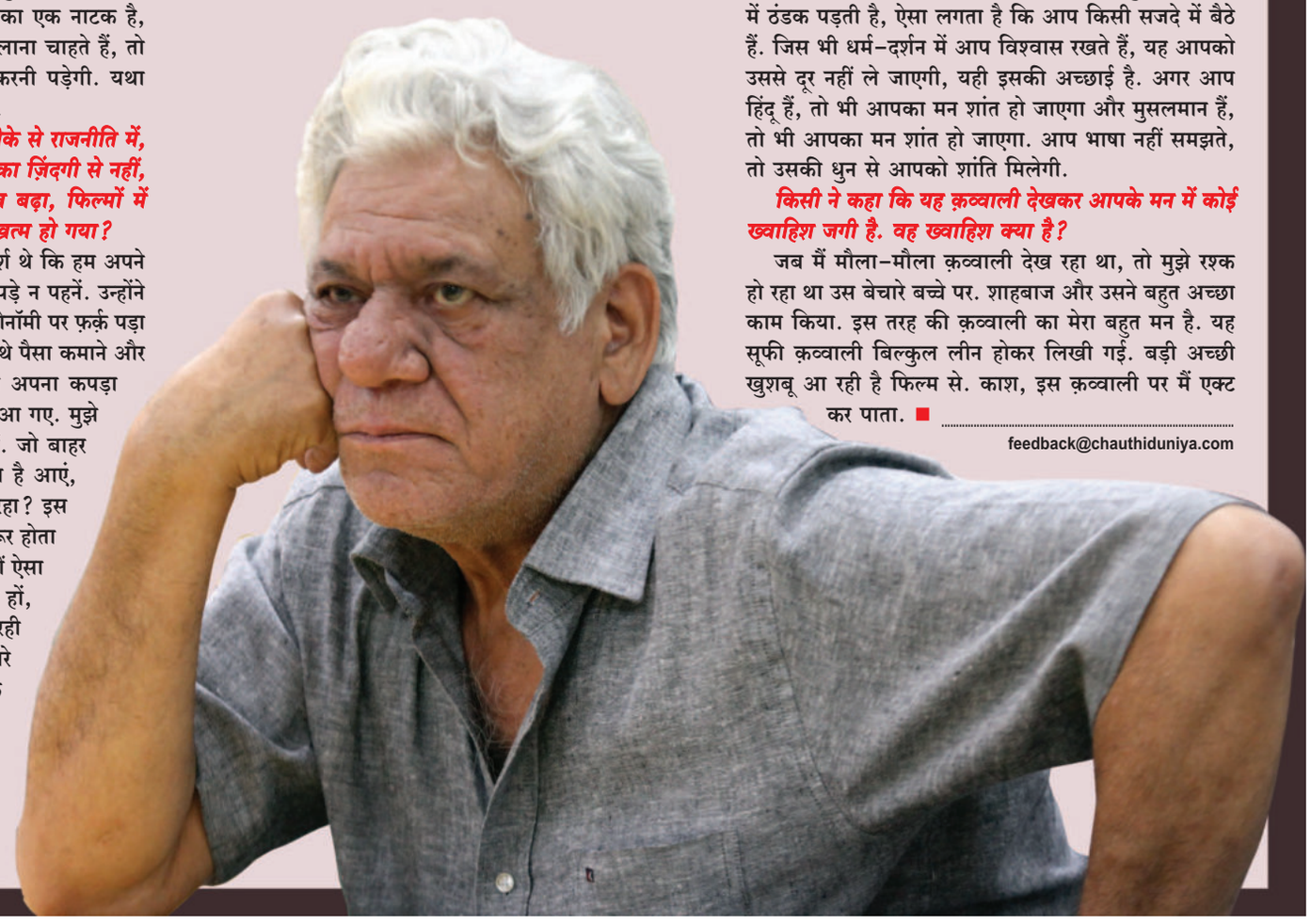

चौथी दुनिया
हिंदी का पहला साप्ताहिक अखबार

वर्ष 07 अंक 32
दिल्ली, 12 अक्टूबर–18 अक्टूबर, 2015

RNI-DELHIN/2009/30467

संपादक
संतोष भारतीय

संपादक समन्वय
डॉ. मनीष कुमार

एडिटर (इंवेस्टिगेशन)
प्रभात रंजन दीन

सहायक संपादक
सरोज कुमार सिंह (बिहार-झारखंड)
सरयू भवन, वेस्ट बोरिंग केनाल रोड,
हरीलाल स्वीट्स के निकट, पटना-800001
फोन: 0612 3211869, 09431421901

मैसर्स अंकुश पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशक रामपाल सिंह भदौरिया द्वारा जागरण प्रकाशन लिमिटेड डी 210-211 सेक्टर 63 नोएडा उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं के- 2, गैनन, चौधरी बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली 110001 से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
के-2, गैनन, चौधरी बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली 110001
कैंप कार्यालय एफ-2, सेक्टर -11, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201301

फोन न.
संपादकीय 0120-6451999
6450888
विज्ञापन व प्रसार 022-42296060
+91-8451050786
+91-9266627379
फैक्स न. 0120-2544378

पृष्ठ-16+4 (बिहार-झारखंड, उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड)

चौथी दुनिया में छपे सभी लेख अथवा सामग्री पर चौथी दुनिया का कॉपीराइट है. बिना अनुमति के किसी लेख अथवा सामग्री के पुन: प्रकाशन पर क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी.

समस्त कानूनी विवादों का क्षेत्राधिकार दिल्ली न्यायालयों के अधीन होगा.

www.chauthiduniya.com
चौथी दुनिया

फिल्म प्रमोशन के लिए दिल्ली पहुंची होगया दिमाग़ का दही की टीम

छा गए मिर्ज़ा साहब

रिलीज 16 अक्टूबर

मसाला बिखेर गए अपनी खुशबू

क्या आप जानते हैं, दुनिया का सबसे पहला शैंपू कौन-सा है? आपने बहुत सारी फिल्मों में बॉडी बिल्डर्स देखे होंगे, लेकिन क्या कभी आप किसी बदन बिल्डर से मिले? मिर्जा गालिब की शायरी भी आपने खूब सुनी होगी, लेकिन मिर्जा किशन सिंह जोसेफ की शायरी का अंदाज़-ए-बयां ही कुछ और है, जिसे आप मिस करने की ग़लती शायद ही करें. आपको इन सारे सवालों के जवाब 16 अक्टूबर को रिलीज हो रही फिल्म होगया दिमाग का दही से मिल जाएंगे. लेकिन उससे पहले खुद ओम पुरी (मिर्जा किशन सिंह जोसेफ), राजपाल यादव (मसाला) एवं फिल्म की निर्देशक फौजिया अर्शी 29 और 30 सितंबर को देश के सभी नेशनल मीडिया हाउसेज में अपनी फिल्म के प्रमोशन के लिए पहुंचे. आइए, जानते हैं कि इन दो दिनों के दौरान ओमपुरी, राजपाल यादव एवं फौजिया अर्शी ने अपनी फिल्म को लेकर कौन-कौन से नए राज पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं के साथ साझा किए.

> ओम पुरी बाकायदा अपने कैरेक्टर के अनुरूप ढले नज़र आए. उन्होंने मिर्ज़ा किशन सिंह जोसेफ की पोशाक टोपी, धोती और क्रास पहन रखा था. उनका यह लुक हर किसी को अपनी तरफ़ आकर्षित कर रहा था. 30 सितंबर को सुबह 9 बजे से लेकर रात 10 बजे तक विभिन्न न्यूज चैनलों पर इंटरव्यू का सिलसिला चलता रहा. एबीपी न्यूज के बाद, रेडियो मिर्ची, ई24, जी न्यूज, जी बिजनेस, आईबीएन7, आजतक जैसे चैनलों पर फिल्म प्रमोशन का कार्यक्रम देर शाम तक चलता रहा. इसके बाद गेस्ट हाउस, जहां टीम ठहरी थी, वहां भी देर रात तक जैन टीवी, सहारा न्यूज, एएनआई, दिल्ली प्रेस के पत्रकार ओम पुरी, राजपाल यादव और फौजिया अर्शी के इंटरव्यू लेते रहे.

चौथी दुनिया ब्यूरो

29 सितंबर को फिल्म होगया दिमाग का दही की टीम सबसे पहले माय एफएम रेडियो के दफ्तर पहुंची. वहां के कर्मचारियों ने ओम पुरी का स्वागत ज़ोरदार ठहाकों के साथ किया. ओम पुरी ने भी इस अनोखे स्वागत का जबरदस्त मजा लिया और बताया कि हंसी से बेहतर कोई इलाज (थेरेपी) नहीं है. उन्होंने माय एफएम के आरजे से बात करते हुए कहा कि होगया दिमाग का दही पूरी तरह से पारिवारिक फिल्म है, जिसे हर कोई देख सकता है और यह द्विअर्थी संवादों से मुक्त फिल्म है. इस फिल्म के डायलाग जबरदस्त हैं, जो आपको हंसाते हैं और एक संदेश भी देते हैं. अपने कैरेक्टर के नाम यानी मिर्जा किशन सिंह जोसेफ के बारे में उन्होंने बताया कि यह एक ऐसा आदमी है, जो सही मायने में धर्मनिरपेक्ष है और सभी धर्मों में विश्वास रखता है. फिल्म की निर्देशक फौजिया अर्शी ने कहा कि यह डेली मल्टीमीडिया लिमिटेड की तीसरी फिल्म है. एक फैट्सो रिलीज हो चुकी है, दूसरी भैय्याजी सुपरहिट है, जो निर्माणाधीन है और तीसरी होगया दिमाग का दही 16 अक्टूबर को रिलीज हो रही है.

इसके बाद यह टीम रेड एफएम के दफ्तर पहुंची, जहां आरजे मीनाक्षी ने ओम पुरी से पहला सवाल फिल्म के टाइटल को लेकर किया. लेकिन, ओम पुरी ने जो जवाब दिया, वह अद्भुत था. उन्होंने बताया कि दुनिया का सबसे पहला शैंपू दही ही है. उन्होंने तो बाकायदा आरजे मीनाक्षी को भी शैंपू की जगह दही का इस्तेमाल करने की सलाह दी और दावा किया कि इससे बेहतर शैंपू आपको कहीं नहीं मिलेगा तथा ठीक इसी तरह होगया दिमाग का दही से बेहतर कॉमेडी का मजा आपको कहीं नहीं मिलेगा. राजपाल यादव ने अपने कैरेक्टर के बारे में बताया कि जैसे मसाला भोजन का स्वाद बढ़ाता है, उसी तरह उनका कैरेक्टर भी इस फिल्म का स्वाद बढ़ा रहा है. यहीं पर फिल्म की निर्देशक फौजिया अर्शी ने यह खुलासा किया कि कैसे राजपाल यादव ने फिल्म के हीरो दानिश भट्ट के कसरती बदन को देखते हुए उनका नाम बदन बिल्डर रख दिया था. फौजिया अर्शी, जो निर्देशक होने के साथ-साथ इस फिल्म की संगीतकार भी हैं, ने आरजे मीनाक्षी के अनुरोध पर इसके एक गाने की दो पंक्तियां भी सुनाईं.

इसके बाद यह टीम संसद भवन के पास स्थित आकाशवाणी भवन पहुंची, जहां आल इंडिया रेडियो के कर्मचारियों के बीच राजपाल यादव और ओम पुरी के साथ फोटो खिंचवाने की होड़-सी मच गई. सैकड़ों लोगों के साथ फोटो खिंचवाने के बाद आरजे प्रीती मोहन ने राजपाल यादव का इंटरव्यू किया. राजपाल यादव ने बताया कि उन्होंने पहली बार किसी महिला निर्देशक के साथ काम किया है और उनका अनुभव शानदार रहा. वहीं आरजे सुजाता ने ओमपुरी का इंटरव्यू किया. ओम पुरी ने अपने फिल्मी सफर और होगया दिमाग का दही के बारे में विस्तार से बातचीत की. इसके बाद टीम रेडियो सिटी और रेडियो मंत्रा पहुंची, जहां एक बार फिर से फिल्म निर्देशक फौजिया अर्शी, ओम पुरी और राजपाल यादव रेडियो के श्रोताओं से रू-ब-रू हुए और अपने अनुभव साझा किए.

इसके बाद यह टीम नोएडा स्थित दैनिक हिंदुस्तान के दफ्तर पहुंची. यहां अख़बार के वरिष्ठ संपादक राजीव कटारा एवं वरिष्ठ पत्रकार जयंती रंगनाथन ने ओम पुरी, राजपाल यादव और फौजिया अर्शी से फिल्म से जुड़े कुछ गंभीर सवाल किए, जिनका इस टीम ने गंभीरता से जवाब दिया. ओम पुरी ने साफ़-साफ़ बताया कि फिल्म के दो उद्देश्य होते हैं. एक तो मनोरंजन करना और दूसरा समाज की समस्याओं को सामने रखना. उन्होंने बताया कि होगया दिमाग का दही एक विशुद्ध मनोरंजक फिल्म तो है ही, लेकिन इसके डायलाग ऐसे हैं, जिनमें कुछ संदेश भी छिपे हैं. ओम पुरी ने यह भी माना कि बेहतर कॉमेडी वही है, जो किसी व्यक्ति का मज़ाक नहीं उड़ाती, बल्कि परिस्थितिजन्य हास्य खुद-ब-खुद पैदा कर देती है और यही फिल्म होगया दिमाग का दही की खासियत है. फौजिया अर्शी ने बताया कि क़रीब 1,200 थिएटरों में यह फिल्म एक साथ 16 अक्टूबर को रिलीज हो रही है.

> राजपाल यादव ने अपने कैरेक्टर के बारे में बताया कि जैसे मसाला भोजन का स्वाद बढ़ाता है, उसी तरह उनका कैरेक्टर भी इस फिल्म का स्वाद बढ़ा रहा है. यहीं पर फिल्म की निर्देशक फौजिया अर्शी ने यह खुलासा किया कि कैसे राजपाल यादव ने फिल्म के हीरो दानिश भट्ट के कसरती बदन को देखते हुए उनका नाम बदन बिल्डर रख दिया था.

फोटो-प्रभात पाण्डेय

अमर उजाला का कॉन्फ्रेंस रूम वरिष्ठ पत्रकारों और कर्मचारियों से खचाखच भरा हुआ था. यहां पर फिल्म से इतर अन्य मसलों पर भी संवाद हुआ. मसलन, एनएसडी, एफटीटीआई में चल रही हड़ताल जैसे मुद्दे पर भी ओम पुरी ने खुलकर बातचीत की. जब उनसे यह पूछा गया कि क्या एक नए निर्देशक के साथ काम करते हुए उन्होंने फिल्म निर्माण में कोई दखल या सुझाव दिया? इस सवाल पर ओम पुरी का कहना था कि फौजिया अर्शी बहुआयामी प्रतिभा की धनी हैं, इसलिए मुझे कभी दखल देने की बात तो दूर, सुझाव देने की भी ज़रूरत नहीं पड़ी. यह पूछे जाने पर कि 16 अक्टूबर को ही रिलीज हो रही अन्य फिल्मों से आपको कंप्टीशन मिल सकता है? इस सवाल के जवाब में फौजिया अर्शी ने कहा कि यह तो अच्छी बात है. कंप्टीशन होना ही चाहिए. फिल्म होगया दिमाग का दही की टीम ने दैनिक पंजाब केसरी-नवोदय टाइम्स के साथ भी संवाद किया, जहां ओम पुरी एवं निर्देशक फौजिया अर्शी ने फिल्म से संबंधित विभिन्न सवालों के जवाब बड़ी संजीदगी के साथ दिए.

30 सितंबर को यानी दूसरे दिन यह टीम सबसे पहले एबीपी न्यूज पहुंची. ओम पुरी बाकायदा अपने कैरेक्टर के अनुरूप ढले नज़र आए. उन्होंने मिर्जा किशन सिंह जोसेफ की पोशाक टोपी, धोती और क्रास पहन रखा था. उनका यह लुक हर किसी को अपनी तरफ़ आकर्षित कर रहा था. 30 सितंबर को सुबह 9 बजे से लेकर रात 10 बजे तक विभिन्न न्यूज चैनलों पर इंटरव्यू का सिलसिला चलता रहा. एबीपी न्यूज के बाद, रेडियो मिर्ची, ई24, जी न्यूज, जी बिजनेस, आईबीएन7, आजतक जैसे चैनलों पर फिल्म प्रमोशन का कार्यक्रम देर शाम तक चलता रहा. इसके बाद गेस्ट हाउस, जहां टीम ठहरी थी, वहां भी देर रात तक जैन टीवी, सहारा न्यूज, एएनआई, दिल्ली प्रेस के पत्रकार ओम पुरी, राजपाल यादव और फौजिया अर्शी के इंटरव्यू लेते रहे. इन दो दिनों के दौरान क़रीब-क़रीब सभी राष्ट्रीय न्यूज चैनलों, अख़बारों और रेडियो के दफ्तरों में यह टीम फिल्म प्रमोशन के लिए पहुंची, जहां न सिर्फ़ पत्रकार, बल्कि वहां मौजूद आम लोग भी ओम पुरी और राजपाल यादव के साथ फोटो खिंचवाने, उनसे बात करने और फिल्म के बारे में जानने को उत्सुक नज़र आए. ■

feedback@chauthiduniya.com

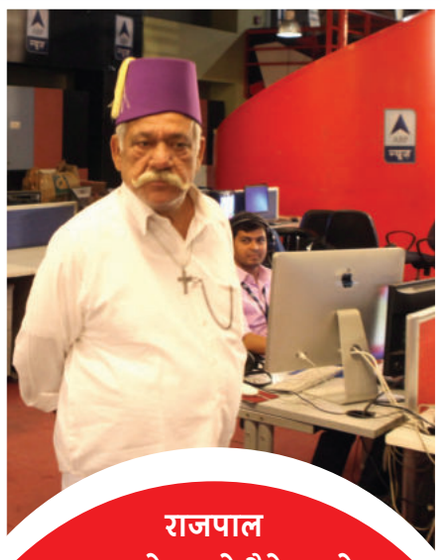

लालू का बैकवर्ड-फॉरवर्ड राग

फिर सुशासन का क्या होगा

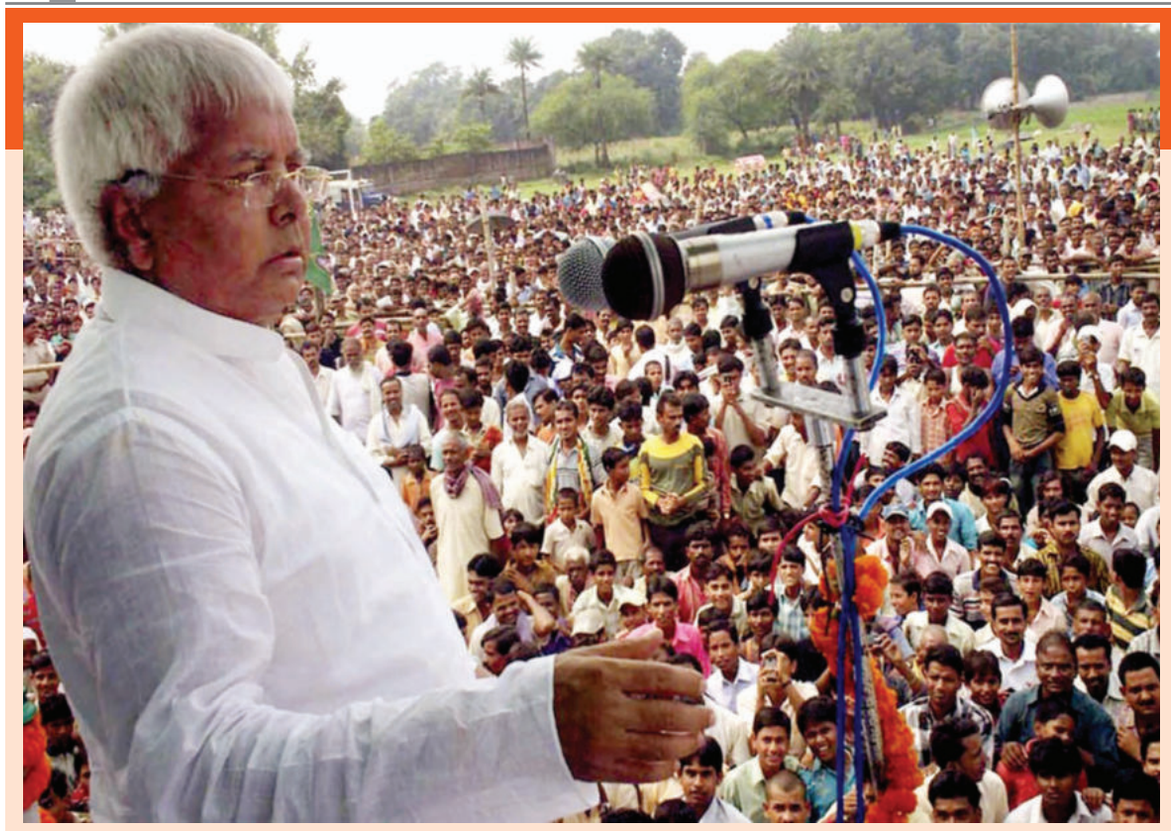

सरोज सिंह

यदुवंशियों सावधान! अपने वोट को छितराने नहीं देना. भाजपा वाला यादव के वोट को बांटने का सब उपाय कर दिया. यादव को कमज़ोर करना चाहता है. अरे, जब यादव को भैंस कमज़ोर नहीं कर सका, तो इस सब (भाजपाई) क्या है? जाग जाओ. दलाल को पहचानो. कमंडल के फोड़ देवे ला हऊ. यह लड़ाई बैकवर्ड–फॉरवर्ड की है. लालू प्रसाद ने अपने बेटे तेजस्वी यादव के चुनाव क्षेत्र राघोपुर से जब चुनाव अभियान की शुरुआत की, तो उनके इन बोलों ने बिहार चुनाव में महा–गठबंधन के एजेंडे को ही बदल कर रख दिया. क्या वास्तव में बिहार में इस बार लड़ाई बैकवर्ड–फॉरवर्ड की है या फिर लालू यादव चुनाव को इस ओर ले जाना चाह रहे हैं?

ज़ाहिर है, लालू यादव ने जब बैकवर्ड–फॉरवर्ड का राग छेड़ा है, तो उसके पीछे उनकी कोई न कोई चुनावी नीति ज़रूर होगी. लालू प्रसाद ने एक तीर चलाया, जो निशाने पर भी जाकर लग गया. भाजपा को यह अच्छी तरह एहसास है कि लालू अगर पूरे चुनाव को बैकवर्ड–फॉरवर्ड की राह पर ले गए, तो एनडीए की चुनावी संभावनाओं पर ग्रहण लग सकता है. लालू प्रसाद 1990 के अपने प्रयोग को दोहराना चाह रहे हैं, क्योंकि बैकवर्ड–फॉरवर्ड के मूलमंत्र ने ही लालू को सत्ता का रास्ता दिखाया. लालू अपनी हर सभा में बैकवर्ड–फॉरवर्ड और आरक्षण की बात कहना नहीं भूल रहे हैं. वह कहते हैं, मुझे फांसी चढ़ा दो, पर मैं आरक्षण में कोई छेड़छाड़ नहीं होने दूंगा. लालू इस बात को समझ रहे हैं कि वह सूबे की सत्ता से बाहर रहे हैं, इसलिए अपनी किसी उपलब्धि को गिनाना संभव नहीं है. लालू प्रसाद इस बात का ख्याल रख रहे हैं कि उनकी किसी बात से कहीं नीतीश कुमार को ज़्यादा फ़ायदा न हो जाए.

लालू को बैकवर्ड–फॉरवर्ड एक ऐसी दवा नज़र आ रही है, जो उनकी सभी कमज़ोरियों को ठीक कर देगी. यही वजह है कि अपने सहयोगी दलों की नाराज़गी झेल कर भी लालू प्रसाद बैकवर्ड–फॉरवर्ड का राग अलाप रहे हैं. जानकार बताते हैं कि लालू के इस चुनाव प्रचार से कांग्रेस को काफी परेशानी हो रही है, क्योंकि उसके वोटरों में सवर्ण भी शामिल हैं. पटना के गांधी मैदान में उलझन झेल लेने के बाद पार्टी अब नहीं चाहती कि लालू प्रसाद के साथ कोई मंच साझा किया जाए. इसलिए सोनिया गांधी और राहुल गांधी के चुनावी दौरे से लालू प्रसाद को दूर रखा गया है. दूसरी तरफ़ जदयू के रणनीतिकार यह सोचकर चिंतित हो रहे हैं कि अगर लालू प्रसाद इसी तरह बैकवर्ड–फॉरवर्ड और आरक्षण की बात करते रहे, तो फिर नीतीश के विकास और सुशासन के एजेंडे का क्या होगा? जदयू यह मान रहा है कि दोनों चीजें साथ नहीं चल सकती हैं. नीतीश कुमार एक विकसित बिहार का वादा कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ़ लालू प्रसाद जाति–पांत से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं. इसलिए तारतम्य के अभाव में वोटरों के पास सही संदेश नहीं जा पा रहा है. महा–गठबंधन की ताकत कहीं न कहीं इस तरह के विरोधाभासों से कमज़ोर हो रही है.

बताया जाता है कि अगले चरण के मतदान के पहले नीतीश कुमार इस मसले पर लालू प्रसाद से वन टू वन बात भी कर सकते हैं. नीतीश कुमार अपने सभी भाषणों में कह रहे हैं कि उन्होंने तो बिहार में परिवर्तन करके दिखा दिया. अब कौन–से परिवर्तन की ज़रूरत है? भाजपा बेवजह बिहार में परिवर्तन की बात कह रही है. सूबे की जनता इस बार भाजपा के झांसे में आने वाली नहीं है. नीतीश कुमार का सारा फोकस विकास पर है, पर कुछ समय वह भाजपा की आलोचना पर भी दे रहे हैं. नरेंद्र मोदी और अमित शाह उनके निशाने पर हैं. नीतीश कुमार कहते हैं कि लोकतंत्र में तानाशाही के लिए कोई जगह नहीं होती. उनकी लड़ाई बिहार के स्वाभिमान के लिए है, जो जारी रहेगी. नीतीश यह अच्छी तरह जानते–समझते हैं कि सुशासन और विकास ही उनकी ताकत है और उसे वह किसी भी हाल में कमज़ोर नहीं होने देना चाहते हैं. जातीय ताकत में नीतीश कुमार लालू के सामने कहीं नहीं टिकते हैं, इसलिए उनका पूरा दारोमदार अपने सुशासन और विकास के एजेंडे पर ही निर्भर करता है. लेकिन, लालू प्रसाद जिस तरह की भाषा बोल रहे हैं, उससे नीतीश कुछ असहज महसूस कर रहे हैं.

जहां तक भाजपा का सवाल है, तो उसके निशाने पर प्रमुखता से लालू प्रसाद हैं. भाजपा अपने 2005 के प्रयोग को ही दोहराना चाहती है यानी जंगलराज. यही वजह है कि भाजपा के सभी बड़े–छोटे नेता चिल्ला–चिल्ला कर कह रहे हैं कि लालू को वोट देने का सीधा मतलब है जंगलराज की वापसी. उधर जबसे लालू ने बैकवर्ड–फारवर्ड की लड़ाई की बात की है, भाजपा ने कुछ देर से ही सही, लेकिन काफी मजबूती से उसका प्रतिकार करना शुरू कर दिया है. बताया जा रहा है कि अमित शाह ने इस बात को लेकर भाजपा के सभी बड़े नेताओं की क्लास लगाई कि आख़िर लालू के इस जातीय बयान का जवाब देने में देरी क्यों की गई? अंदरूनी सूत्र बताते हैं कि इस मामले में अमित शाह ने सुशील मोदी तक को नहीं बख्शा. इसके ठीक अगले दिन बेगूसराय के कार्यकर्ता सम्मेलन में उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा कि भाजपा आरक्षण में किसी भी तरह के छेड़छाड़ के पक्ष में नहीं है. अमित शाह ने कहा, लालू प्रसाद झूठ के आंसू बहा रहे हैं. मैं देश की जनता को आश्वस्त कर रहा हूं कि मौजूदा आरक्षण व्यवस्था में कोई फेरबदल नहीं होगा. अमित शाह की इस लाइन के बाद अब भाजपा के सभी नेता उन्हीं की तरह बोल रहे हैं.

नीतीश कुमार को लेकर भाजपा की तल्खी कम है और सारा फोकस लालू प्रसाद पर किया जा रहा है. भाजपा की रणनीति बहुत साफ़ है. विकास का नंबर पहला और लालू प्रसाद के बयानों–आरोपों का मुंहतोड़ जवाब. भाजपा यह समझ रही है कि उसकी असली लड़ाई लालू प्रसाद से है. इसलिए बिना कोई मौक़ा गंवाए ताबड़तोड़ हमला किया जाए. जहां तक भाजपा के सहयोगी दलों की बात है, तो राम विलास पासवान और उपेंद्र कुशवाहा भी क़रीब–क़रीब भाजपा की लाइन पर ही बोल रहे हैं. लालू प्रसाद पर हमला उनका पहला टास्क है और उसके बाद विकास का सपना ये दोनों नेता बिहार की जनता को दिखा रहे हैं. पप्पू यादव अपनी सभाओं में लालू प्रसाद और नीतीश कुमार, दोनों पर ही जमकर हमला कर रहे हैं. देखा जाए, तो चुनावी समर में इस वक्त सभी अपनी–अपनी लाइन पर ही चल रहे हैं और इसी लिहाज से उन्हें जनता का रिस्पांस भी मिल रहा है. ■

feedback@chauthiduniya.com

आधी आबादी : मतदान में आगे, भागीदारी में पीछे

दिव्या त्रिपाठी

आज़ादी के साढ़े छह दशकों के बाद भी महिलाओं को वह सम्मान नहीं मिल सका है, जिसकी वे हक़दार हैं. हर जगह अपनी ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाने वाली महिलाएं देश की राजनीतिक धारा में आज भी उपेक्षित हैं. अपने चुनाव घोषणा–पत्र में सभी राजनीतिक दल महिलाओं के लिए आरक्षण, उनकी सुरक्षा एवं उनके विकास को मुद्दा बनाते हैं, लेकिन जब उन्हें भागीदारी देने का मौक़ा सामने आता है, तो सिर्फ़ खानापूर्ति कर दी जाती है. हर चुनाव में महिलाओं के वोटों पर कब्जा करने के लिए तरह–तरह की रणनीतियां बनाई जाती हैं, लेकिन जब उन्हें प्रत्याशी बनाने की बारी आती है, तो हर बड़ा–छोटा, राष्ट्रीय–क्षेत्रीय दल अपने क़दम पीछे खींच लेता है. 243 सदस्यीय बिहार विधानसभा के पिछले और आगामी चुनाव के लिए मैदान में उतरीं महिला प्रत्याशियों की संख्या इसका जीता–जागता प्रमाण है. वर्ष 2010 के विधानसभा चुनाव में जदयू–भाजपा ने मिलकर सिर्फ़ 35 महिलाओं को प्रत्याशी बनाया. वहीं कांग्रेस ने 23 और राजद–लोजपा ने मिलकर 17 महिलाओं को मैदान में उतारा. जब बड़ी राजनीतिक पार्टियों का महिलाओं को टिकट देने के मामले में यह हाल है, तो छोटी पार्टियों में महिलाओं की स्थिति का अंदाज़ा सहज ही लगाया जा सकता है. इस बार भी महिलाओं को निराशा हाथ लगी है. एनडीए के घटक दलों ने अभी तक मात्र 23 और महा–गठबंधन ने 25 महिला प्रत्याशी उतार कर बिहार की महिलाओं की कर्तव्यनिष्ठा पर सवाल खड़ा किया है. एनडीए में भाजपा ने 14, हम एवं लोजपा ने चार–चार और रालोसपा ने मात्र एक महिला प्रत्याशी मैदान में उतारने की जहमत उठाई. वहीं महा–गठबंधन कोटे से जदयू एवं राजद ने 10–10 और कांग्रेस ने पांच महिलाओं को टिकट दिए.

बिहार में आधी आबादी के सशक्तीकरण की बात हर राजनीतिक दल करता है, लेकिन जब चुनाव आते हैं, तो महिलाओं को पिछली कतार में भेज दिया जाता है. इस बार तो कई प्रबल दावेदार महिलाओं को टिकट से वंचित कर दिया गया. यहां तक कि पिछले चुनाव में जीत दर्ज करने वाली महिला विधायकों के भी टिकट काट दिए गए.

बिहार में आधी आबादी के सशक्तीकरण की बात हर राजनीतिक दल करता है, लेकिन जब चुनाव आते हैं, तो महिलाओं को पिछली कतार में भेज दिया जाता है. इस बार तो कई प्रबल दावेदार महिलाओं को टिकट से वंचित कर दिया गया. यहां तक कि पिछले चुनाव में जीत दर्ज करने वाली महिला विधायकों के भी टिकट काट दिए गए. इस बार के विधानसभा चुनाव में महिलाओं की भागीदारी में आई गिरावट से महिला नेताओं–कार्यकर्ताओं में गहरा असंतोष देखा जा रहा है. रालोसपा की राष्ट्रीय सचिव सीमा सक्सेना महिलाओं को कम टिकट मिलने से आहत हैं. वह कहती हैं कि आरक्षण और बराबरी का दर्जा जैसी बातें सिर्फ़ जुबानी जमा–खर्च है. इन पर अमल किसी स्तर पर नहीं हो रहा है. आज महिलाएं हर क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं, इसलिए उन्हें भी सत्ता और सरकार में हिस्सेदारी मिलनी चाहिए. बिहार प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं बेगूसराय विधानसभा क्षेत्र से पार्टी प्रत्याशी अमिता भूषण कहती हैं कि इस बार कांग्रेस कम सीटों पर चुनाव लड़ रही है, इस वजह से महिला उम्मीदवारों की संख्या कम है. अमिता कहती हैं कि कई जगह कांग्रेस की स्थिति मजबूत है, लेकिन वे सीटें पार्टी के हिस्से में नहीं आईं. यह भी एक वजह है. चूंकि लड़ाई बड़ी है, इसलिए इस बार कम टिकटों पर भी पार्टी संतुष्ट है, लेकिन कम से कम 10–15 महिलाओं को टिकट मिलने चाहिए थे, जिससे बिहार में कांग्रेस का जनाधार मजबूत होता.

पिछली बार ब्रह्मपुर विधानसभा क्षेत्र से बतौर भाजपा प्रत्याशी जीतकर आईं दिलमणि देवी का टिकट काट कर सीपी ठाकुर के बेटे विवेक ठाकुर को दे दिया गया. दिलमणि देवी ने कहा कि सुखदा पांडेय और उनका टिकट काट कर यह साबित कर दिया गया कि भाजपा में महिलाओं की कितनी इज्जत है. दिलमणि देवी कहती हैं, मैं 2010 में चुनाव नहीं लड़ना चाहती थी, लेकिन मेरे घर आकर मुझे टिकट देने की बात कही गई. चुनाव जीत कर भी दिखाया. लेकिन, इस बार मेरा टिकट काट दिया गया. भाजपा जैसी बड़ी पार्टियों को कम से कम 25–30 महिलाओं को मैदान में उतारना चाहिए. बक्सर से भाजपा विधायक और मंत्री रह चुकीं सुखदा पांडेय अपना टिकट काटे जाने से खासी आहत हैं. लोजपा नेता नीलम सिन्हा ने कहा कि बिहार में महिलाओं को आधी आबादी कहकर उनके वोट ठगने का काम चल रहा है. घर से लेकर बाहर तक, हर जगह महिलाओं की उपेक्षा हो रही है. मंच से बराबरी की बात कही जाती है, लेकिन जब हक़ देने का मौक़ा आता है, तो उन्हें दरकिनार कर दिया जाता है. ■

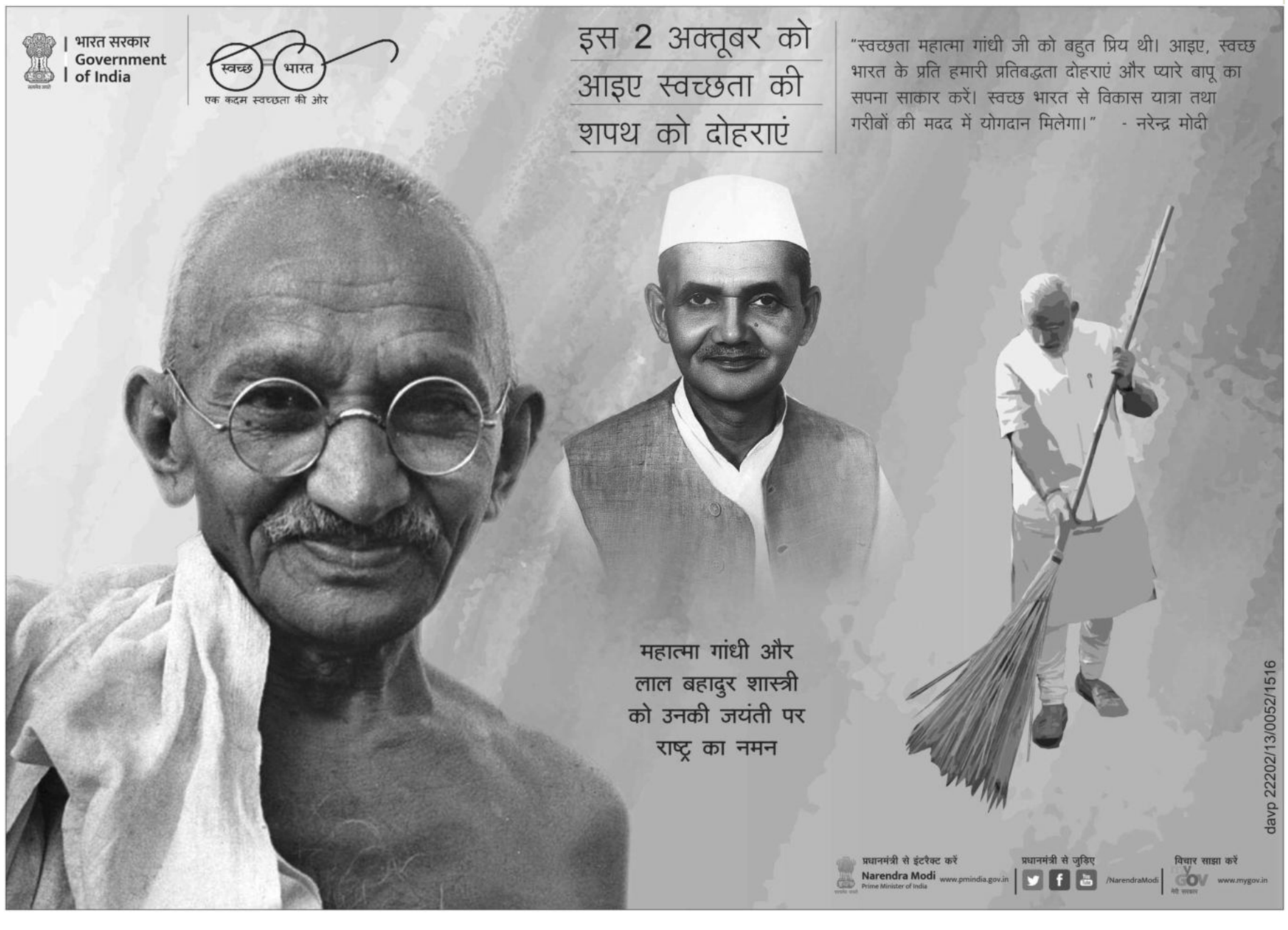

बिहार चुनाव विशेष बिहार चुनाव

ओवैसी ने सीमांचल का मैदान क्यों चुना, इसका अंदाज़ा भी लगा लीजिए. सीमांचल में चार ज़िले किशनगंज, अररिया, पूर्णिया और कटिहार हैं, जिनमें 24 विधानसभा सीटें हैं. आबादी के लिहाज से देखा जाए, तो 2011 की जनगणना के मुताबिक, किशनगंज में 78 प्रतिशत, कटिहार में 43 प्रतिशत, अररिया में 41 प्रतिशत और पूर्णिया में 37 प्रतिशत मुस्लिम आबादी है. इन आंकड़ों के ज़रिये आसानी के साथ अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र होने के साथ-साथ सीमांचल स्वयंभू सेक्युलर पार्टियों का मजबूत किला है.

ओवैसी ने कर दी सबकी नींद हराम

बिहार चुनाव में बैरिस्टर असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ऑल इंडिया मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लिमीन के उतरने से महा-गठबंधन के नेताओं की नींद हराम हो गई है. उन्हें लगता है कि ओवैसी की पार्टी के चुनाव लड़ने से उनकी धर्मनिरपेक्ष राजनीति का बना-बनाया खेल बिगड़ जाएगा, परंपरागत मुस्लिम वोट बैंक बिखर जाएगा और सत्ता में बने रहने के उनके सारे ख्वाब चकनाचूर हो जाएंगे. यही वजह है कि महा-गठबंधन के नेता ऑल इंडिया मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लिमीन को वोट कटवा पार्टी और उसके प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी को भाजपा एजेंट जैसे खिताब से नवाज रहे हैं. हालांकि, मुलायम सिंह का तीसरा मोर्चा और कम्युनिस्ट पार्टियां भी चुनाव मैदान में हैं, लेकिन महा-गठबंधन के नेता उन्हें ललकारने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे. आइए, वे कारण तलाश करते हैं, जिनके चलते ओवैसी और उनकी पार्टी महा-गठबंधन के नेताओं की आंख की किरकिरी बन गए...

शाहिद नईम

बिहार विधानसभा चुनाव की घोषणा होने से पहले यह आम चर्चा थी कि इस बार राजद, जदयू एवं कांग्रेस के महा-गठबंधन का सीधा मुक़ाबला भाजपा से होगा और इस सीधे मुक़ाबले में यकीनी तौर पर जीत की देवी महा-गठबंधन पर मेहरबान होगी. लेकिन, अचानक ऑल इंडिया मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लिमीन के मुखिया ने घोषणा कर दी कि उनकी पार्टी बिहार चुनाव में हिस्सा लेगी, जिससे महा-गठबंधन के नेताओं के होश उड़ गए. वे ओवैसी के बारे में उल्टे-सीधे बयान देने लगे, जिससे लगने लगा कि उनके हार-जीत के खेल में ओवैसी की पार्टी एक बड़ी रुकावट बन गई है. यूं तो जबसे ओवैसी ने किशनगंज में रैली की थी और उस रैली में जोश-ओ-खरोश के साथ बड़ी तादाद में लोगों ने शिरकत की थी, तभी से कयास लगने लगे थे कि ओवैसी की पार्टी बिहार चुनाव में उतरेगी, लेकिन वह अपने पत्ते नहीं खोल रहे हैं. लिहाजा, उन्हें चुनाव में न उतरने के लिए पूर्व राज्यसभा सदस्य मुहम्मद अदीब ने पत्र लिखा और गुजारिश की कि आप इस चुनाव में अपने उम्मीदवार न उतार कर, सेक्युलर पार्टियों के जो भी उम्मीदवार आपको पसंद हों, उनका समर्थन करके भाजपा के बढ़ते क़दम रोकने में मुसलमानों का असर साबित करें. इसके बाद कांग्रेस प्रवक्ता मीम अफजल ने भी ओवैसी को पत्र लिखा. लेकिन, ओवैसी ने इन पत्रों पर कोई तवज्जो नहीं दी और सीमांचल इलाके में चुनाव लड़ने की घोषणा करके महा-गठबंधन को परेशानी में डाल दिया.

ओवैसी ने सीमांचल का मैदान क्यों चुना, इसका अंदाज़ा भी लगा लीजिए. सीमांचल में चार ज़िले किशनगंज, अररिया, पूर्णिया और कटिहार हैं, जिनमें 24 विधानसभा सीटें हैं. आबादी के लिहाज से देखा जाए, तो 2011 की जनगणना के मुताबिक, किशनगंज में 78 प्रतिशत, कटिहार में 43 प्रतिशत, अररिया में 41 प्रतिशत और पूर्णिया में 37 प्रतिशत मुस्लिम आबादी है. इन आंकड़ों के ज़रिये आसानी के साथ अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र होने के साथ-साथ सीमांचल स्वयंभू सेक्युलर पार्टियों का मजबूत किला है. ज़ाहिर है, यदि इस किले में कोई नई सियासी पार्टी सेंध लगाने की कोशिश करेगी, तो उसके सेक्युलर रक्षक उस पर टूट पड़ेंगे. बिहार विधानसभा के इतिहास पर नज़र डालने से पता चलता है कि 1990 के विधानसभा चुनाव में सीमांचल की 21 सीटों पर सेक्युलर पार्टियों ने कब्जा किया था, लेकिन वक्त गुज़रने के साथ-साथ सेक्युलर पार्टियों का किरदार बदलता चला गया. 2010 के विधानसभा चुनाव में सीमांचल की 24 सीटों में से भाजपा ने 13 सीटें हथियाईं, जदयू के खाते में पांच सीटें आईं, कांग्रेस को चार सीटें मिलीं और राजद महज एक सीट पर सिमट गया. ध्यान रहे कि नीतीश कुमार की पार्टी जदयू ने भाजपा के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था और उनके गठबंधन को यह फ़ायदा बाकी पार्टियों के अलग-अलग चुनाव लड़ने की वजह से मिला था.

बिहार में कांग्रेस के बाद लालू प्रसाद की पार्टी ने हुकूमत की, उसके बाद नीतीश कुमार एवं भाजपा की मिलीजुली सरकार रही. आज भी नीतीश कुमार ही बिहार के हुक्मरां हैं, लेकिन सीमांचल की किस्मत नहीं बनी. यहां के पिछड़ेपन पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया. अब जरा इस इलाके के पिछड़ेपन का अंदाज़ा लगाइए. वैसे तो पूरा बिहार पिछड़ेपन का शिकार है, लेकिन सीमांचल बिहार का सबसे पिछड़ा हुआ इलाका है. यहां के लोग बुनियादी सहूलियतों से महरूम हैं. सीमांचल में शिक्षा के लिए स्कूल मयस्सर नहीं हैं. स्वास्थ्य के लिए हेल्थ सेंटर नहीं हैं. सरकार की तरफ़ से हेल्थ सेंटर के तौर पर दी जाने वाली सहूलियत का लोगों को कोई फ़ायदा नहीं है. अगर मरीज को यहां से बाहर किसी दूसरे अस्पताल ले जाने की ज़रूरत पड़े, तो यहां की टूटी-फूटी, कच्ची-पक्की सड़कें मरीज को अस्पताल के बजाय भगवान के घर पहुंचा देती हैं. रोज़गार के अवसर शून्य हैं. किशनगंज की जूट मिल बंद पड़ी है. बिजली की कमी का तो जिक्र ही मत छेड़िए. सीमांचल चारों तरफ़ नदियों से घिरा हुआ है, इसलिए यहां सैलाब सबसे ज़्यादा आता है. नतीजतन, किसानों की फसलें सैलाब की भेंट चढ़ जाती हैं. धान की फसल तो किसानों के हाथ ही नहीं लगती. सीमांचल में जूट की खेती बहुत होती है. किसान अपनी फसल देखकर खुश होता है, लेकिन जब फसल बर्बाद हो जाती है, तो उसे लागत तक नहीं मिलती. इसके पीछे सरकारी उदासीनता है. 1994 के बाद से जूट की क़ीमत में कोई इजाफ़ा नहीं हुआ, जबकि लागत लगभग 10 गुना हो गई है, जिसके चलते किसान बदहाली के शिकार हैं. यही वजह है कि सीमांचल के 10-12 साल के मासूम बच्चे एवं नौजवान अपने माता-पिता और परिवार के पेट की आग बुझाने की ख़ातिर देश के दूरदराज इलाकों में जाकर मेहनत- मज़दूरी करते हैं.

दरअसल, सेक्युलर पार्टियां आज तक मुसलमानों को वोट बैंक के तौर पर इस्तेमाल करके उनका शोषण करती रहीं. उन्होंने मुसलमानों के मसले हल करने और उन्हें सामाजिक इंसाफ दिलाने में कभी कोई रुचि नहीं दिखाई. इन स्वयंभू सेक्युलर पार्टियों ने हमेशा भाजपा और उसकी सांप्रदायिकता का खौफ दिखाकर मुसलमानों का वोट हासिल किया और फिर उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया. यही वजह है कि आज मुसलमानों की हालत दलितों से भी बदतर हो गई है, जैसा कि सच्चर कमेटी की रिपोर्ट में इशारा भी किया गया है. ओवैसी की पार्टी के सीमांचल से चुनाव में उतरने से यहां की चुनावी फिजा बदल गई है. सीमांचल की तरक्की के लिए ओवैसी संविधान के आर्टिकल 371 के तहत स्पेशल डेवलपमेंट कमेटी की बात कर रहे हैं, जिससे यहां के माहौल में तब्दीली नज़र आने लगी है. सेक्युलर पार्टियों से यहां की जनता का मोहभंग होता दिखाई दे रहा है. हैदराबाद में काम-धंधा करने वाले बिहारवासी ओवैसी की पार्टी का प्रचार करने के लिए घर का रुख कर रहे हैं. उनका कहना है कि सेक्युलर पार्टियों ने हमारा शोषण करते-करते हमें प्रवासी बना दिया. इस सूरतेहाल से महा-गठबंधन के नेता बौखला गए हैं और ओवैसी पर भाजपा और आरएसएस का एजेंट होने का इल्जाम लगा रहे हैं. वहीं ओवैसी इसकी सख्ती के साथ निंदा करते हैं और आरएसएस एवं भाजपा को सांप्रदायिक मानते हुए अपना दुश्मन नंबर एक बताते हैं. सियासी जानकारों का कहना है कि ओवैसी की पार्टी के चुनाव में उतरने से बिहार में मुस्लिम वोट बंटेगा और उसका सीधा फ़ायदा भाजपा को होगा. कुछ लोगों का कहना है कि कब तक मुसलमान भाजपा से खौफ खाता रहेगा, सेक्युलर पार्टियों का वोट बैंक बना रहेगा और शोषण का शिकार होता रहेगा. इसलिए वक्त आ गया है कि अपना एक नया नेता बनाकर सेक्युलर पार्टियों के मकड़जाल से निकला जाए और तरक्की का रास्ता इख्तियार किया जाए.

इसमें कोई दो राय नहीं कि ओवैसी की पार्टी की वजह से बिहार में वोटों का ध्रुवीकरण हो सकता है, सेक्युलर वोट बंट सकता है और उसका फ़ायदा भाजपा को मिल सकता है. तभी तो महा-गठबंधन के नेताओं की नींद हराम है. खास तौर पर कांग्रेस बहुत ज़्यादा बेचैन है. उसके वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने हाल में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत और ओवैसी के आधे-आधे चेहरे मिलाकर ट्वीट करके यह ज़ाहिर करने की कोशिश की कि ये दोनों फिरकापरस्त भाई-भाई हैं और एक-दूसरे की मदद कर रहे हैं. लेकिन, सवाल यह है कि क्या बिहार में मुलायम सिंह का तीसरा मोर्चा और वामदल सेक्युलर वोट नहीं बांट रहे हैं? क्या उनसे महा-गठबंधन को फ़ायदा पहुंच रहा है? ■

shahidnaeem2009@gmail.com

पिता की विरासत संभालने के लिए बेटे चुनाव मैदान में

धर्मेंद्र कुमार सिंह

भारतीय राजनीति में वंशवाद कोई नई बात नहीं है. चाहे केन्द्र की राजनीति हो या राज्य की, भारत की राजनीति में वंशवाद हमेशा से ही हावी रहा है. कहना गलत नहीं होगा कि वंशवाद का इतिहास ही पुराना है. भारतीय लोकतंत्र को परिवारवाद का दीमक आजादी के समय से ही लगा हुआ है. कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक कई खानदान सत्ता पर काबिज हैं. दरअसल, लोकतंत्र के नाम पर हमारा देश राजनीतिक वंशवाद का प्रतीक बन गया है. नेता अपने परिवार को आगे बढ़ाने में लगे हैं. जवाहरलाल नेहरू देश के पहले प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने इंदिरा गांधी को आगे बढ़ाया. इंदिरा की हत्या के बाद राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने. राजीव गांधी की हत्या के कुछ साल बाद सोनिया गांधी ने पार्टी की कमान संभाली. अब उनके बेटे राहुल गांधी न सिर्फ पार्टी में उपाध्यक्ष हैं, बल्कि पार्टी का बड़ा तबका उन्हें पार्टी अध्यक्ष और पीएम पद के उम्मीदवार के तौर पर देखता है. अब बात बिहार में वंशवाद की राजनीति की करते है. बिहार विधानसभा चुनाव में वंशवाद की बेल को बढ़ाने के लिए नेताओं ने अपने पुत्रों को राजनीति के मैदान में उतार दिया है. राष्ट्रीय जनता दल के मुखिया लालू यादव का अपनी पार्टी पर पूरा वर्चस्व है. 2014 लोकसभा चुनाव में उन्होंने अपनी वंशवाद की बेल को आगे बढ़ाने के लिए अपनी बेटी मीसा भारती को पाटलीपुत्र से चुनाव मैदान में उतारा था, लेकिन वह चुनाव हार गईं. अब लालू यादव ने अपने पुत्रों को बिहार विधानसभा चुनाव के मैदान में उतारा है. लालू यादव के बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को महुआ से उम्मीदवार बनाया गया है, जबकि छोटे बेटे तेजस्वी यादव को राघोपुर से उम्मीदवार बनाया गया है. राघोपुर लालू यादव के परिवार की परंपरागत सीट रही है. इस सीट से लालू प्रसाद यादव और उनकी पत्नी राबड़ी देवी भी विधायक रह चुकी हैं. अब लालू यादव के पुत्रों पर उनके विरासत को बचाने की चुनौती है.

राम विलास पासवान भी अपनी विरासत अपने बेटे के हाथ में सौंप चुके हैं. लोक जनशक्ति पार्टी का अधिकतर फैसला अब चिराग पासवान ही लेते हैं. 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा से गठबंधन का फैसला चिराग का ही था. लोजपा बिहार विधानसभा चुनाव चिराग पासवान के नेतृत्व में ही लड़ रही है. रामविलास पासवान के भाई रामचन्द्र पासवान सांसद हैं. लोजपा ने खगड़िया जिले की अलौली सीट से रामविलास पासवान के भाई पशुपति कुमार पारस और रामचंद्र पासवान के बेटे प्रिंस राज को समस्तीपुर जिले की कल्याणपुर सीट से टिकट दिया है. सहरसा जिले की सोनबरसा सीट से रामविलास पासवान की रिश्ते की बहू सरिता पासवान को टिकट दिया गया है. रामविलास पासवान ने अपने एक और रिश्तेदार विजय पासवान को भी टिकट दिया है. यही नहीं, राजग के एक मात्र मुस्लिम सांसद महबूब अली कैसर के बेटे मोहम्मद यूसुफ को लोजपा ने खगड़िया से उम्मीदवार बनाया है.

हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने अपनी दूसरी पीढ़ी को राजनीतिक विरासत सौंपने का फैसला किया है. मांझी खुद तो जहानाबाद जिले के मखदूमपुर से उम्मीदवार हैं, तो अपने बेटे संतोष कुमार सुमन को औरंगाबाद जिले के कुटुम्बा से उम्मीदवार बनाया है. मांझी ने अपनी समधिन ज्योति मांझी को पहले ही विधायक बना रखा है. हम के प्रदेश अध्यक्ष शकुनी चौधरी मुंगेर के तारापुर से, तो उनके पुत्र राकेश कुमार खगड़िया से उम्मीदवार हैं. हम के विवादित नेता और पूर्व मंत्री नरेन्द्र सिंह के पुत्र अजय प्रताप सिंह को भाजपा ने जमुई से अपना उम्मीदवार बनाया है.

अब बात करते हैं भारतीय जनता पार्टी की. भाजपा वंशवाद पर भले ही शेखी बघारती हो, लेकिन सत्य यह है कि इस पार्टी में भी वंशवाद का खूब बोलबाला है. खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राजनीति में वंशवाद पर खूब वार करते हैं, लेकिन उन्हें भी पता है कि उनकी खुद की पार्टी वंशवाद से अछूती नहीं है. भाजपा सांसद अश्विनी चौबे के पुत्र अर्जित शाश्वत को भागलपुर से टिकट दिया गया है. डॉ. सीपी ठाकुर के पुत्र विवेक ठाकुर को ब्रह्मपुर से चुनाव मैदान में उतारा गया है. दीघा से पूर्व विधान पार्षद गंगा प्रसाद चौरसिया अपने बेटे संजीव चौरसिया को दीघा से टिकट दिलवाने में कामयाब रहे. गोरियाकोठी से बीजेपी नेता भूपेंद्र नारायण सिंह के बेटे देवेश कांत को भी टिकट दिया गया है. भाजपा सांसद हुकुमदेव नारायण यादव के विधायक बेटे अशोक यादव को केवटी से फिर से टिकट मिला है. विधायक चन्द्रप्रकाश राय का टिकट काटकर उनके पुत्र चन्द्रप्रकाश राय को चनपटिया से उम्मीदवार बनाया गया है. राजद के सांसद रहे स्वर्गीय उमाशंकर सिंह के पुत्र जितेंद्र स्वामी को दरौंधा से उम्मीदवार बनाया गया है.

भाजपा ने चारा घोटाले में सजा काट रहे पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र के पुत्र नीतीश मिश्र को झंझारपुर तथा चाराघोटाले में एक और सजायाफ्ता पूर्व सांसद जगदीश शर्मा के पुत्र राहुल शर्मा को जहानाबाद जिले के घोसी से टिकट दिया गया है. शिवहर से आरजेडी के सांसद रहे सीताराम सिंह के बेटे राणा रंधीर सिंह को भाजपा ने मधुबन से टिकट दिया है. यहां बात उन नेता पुत्रों की हो रही थी, जिन्हें टिकट मिल चुका है, अभी तो कई नेता अपने पुत्रों को टिकट दिलाने के लिए जोर आजमाइश कर रहे हैं. नेताओं के लिए पार्टी और पार्टी कार्यकर्ता से ज्यादा अपने पुत्रों का हित दिखाई दे रहा है. ऐसे ही परिवारवाद चलता रहा, तो एक दिन राजनीतिक पार्टियां प्राइवेट कंपनी बनकर रह जाएंगी. ■

feedback@chauthiduniya.com

उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्रिमंडल के पुनर्गठन के बारे में यदा-कदा कयास तो लगते ही रहे हैं, लेकिन अब यह सरकार के लिए करो या मरो जैसा मसला है, क्योंकि जिस तरह सरकार की बदनामी हुई, ऐसे में वही मंत्री सरकार के साथ रहे, तो विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का बंटाधार सुनिश्चित मानिए. 24 सितंबर को हुई बैठक में ऐसे नाकारा मंत्रियों को हटाकर नए विधायकों और कुछ विधान परिषद सदस्यों को मंत्रिमंडल में स्थान देने के साथ-साथ कुछ मंत्रियों का ओहदा बढ़ाने के बारे में भी सपा आलाकमान ने विचार किया. कद बढ़ाए जाने वाले मंत्रियों में सबसे सशक्त नाम राज्यमंत्री अरविंद सिंह गोप का है.

मोबाइल में दमकती स्टार्ट-अप की दुनिया

विशाल एस. एन.

पिछले दिनों जब मैं अपने मित्र के साथ मुंबई में रात्रि भोज के लिए गया, तो लौटते वक्त काफी रात हो गई थी. रेस्टोरेंट से बाहर निकल कर हम घर जाने के लिए हाथ देकर टैक्सियां रोकने का प्रयास करने लगे, लेकिन कोई भी टैक्सी वाला रुकने के लिए तैयार ही नहीं था. किसी के पास सवारी थी या किसी का उस तरफ़ जाने का मन नहीं था. तब मेरे मित्र ने अपना मोबाइल निकाला और उसके एक ऐप का बटन दबाया. कुछ ही क्षणों में न जाने कहां से एक गाड़ी वाला हमारे नज़दीक आकर खड़ा हो गया और गेट खोलकर बोला, सर, मैं उबेर टैक्सी से हूं. फिर उसने ससम्मान पूछा, आपको कहां जाना है? पुराने मित्र से बातें करते हुए समय का पता नहीं चला. उतरते वक्त उसने हमें धन्यवाद बोला और बिना पैसे लिए चला गया. मैं उबैर कंपनी के इस विचार से बहुत प्रभावित हुआ, जिसने यह सोचा, तकनीक के इस्तेमाल से संभव कर दिखाया और एक खाली टैक्सी को ज़रूरतमंद सवारी से मिलाकर पूरी दुनिया में एक नए व्यापार की शुरुआत की. मुझे मलाल हुआ कि मेरे दिमाग में यह विचार क्यों नहीं आया. बहरहाल, अब इस मलाल का फ़ायदा नहीं, क्योंकि उबेर की टैक्सी अब पूरे विश्व में दौड़ रही हैं. इस बारे में जानकारी ली, तो पता चला कि यह कंपनी का स्टार्ट-अप है, जो कि आज दुनिया में सबसे बड़ी टैक्सी कंपनी के रूप में उभरा है. वर्तमान में उबेर कंपनी का मूल्यांकन 100 बिलियन डॉलर से ज़्यादा का है. इस सबके पीछे सबसे ज़्यादा ध्यान खींचने वाली ख़ास बात एक विचार ही है.

स्टार्ट-अप एक नए जमाने की परिकल्पना है, जिसमें एक व्यक्ति अपने अनूठे आइडिया को टेक्नोलॉजी से जोड़कर एक नया प्रोडक्ट बनाता है. अनूठापन, नवीनता एवं व्यापारिक समझ से भरा यह आइडिया बहुत ही अच्छा होता है, लेकिन इस आइडिया को अमलीजामा पहनाने के लिए बहुत बड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है. तब इस आइडिया का मूल्यांकन होता है और तब कई सारे निवेशक आइडिया की पूंजी में रुपये की पूंजी से निवेश करते हैं. विश्व भर में कई स्टार्ट-अप ऐसे हैं, जिनका मूल्यांकन कई ख़रब रुपये है. भारत में भी हम देखते हैं कि 2007 में सचिन बंसल एवं बिनी बंसल मिलकर एक छोटे-से कमरे से ऑनलाइन पुस्तक विक्रय के लिए एक वेबसाइट की शुरुआत करते हैं. आज उनका मूल्यांकन 11 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है और उसे लोग फ्लिपकार्ट के नाम से जानते हैं. स्टार्ट-अप की संख्या भारत में बढ़ रही है. अभी भारत में सिर्फ़ 1,000 स्टार्ट-अप ही अत्यधिक सक्रियता से काम कर रहे हैं, लेकिन एक सर्वे के मुताबिक, वर्ष 2019 तक उनकी संख्या बढ़कर 56,000 होने की उम्मीद है. ई-कॉमर्स, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा एवं वित्तीय निवेश आदि क्षेत्रों में हज़ारों और स्टार्ट-अप आने वाले हैं.

उपयोगकर्ता के प्रोफाइल एवं आचरण के मुताबिक, विज्ञापन सेवाएं प्रदान करने वाली इन-मोबाइल को सिर्फ़ आठ साल पहले मोहित सक्सेना, अभय सिंघल, अमित गुप्ता एवं नवीन तिवारी ने एक कमरे से चालू किया था. आज वह ढाई बिलियन डॉलर तक पहुंच चुकी है. मनोरंजन के लिए डील लगाने वाली कंपनी स्नेपडील की स्थापना भी 2010 में हुई थी और आज वह दो बिलियन डॉलर की कंपनी है और ई-कॉमर्स का बाज़ार बनी हुई है. इन सबको पेमेंट गेटवे (भुगतान पथ) से जोड़ने वाली नोएडा की कंपनी पे-टीएम 1.5 बिलियन डॉलर तक पहुंच चुकी है. 2010 में अंकित भट्ट एवं भावीश अग्रवाल ओला

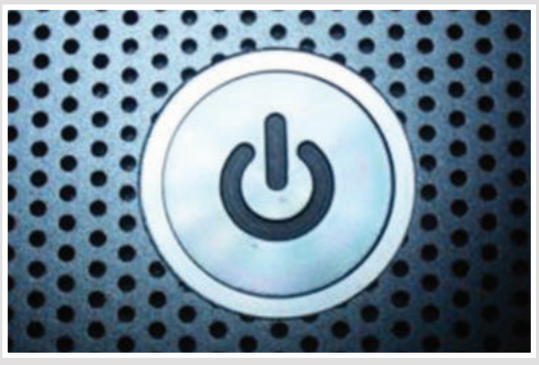

के नाम से कैब बुकिंग कंपनी खोलते हैं और सिर्फ़ पांच सालों में ही उनकी कंपनी एक बिलियन डॉलर की हो जाती है. घर का पुराना सामान खरीदने-बेचने के लिए चालू की गई क्विकर भी एक बिलियन डॉलर तक पहुंच गई है. रियल एस्टेट का ऑनलाइन बाज़ार उपलब्ध कराने वाले राहुल यादव की हाउसिंग डॉट कॉम भी महज तीन-चार सालों में 650 मिलियन डॉलर की कंपनी हो चुकी है.

इस व्यापार की रातोंरात सफलता को देखकर कई लोग स्टार्ट-अप के समुद्र में कूद रहे हैं. हम जानते हैं कि स्टार्ट-अप की सबसे बड़ी पूंजी उसका आइडिया होता है, जिसकी नींव पर स्टार्ट-अप की पूरी इमारत खड़ी होती है. आज लाखों लोग स्टार्ट-अप जैसी चीज चालू करने की इच्छा रखते हैं, लेकिन उनका स्टार्ट-अप का आइडिया उम्दा नहीं होता. वे अपने स्तरहीन आइडिया और पुरानी तकनीक पर स्टार्ट-अप बनाकर सपने देखने लगते हैं. कई बार दावतों में कुछ अनजान लोग भी मुफ्त की दावत का मजा उठा लेते हैं और पूरी दावत का मजा बिगड़ जाता है. इस तरह चलने वाले स्टार्ट-अप के बड़े-बड़े वादे, अवास्तविक मूल्यांकन एवं आइडिया को देखकर पूरे स्टार्ट-अप से विश्वास उठ जाता है. एक मछली पूरे तालाब को गंदा करती है, लेकिन कुछ समय के लिए ही.

भारत में अभी स्टार्ट-अप को बहुत आगे जाना है. आज हमारा देश सातवें स्थान पर है और इजराइल पहले स्थान पर. हमें भारत में इस तरह का माहौल बनाना होगा कि स्टार्ट-अप खोलना बहुत आसान हो. भारत में बंगलुरू, पुणे, दिल्ली-एनसीआर, नवी मुंबई और हैदराबाद आदि स्टार्ट-अप शहरों के रूप में तेजी से उभर रहे हैं. स्टार्ट-अप शहरों का परितंत्र कुछ अलग ही होता है. जब सस्ता और बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर, कुशल जनशक्ति, ऐसे युवा जो एक से एक नायाब विचारों से ओतप्रोत हों, उन विचारों को अमलीजामा पहनाने वाले डेवलपर्स और उन विचारों को समझ कर पैसा लगाने वाले लोगों की संख्या बहुतायत में होगी, तभी भारत के शहर स्टार्ट-अप के रूप में उभरेंगे. इसके लिए बड़ी तादाद में ऐसे व्यापारियों की ज़रूरत है, जो इन शहरों की संभावनाओं को पुष्पित-पल्लवित कर सकें. भारत सरकार भी नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्टार्ट-अप को लेकर काफी सकारात्मक रुख अपना रही है. आसान कर क़ानून, ढांचागत सुविधाओं में सुधार, उनके मूल्य में कमी और उचित निवेश से इसे काफी बढ़ावा मिल सकता है.

आज स्वस्थ, टिकाऊ एवं भरोसे से भरे स्टार्ट-अप का भारत और विश्व में बहुत स्कोप है. वह दिन दूर नहीं, जब भारत स्टार्ट-अप नेशन के रूप में जाना जाएगा. स्टार्ट-अप खोलना कोई एक तरह का काम नहीं है. हमें मोबाइल ऐप ही दिखाई देता है, लेकिन उसके पीछे की मेहनत नहीं. आज भारत के पास विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति है. हमें उस युवा पीढ़ी पर विश्वास करना होगा कि वह इस सपने को पूरा करेगी. यह मुश्किल तो है, लेकिन नामुमकिन नहीं. तभी नरेंद्र मोदी का स्टार्ट-अप का सपना साकार हो सकेगा. ■

(लेखक इन्वेस्टमेंट बैंकर एवं जेन एडवाइजर्स के सीईओ हैं.)

feedback@chauthiduniya.com

चुनाव के मद्देनज़र सपा में सुधार की क़वायद

हटाइए दाग़ी मंत्रियों को!

प्रभात रंजन दीन

समाजवादी पार्टी के सांगठनिक फोरम पर अब खुलेआम चर्चा और मांग होने लगी है कि यदि विधानसभा चुनाव ठीक से लड़ना है, तो पार्टी एवं सरकार को अपनी गिरती छवि बचानी होगी और भ्रष्ट-विवादास्पद मंत्रियों को बाहर का रास्ता दिखाना होगा. लिहाजा, उत्तर प्रदेश में 2017 में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारियों के मद्देनज़र सत्तारूढ़ समाजवादी पार्टी संगठन और सरकार, दोनों में फेरबदल करने की तैयारी में है. सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव, मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, लोक निर्माण मंत्री शिवपाल सिंह यादव एवं राष्ट्रीय महासचिव प्रो. राम गोपाल यादव समेत पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने पिछले दिनों लखनऊ में राज्य के राजनीतिक परिदृश्य और भावी रणनीति पर विचार-विमर्श किया. पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने आगामी पंचायत चुनाव की रणनीतियों पर भी चर्चा की. संगठन को ज़मीनी स्तर पर सक्रिय करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई. इसके अलावा अखिलेश सरकार में शामिल कुछ विवादास्पद मंत्रियों को हटाकर उनके स्थान पर नए चेहरे लाने पर भी पार्टी अलमबरदार गंभीरता से विचार कर रहे हैं. बैठक में मौजूद नेताओं का मानना था कि मंत्रिमंडल में शामिल उन मंत्रियों को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए, जो अपने दायित्व के प्रति लापरवाह हैं, अपना काम सही तरीके से अंजाम नहीं दे रहे हैं और भ्रष्टाचार में लिप्त हैं.

पार्टी आलाकमान ने मुजफ्फरनगर दंगे पर न्यायाधीश विष्णु सहाय आयोग की रिपोर्ट पर भी चर्चा की और फ़ैसला किया कि विधानसभा के अगले सत्र में रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी जाए, ताकि दंगे के असली गुनहगारों के चेहरे जनता के सामने आएं. हालांकि, आयोग की रिपोर्ट के जो हिस्से छनकर बाहर आए हैं, उनमें मुजफ्फरनगर दंगे के लिए भाजपा और सपा, दोनों को बराबर का दोषी ठहराया गया है. बैठक में अमर सिंह की सपा में वापसी के बारे में भी विचार-विमर्श किया गया, लेकिन अमर की वापसी का आख़िरी फ़ैसला मुलायम सिंह को लेना है. इस बैठक के साथ ही अखिलेश यादव मंत्रिमंडल में फेरबदल की बिसात बिछ चुकी है. प्रतापगढ़ में कुंडा के सीओ जियाउल हक़ हत्याकांड के मामले में एक बार फिर आजम खान गुट रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया के ख़िलाफ़ तिकड़म कर उन्हें मंत्रिमंडल से ड्रॉप कराने की जुगत में है. जबकि सीबीआई सीओ हत्याकांड में राजा भैया को क्लीन चिट दे चुकी है. इसके बावजूद अदालत में अतार्किक दलीलों का सहारा लेकर राजा भैया को निपटाने की कोशिश की जा रही है. विवाद की जड़ कहें या केंद्र, प्रदेश के खनन मंत्री गायत्री प्रसाद प्रजापति समाजवादी सरकार की सबसे अधिक फजीहत करा रहे हैं. खनन मंत्री गायत्री प्रसाद प्रजापति समेत कुछ अन्य मंत्रियों के ख़िलाफ़ लोकायुक्त के यहां शिकायत होने से सरकार की बड़ी किरकिरी हुई है. मुलायम सिंह भी यदा-कदा भ्रष्टाचार में लिप्त मंत्रियों का जिक्र करते रहते हैं. ऐसे में ज़रूरी हो गया है कि विधानसभा चुनाव के पहले सरकार की छवि सुधारने के लिए कुछ मंत्रियों को हटाया जाए और कुछ के पर कतर दिए जाएं.

उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्रिमंडल के पुनर्गठन के बारे में यदा-कदा कयास तो लगते ही रहे हैं, लेकिन अब यह सरकार के लिए करो या मरो जैसा मसला है. बैठक में नाकारा मंत्रियों को हटाकर नए विधायकों और कुछ विधान परिषद सदस्यों को मंत्रिमंडल में स्थान देने के साथ-साथ कुछ मंत्रियों का ओहदा बढ़ाने के बारे में भी सपा आलाकमान ने विचार किया. ऐसे मंत्रियों में सबसे सशक्त नाम राज्यमंत्री अरविंद सिंह गोप का है. अखिलेश मंत्रिमंडल में नियमत: 61 मंत्री होने चाहिए, लेकिन वर्तमान में 55 सदस्यीय मंत्रिमंडल है. छह मंत्री पद पहले से रिक्त हैं और चर्चा है कि आधा दर्जन से अधिक मंत्रियों की मंत्रिमंडल से छुट्टी की जाएगी. विधानसभा चुनाव-2017 को ध्यान में रखते हुए सपा अति पिछड़े वर्ग के कुछ नेताओं को मंत्रिमंडल में स्थान दे सकती है. सपा चुनाव के पहले सांगठनिक स्तर पर जातिगत समीकरण दुरुस्त करने के प्रति गंभीर हो रही है, क्योंकि आरोप लग रहा है कि वह केवल यादवों की पार्टी होकर रह गई है.

सपा गलियारे में खुलेआम चर्चा है कि गायत्री प्रसाद प्रजापति, नारद राय, अंबिका चौधरी, मनोज कुमार पांडेय, विजय मिश्रा, शंखलाल मांझी, राजीव कुमार सिंह, राजा भैया समेत कई मंत्रियों की छंटनी की जा सकती है. अखिलेश मंत्रिमंडल में गायत्री प्रसाद प्रजापति के अलावा कोई भी अति पिछड़ा कबीना मंत्री नहीं है, लिहाजा उसका विकल्प गंभीरता से तलाशा जा रहा है. बैठक में मंत्रिमंडल पुनर्गठन एवं विस्तार के साथ-साथ निगम, आयोग और परिषदों के रिक्त पद भरने के संदर्भ में भी चर्चा हुई. निगम, आयोग एवं परिषद के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सलाहकार और सदस्य मनोनीत करने के लिए सूची तैयार की जा रही है. सपा अपने परंपरागत यादव वोट बैंक के साथ-साथ अति पिछड़ों को समायोजित कर सामाजिक समीकरण साधने पर ध्यान दे रही है. ■

feedback@chauthiduniya.com

यूपी सधा नहीं, बिहार साधने चले

बिहार में महा-गठबंधन तोड़कर नए तालमेल के साथ बिहार विधानसभा चुनाव लड़ने का ऐलान करने के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पटना में हुई सभा पर एक सपा नेता ने ही चुटकी ली कि अपना प्रदेश तो ठीक से सध नहीं रहा, बिहार साधने निकल पड़े. उत्तर प्रदेश में चारों तरफ़ से सपा सरकार विवादों में घिर गई है, चाहे वह गिरी हुई क़ानून व्यवस्था हो, गिरे हुए मंत्री हों, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग जैसे विभिन्न संवेदनशील महकमों के गिरे हुए प्रमुख हों या भ्रष्टाचार-पुरुष यादव सिंह को संरक्षण देने का मामला हो. सपा सरकार की छवि काफी नीचे गिर गई है, लेकिन पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री छवि निर्माण की दिशा में कोई क़दम नहीं उठा रहे हैं. इसे लेकर पार्टी में काफी रोष है. सोशल मीडिया में एक-दो मामले उजागर होने पर उसमें मुख्यमंत्री सीधे हस्तक्षेप कर अपनी छवि बनाने की बचकानी कोशिश तो कर रहे हैं, लेकिन उसके समानांतर प्रदेश में शोषितों और उत्पीड़ितों की भारी भीड़ है, लेकिन उनकी कोई सुनने वाला नहीं है. अखिलेश यादव ने पटना में कहा कि समाजवादी रास्ता ही भारतीय राजनीति का विकल्प होगा, जिसमें समाज के सभी वर्गों का हित शामिल है. इससे सामाजिक-आर्थिक विषमता दूर हो सकती है. समाजवादी पार्टी सेकुलर एवं सोशलिस्ट व्यवस्था की पक्षधर है और विकास के संतुलन के रास्ते पर काम करती है. आपसी भाईचारा, सामाजिक सद्भाव एवं विकास साथ-साथ चलते हैं. मुख्यमंत्री के इस बयान पर सभा से लेकर पार्टी तक तीखी प्रतिक्रिया हुई कि सेकुलर महा-गठबंधन तो तोड़ डाला और अब सेकुलर शब्द का खोखला इस्तेमाल कर रहे हैं. अखिलेश ने विधानसभा चुनाव के ताजे समीकरण देखते हुए पटना में आयोजित समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया. सम्मेलन में सभी छह दलों के गठबंधन के नेता रघुनाथ झा, तारिक अनवर, देवेंद्र यादव, पप्पू यादव, संजय वर्मा समेत समाजवादी पार्टी के बिहार प्रदेश अध्यक्ष रामचंद्र यादव आदि मौजूद थे. बिहार में अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश के विकास कार्यों का खूब ढिंढोरा पीटा और नीतीश सरकार को चुनौती भी दे डाली कि उन्होंने यूपी जैसा विकास बिहार में क्यों नहीं किया? अखिलेश के इस वक्तव्य पर बिहार एवं उत्तर प्रदेश को नज़दीक से जानने-समझने वाले विशेषज्ञों और राजनीतिज्ञों में खूब हास-परिहास हुआ. अखिलेश ने कहा कि उत्तर प्रदेश में किसानों, ग़रीबों, छात्रों, नौजवानों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों एवं श्रमिकों के हित में तमाम योजनाएं चलाई गई हैं. जबकि यूपी के गन्ना किसानों, बेरोज़गारों, मज़दूरों एवं महिलाओं की दु:खद स्थिति अन्य राज्यों में भी सुर्खियां बनी रहती हैं. अखिलेश यादव ने बिहारवासियों के साथ अपने सामाजिक एवं भावनात्मक संबंधों का हवाला देते हुए कहा कि बिहार और उत्तर प्रदेश देश की राजनीति को नई दिशा देने की ताकत रखते हैं. डॉ. लोहिया, जयप्रकाश नारायण, कर्पूरी ठाकुर ने समाज परिवर्तन के लिए बहुत संघर्ष किया और वही रास्ता मुलायम सिंह यादव एवं समाजवादी पार्टी का है. इसी रास्ते पर चलकर बिहार की भी तरक्की हो सकती है. बिहार परिवर्तन का साक्षी रहा है और ऐसी उम्मीद है कि वह एक बार फिर नेतृत्व परिवर्तन करके मुलायम सिंह यादव द्वारा बिहार चुनाव के लिए बनाए गए गठबंधन को अपना समर्थन-सहयोग देगा. बिहार घोर समस्याओं की त्रासदी से जूझ रहा है. बेकारी, पलायन और विकास का विकल्प सांप्रदायिकता नहीं हो सकती.

डेयरी उद्योग

फ़ायदा ही फ़ायदा

राजस्थान के झुंझुनू ज़िले के चेलासी गांव में मोरारका फाउंडेशन ने डेयरी फार्म के रूप में किसानों को नया जीवन और नई दिशा देने का काम किया है. डेयरी फार्म के चलते यहां के किसानों के चेहरे पर मुस्कान लौट आई है और अब देश के दूसरे क्षेत्रों के किसान भी मोरारका फाउंडेशन के संपर्क में आकर अपने यहां डेयरी की शुरुआत कर रहे हैं. मोरारका फाउंडेशन के अनुसार, खुशहाली एवं समृद्धि के लिए डेयरी व्यवसाय और पशुपालन बेहद ज़रूरी है. यदि खेती करना है, तो गौ-पालन करना आवश्यक है. किसानों को मोरारका फाउंडेशन से पूरा सहयोग मिल रहा है.

कविता राणा

पशुपालन हमारे देश में ग्रामीणों के लिए सिर्फ़ आमदनी का ज़रिया ही नहीं रहा, बल्कि यह देशवासियों की सेहत से भी जुड़ा है. एक समय था, जब पशुपालन के पेशे को लोग अच्छा नहीं मानते थे, लेकिन अब जमाना बदल गया है. पशुपालन अब पहले की तरह गोबर-कीचड़ का खेल नहीं रहा, बल्कि यह आधुनिक होकर चोखी कमाई का ज़रिया बन चुका है. पशुपालन अगर योजनाबद्ध तरीके से और तकनीक अपना कर किया जाए, तो इससे अच्छा-खासा मुनाफ़ा हासिल किया जा सकता है. डेयरी उद्योग में दुधारू पशु पाले जाते हैं. इसके तहत भारत में गाय और भैंस पालन को ज़्यादा महत्व दिया जाता है. कहते हैं, हर समस्या का समाधान है, बशर्ते चाह होनी चाहिए. राजस्थान के झुंझुनू ज़िले के चेलासी गांव में मोरारका फाउंडेशन ने डेयरी फार्म के रूप में किसानों को नया जीवन और नई दिशा देने का काम किया है. डेयरी फार्म के चलते यहां के किसानों के चेहरे पर मुस्कान लौट आई है और अब देश के दूसरे क्षेत्रों के किसान भी मोरारका फाउंडेशन के संपर्क में आकर अपने यहां डेयरी की शुरुआत कर रहे हैं. मोरारका फाउंडेशन के अनुसार, खुशहाली एवं समृद्धि के लिए डेयरी व्यवसाय और पशुपालन बेहद ज़रूरी है. यदि खेती करना है, तो गौ-पालन करना आवश्यक है. किसानों को मोरारका फाउंडेशन से पूरा सहयोग मिल रहा है.

आज पूरी दुनिया के लोग मिलावट वाली चीजों से डरते और उनसे नफरत करते हैं. पैकिंग वाली चीजों में भी कुछ न कुछ मिलावट पाई जाती है. आज ज़्यादातर लोग अपने ही क्षेत्र में बने उत्पाद पसंद करते हैं, चाहे वह पेय हो, घी हो या फिर मक्खन. जो लोग पहले शहरों की तरफ़ भागते थे, वे फिर वापस गांव की तरफ़ आने लगे हैं. श्रवण का मानना है कि अगर किसी के पास खेती लायक भूमि है, तो उसे कहीं भटकने की ज़रूरत नहीं है.

श्रवण कुमार चेलासी गांव के अग्रणी किसानों में से एक हैं. श्रवण ने बताते हैं कि किस तरह मोरारका फाउंडेशन ने उनकी सहायता की. श्रवण ने बताया कि जैविक खेती, जो कि वर्ष 2009 में पंजीकृत हुई थी और उस पर जो कार्य हो रहा है, वह मोरारका फाउंडेशन की देन है. श्रवण ने कहा कि अगर मोरारका फाउंडेशन से कोई बात करनी हो या वहां तक कोई समस्या पहुंचानी हो, तो वह बहुत आसान काम है. फाउंडेशन हर समस्या का समाधान करता है, वह भी चंद दिनों के अंदर. श्रवण मोरारका फाउंडेशन से 2009 से जुड़े हैं. श्रवण ने जीवकोपार्जन के लिए सऊदी अरब में अपने जीवन के बहुमूल्य 22 साल गुज़ारे. वह कहते हैं कि आप चाहे दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएं, मिट्टी की खुशबू वापस बुला ही लेती है. गांव आने के बाद श्रवण ने सोचा कि घर से बाहर रहने पर लोग परिवार एवं समाज से दूर हो जाते हैं, जिससे खुद की पहचान भी ख़त्म हो जाती है. श्रवण जानते हैं कि रासायनिक खेती के दुष्प्रभाव सिर्फ़ खेत पर नहीं, बल्कि मनुष्यों एवं पशुओं पर भी पड़ते हैं. इसलिए उन्होंने कुछ अलग करने की सोची और इस बारे में मोरारका फाउंडेशन के स्थानीय अधिकारियों से बात की. चर्चा में निष्कर्ष निकला कि डेयरी व्यवसाय करना चाहिए. सऊदी अरब में नौकरी करने के दौरान श्रवण को विश्व की सबसे बड़ी गाय डेयरी देखने का मौक़ा मिला था. उसे देखने के बाद श्रवण ने डेयरी व्यवसाय अपनाने का फ़ैसला लिया, जिसके लिए मोरारका फाउंडेशन द्वारा उसे मदद मिली. मोरारका फाउंडेशन ने श्रवण को अजीतगढ़ स्थित डेयरी सहज एग्रो प्राइवेट लिमिटेड का दौरा कराया. सहज एक जैविक प्रमाणीकृत डेयरी है. श्रवण ने अपनी दो बीघा भूमि पर 22 गायों के साथ अक्टूबर 2014 में मंगलम् डेयरी जैविक कृषि फार्म की शुरुआत की.

मंगलम् डेयरी कृषि फार्म के कार्य

- दो बीघा ज़मीन में पशुओं के लिए आधुनिक तरीके से बनाया गया छायादार मार्ग.
- संपूर्ण डेयरी गायों पर आधारित.
- अच्छी गायों का चुनाव, जैसे स्थानीय देसी, राठी एवं हॉलस्टीयन आदि.
- दूध निकालने के लिए आधुनिक मशीनों के साथ स्वच्छ एवं हवादार स्थान.
- वर्तमान में प्रतिदिन 250 लीटर दूध सीकर जाता है.

आज पूरी दुनिया के लोग मिलावट वाली चीजों से डरते और उनसे नफरत करते हैं. पैकिंग वाली चीजों में भी कुछ न कुछ मिलावट पाई जाती है. आज ज़्यादातर लोग अपने ही क्षेत्र में बने उत्पाद पसंद करते हैं, चाहे वह पेय हो, घी हो या फिर मक्खन. जो लोग पहले शहरों की तरफ़ भागते थे, वे फिर वापस गांव की तरफ़ आने लगे हैं. श्रवण का मानना है कि अगर किसी के पास खेती लायक भूमि है, तो उसे कहीं भटकने की ज़रूरत नहीं है. श्रवण कहते हैं, डेयरी व्यवसाय काफी अच्छा है, इससे दूसरे लोगों को भी रोज़गार मिलता है. हमारी सारी व्यवस्था जैविक यानी ऑर्गेनिक है. गायों को किसी भी तरह की कोई दवा नहीं दी जाती. श्रवण ने बताया कि उन्होंने जब यह व्यवसाय शुरू किया, तो उस समय सर्दी का मौसम था. गायों का बीमार हो जाना जैसी कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, लेकिन कुछ समय बाद सब ठीक हो गया. आज उन्हें डॉक्टर की ज़रूरत नहीं पड़ती.

श्रवण ने अपनी गायों के लिए बाजरा और हरी घास हैदराबाद से लाकर खेतों में प्लांट किया और उसी बाजरे को गन्ने के रूप में काटकर अलग-अलग बोया जाता है. यह बाजरा तीन साल तक चलता है. इसे गायें काफी शौक से खाती हैं, क्योंकि इसमें खट्टा-मीठा मिश्रण होता है. श्रवण के पास दो-तीन प्रजातियों की गायें हैं. वह जर्सी गायों का ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं. भविष्य में जर्सी और देसी गाय रखने का विचार है. ये गायें 20-25 लीटर दूध देती हैं. उन्होंने कहा कि डेयरी व्यवसाय में 50 प्रतिशत तक मुनाफ़ा होता है, वह भी तब, जबकि वह जैविक खेती करते हैं. अगर वह बाज़ार से लाकर गायों को चारा खिलाएंगे, तो कुछ नहीं बचेगा. वह खुद के पैदा किए बाजरा, मक्का, जौ, चना एवं ज्वार आदि का मिश्रण करके गायों को खिलाते हैं. उनके डेयरी फार्म से सात-आठ लोगों को रोज़गार मिला. उनके दो साथियों ने अपनी डेयरी खोल ली है. श्रवण अन्य किसानों को भी डेयरी फार्म खोलने के लिए प्रेरित करते हैं. वह कहते हैं कि पहले हाथ से दूध निकाला जाता था, लेकिन आज मशीनों के माध्यम से दूध निकाला जाता है. गायों के गोबर से वह जैविक खाद तैयार करते हैं, जिसके इस्तेमाल से फसल अच्छी होती है. उन्होंने बताया कि वह गोमूत्र के संबंध में विभिन्न कंपनियों से विचार-विमर्श कर रहे हैं, ताकि उसका इस्तेमाल दवा के रूप में किया जा सके.■

feedback@chauthiduniya.com

पर्यावरण के अनुकूल है इनोवेटिव चूल्हा

मानसी बत्रा

सूर्यास्त होते ही एक बार फिर हर रसोई घर में हलचल शुरू हो जाती है, लेकिन यह कार्य पारंपरिक चूल्हों के कारण कष्टमय बन जाता है. उन चूल्हों से निकला धुआं न केवल गृहणियों की आंखों पर दुष्प्रभाव डालता है, बल्कि उसके चलते कैंसर जैसी ख़तरनाक बीमारियां भी हो जाती हैं. पारंपरिक चूल्हों में लकड़ी की खपत ज़्यादा होती है और साथ ही ऊर्जा की क्षति भी. लगभग 90 प्रतिशत ऊर्जा पारंपरिक चूल्हों में नष्ट हो जाती है. लकड़ियां एकत्र करने के लिए महिलाओं को दूर-दूर तक जाना पड़ता है, जिसमें बड़े पैमाने पर समय की बर्बादी होती है. हरे-भरे जंगल लकड़ी की ज़रूरत पूरी करने के लिए काटे जा रहे हैं, जिससे पर्यावरण को खासा नुक़सान पहुंच रहा है. न केवल वन संपदा घटती जा रही है, बल्कि मिट्टी का कटाव भी ज़्यादा हो रहा है, जो लगातार बढ़ते रेगिस्तानों और बाढ़ की एक बड़ी वजह है. ईंधन की कमी इतनी ज़्यादा है कि मांग के मुक़ाबले उपलब्धता नहीं के बराबर है. राजस्थान के नवलगढ़ में मोरारका फाउंडेशन द्वारा सांझा गैस रसोई रोज़गार योजना पिछले चार वर्षों से संचालित की जा रही है. इसी योजना के तहत इस बार मोरारका फाउंडेशन ने इको फ्रेंडली इनोवेटिव चूल्हे नवलगढ़ और आसपास के गांवों एवं स्कूलों में मिड डे मील के लिए उपलब्ध कराए हैं. ये चूल्हे भोजन बनाने के लिए न्यूनतम धुएं के साथ एक उपयुक्त वातावरण देते हैं. साथ ही ये महिलाओं को रोज़गार दिलाने में भी सहायक साबित हुए हैं. ये पर्यावरण फ्रेंडली हैं और इन्हें उन घरों में भी इस्तेमाल किया जा सकता है, जहां जगह अपेक्षाकृत कम है. इन चूल्हों की लागत बेहद कम है.

इनोवेटिव चूल्हे के फ़ायदे

- ईंधन की खपत 50 प्रतिशत कम होती है. इसका स्टोव 90 प्रतिशत से भी कम धुआं उत्सर्जन करता है और खाना तैयार करने में 50 प्रतिशत समय भी बचता है.
- बहुत कम धुएं के साथ खाना तैयार होता है, जिससे स्वच्छता बनी रहती है.
- प्रकृति प्रदत्त ईंधन जैसे गोबर, लकड़ी आदि का इस्तेमाल.
- लंबे समय तक चलने के लिए इसे स्टेनलेस स्टील से तैयार किया गया है.
- हल्के वजन की वजह से लाने-ले जाने में आसानी.

क्या है इनोवेटिव चूल्हा

इनोवेटिव चूल्हा लकड़ी एवं गैस से 90 प्रतिशत से भी कम धुएं के साथ क्लीनर और अधिक ताप से कार्य करता है, फलस्वरूप रसोई में ताजी हवा बरकरार रहती है. इसे सोलर पैनल के माध्यम से संचालित किया जाता है. इसे शुष्क बैटरी पर 20 घंटे तक चलाया जा सकता है. इनोवेटिव चूल्हे में लकड़ी, घास और पेड़ की शाखाओं के टुकड़ों का इस्तेमाल किया जाता है. किसान मोहन सिंह इस इनोवेटिव चूल्हे का इस्तेमाल अपनी चाय दुकान पर कर रहे हैं. उन्होंने बताया कि जबसे वह इनोवेटिव चूल्हे का इस्तेमाल कर रहे हैं, ईंधन खर्च में बहुत कमी आई है. परंपरागत चूल्हे के लिए उन्हें लकड़ियों का इंतजाम करना पड़ता था, जो एक मुश्किल काम था और उसमें काफी समय बर्बाद हो जाता था. इनोवेटिव चूल्हे के इस्तेमाल से उन्हें न सिर्फ़ ऐसी समस्याओं से छुटकारा मिला, बल्कि उनकी आमदनी में भी अच्छा-खासा इजाफ़ा हुआ. अगर आपको रसोई गैस मिलने में समस्या है या एक ही सिलेंडर होने से उसकी री-फिलिंग के दौरान खाना तैयार करने की समस्या है, तो आप भी इनोवेटिव चूल्हा आजमा सकते हैं. यह कम लागत के साथ न सिर्फ़ तेजी से खाना तैयार करता है, बल्कि पर्यावरण को भी नुक़सान नहीं पहुंचाता.■

feedback@chauthiduniya.com

राजस्थान के नवलगढ़ में मोरारका फाउंडेशन द्वारा सांझा गैस रसोई रोज़गार योजना पिछले चार वर्षों से संचालित की जा रही है. इसी योजना के तहत इस बार मोरारका फाउंडेशन ने इको फ्रेंडली इनोवेटिव चूल्हे नवलगढ़ और आसपास के गांवों एवं स्कूलों में मिड डे मील के लिए उपलब्ध कराए हैं. ये चूल्हे भोजन बनाने के लिए न्यूनतम धुएं के साथ एक उपयुक्त वातावरण देते हैं. साथ ही ये महिलाओं को रोज़गार दिलाने में भी सहायक साबित हुए हैं.

सच्चाई पर पर्दा डालने की नाकाम कोशिश

www.kamalmorarka.com

कमल मोरारका

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने छह दिवसीय अमेरिका एवं आयरलैंड के दौरे से वापस देश लौट आए हैं. कहा जा रहा है कि पिछले 60 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री का यह पहला आयरलैंड दौरा था. लेकिन, ऐसा कहने वाले यह बताना भूल गए कि जवाहर लाल नेहरू के बाद नरेंद्र मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने आयरलैंड का दौरा किया. साफ़ है कि वे जवाहर लाल नेहरू का नाम नहीं लेना चाहते, लेकिन फिर भी हकीक़त यह है कि भारत के आख़िरी प्रधानमंत्री, जो आयरलैंड के दौरे पर गए थे, वह जवाहर लाल नेहरू थे. नेहरू को साहित्य से रुचि थी और आयरलैंड का एक समृद्ध इतिहास रहा है. यह वही ज़मीन है, जिस पर डब्ल्यू. बी. येट्स जैसे सुप्रसिद्ध कवियों ने जन्म लिया. ग़ौरतलब है कि हरिवंश राय बच्चन ने भी येट्स से प्रेरणा ली थी. लेकिन, ये सारी बातें मौजूदा सरकार के लिए बेमानी हैं.

दरअसल, अमेरिका का दौरा प्रधानमंत्री का असली दौरा था. सरकार इसे एक कामयाब दौरा करार दे रही है. मेरी समझ में नहीं आता कि कामयाब दौरा क्या होता है. बेशक यह एक बहुत ही कामयाब जनसंपर्क की कवायद थी. जहां कहीं भी प्रधानमंत्री जाते हैं, वहां के अप्रवासी भारतीयों को एकत्र करना उन्हें बहुत अच्छा लगता है. पहले उन्होंने न्यूयॉर्क के मैडीशन स्क्वायर में ऐसा किया, फ़िलहाल कैलिफोर्निया में किया और अपने हालिया दुबई दौरे पर भी ऐसा कर चुके हैं. भावनात्मक तौर पर विदेशों में बसे भारतीयों से जुड़ना जनसंपर्क की अच्छी मिसाल तो हो सकती है, लेकिन आर्थिक तौर पर इसका कोई खास मतलब नहीं है. लोग इन दौरों से आने वाले निवेश के बारे में पूछेंगे. अर्थशास्त्र का एक कमज़ोर छात्र भी यह समझता है कि मुद्रा का प्रवाह उसी ओर होता है, जिधर मुनाफ़ा अधिक होता है. इसलिए सवाल यह नहीं है कि कौन प्रधानमंत्री है और वह किस तरह का भाषण देता है, बल्कि सवाल यह है कि ज़मीनी सतह पर कौन-सी नीति अपनाई जा रही है. 1991 में जब मनमोहन सिंह नरसिम्हा राव सरकार में वित्त मंत्री थे, तो उन्होंने इंटरनेशनल मोनेटरी फंड और विश्व बैंक के दिशा निर्देशों के मुताबिक भारत की अर्थव्यवस्था खोल दी थी. नतीजतन यहां पैसे आने लगे. ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि उन्होंने नियंत्रण का बुनियादी मॉडल बदल दिया था.

मैं न तो पहले वाले सुधार की वकालत करता हूं और न इस बात की कि अभी और अधिक सुधार की ज़रूरत है. रिजर्व बैंक के गवर्नर रघुराम राजन बिल्कुल सही कहते हैं कि भारत को फ़िलहाल किसी बड़े सुधार की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यहां किसी तरह का आर्थिक संकट नहीं है. लेकिन, मौजूदा सरकार कहती है कि वह इज ऑफ़ बिजनेस (व्यापार में आसानी) के उपाय करेगी. यह बहुत अच्छा मुहावरा है, लेकिन यदि आप वाकई बिजनेस में आसानी पैदा करना चाहते हैं, तो आपको सबसे पहले व्यापारियों के रास्ते में खड़ी रुकावटों की पहचान करके उन्हें हटाने के उपाय भी करने होंगे. विदेशी निवेश को फ़िलहाल अलग रखते हैं. भारतीय व्यापारियों को अपनी परेशानियों की एक सूची तैयार करनी चाहिए. मुझे यह कहने में बड़ा अफ़सोस हो रहा है कि फिक्की, एसोचैम आदि संस्थाएं अपना काम बिल्कुल नहीं कर रही हैं. इनसे जुड़े लोग केवल सरकार को खुश करने में लगे हुए हैं. दरअसल, उनका काम है कि वे सरकार को बताएं कि व्यापार को आसान बनाने के लिए क़ानून में कौन-से बदलाव होने चाहिए और उनके बदलने का तरीका क्या होगा. अगर व्यापार में आसानी होगी, तो विदेशी बिजनेसमैन खुद इसकी पड़ताल कर लेंगे कि वे भारत से मुनाफ़ा हासिल कर सकते हैं या नहीं.

एक विदेशी कंपनी फोक्सकम मुंबई आई. यह एक ताईवानी कंपनी है, जिसकी चीन में एक बड़ी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट है. कंपनी भारत में अपनी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट खोलना चाहती है. फोक्सकम के प्रमुख ने मुंबई में घोषणा की कि उन्होंने गुजरात, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक का भ्रमण किया और सभी बिंदुओं पर ग़ौर करने के बाद महाराष्ट्र में अपनी यूनिट लगाने का फ़ैसला लिया. विदेशी भावनाओं में बहकर इधर या उधर नहीं जाते, वे केवल यह देखना चाहते हैं कि किस जगह सबसे बेहतर सुविधाएं मौजूद हैं. उन्हें एक बेहतर एअरपोर्ट चाहिए, अच्छी सड़कें चाहिए, योजनाओं की जल्द से जल्द स्वीकृति चाहिए. पिछले 18 महीने में इस दिशा में मैंने कोई ठोस काम होते नहीं देखा है. काम हो रहा है, लेकिन अत्यंत सुस्त रफ्तार के साथ. मैं किसी के ऊपर आरोप नहीं लगाना चाहता, हर कोई अपना बेहतर देने की कोशिश कर रहा है. लेकिन, यदि आप वाकई गंभीर हैं, तो उन मौजूदा एवं पूर्व नौकरशाहों का एक छोटा सेल बनाइए, जो व्यापार नियंत्रण को समझते हों और राजस्व के नुक़सान के बिना नियंत्रण में कमी लाने के सुझाव दे सकते हों. मैं राजस्व की चिंता को समझ सकता हूं, लेकिन कई ऐसे बिंदु हैं, जहां राजस्व का कोई लेना-देना नहीं, पर उनसे भारत में व्यापार के तरीके में आसानी पैदा हो सकती है.

प्रधानमंत्री के अत्यधिक विदेश दौरों की बहुत आलोचना हो रही है. मैं इस नज़रिये से इत्तेफाक नहीं रखता. प्रधानमंत्री को अवश्य ही विदेशी दौरों पर जाना चाहिए, दुनिया के दूसरे नेताओं से परस्पर संबंध रखने चाहिए. लेकिन, आप यह नहीं कह सकते कि उन्होंने बराक ओबामा से कई मुलाकातें कर ली हैं, इसलिए भारत की सभी समस्याएं हल हो जाएंगी. अमेरिकी निवेश उसी सूरत में आएगा, जब आप भारतीय बाज़ार को उनके लिए आकर्षक बनाएंगे. बाज़ार को कितना आकर्षक आपको बनाना चाहिए या नहीं बनाना चाहिए, यह एक गंभीर विषय है. इस पर विचार करने के लिए वित्त मंत्री, वित्त सचिव, मुख्य

प्रधानमंत्री के अत्यधिक विदेश दौरों की बहुत आलोचना हो रही है. मैं इस नज़रिये से इत्तेफाक नहीं रखता. प्रधानमंत्री को अवश्य ही विदेशी दौरों पर जाना चाहिए, दुनिया के दूसरे नेताओं से परस्पर संबंध रखने चाहिए. लेकिन, आप यह नहीं कह सकते कि उन्होंने बराक ओबामा से कई मुलाकातें कर ली हैं, इसलिए भारत की सभी समस्याएं हल हो जाएंगी. अमेरिकी निवेश उसी सूरत में आएगा, जब आप भारतीय बाज़ार को उनके लिए आकर्षक बनाएंगे.

आर्थिक सलाहकार, रिजर्व बैंक के गवर्नर यानी सबको शामिल होना चाहिए. मैं केवल यह आशा कर सकता हूं कि पर्दे के पीछे इस विषय पर कुछ काम हो रहा होगा और उसकी घोषणा तक हमें इंतज़ार करना होगा.

दूसरा मुद्दा है बिहार चुनाव का. यह चुनाव दरअसल पैसे और पिछड़े वर्ग के बीच लड़ा जा रहा है. भाजपा के पास बहुत पैसा है, ऊंची जाति के लोग स्वाभाविक रूप से उसके साथ हैं. वह मुलायम सिंह और अन्य को अलग करके लालू के वोट बैंक में सेंध मारने की कोशिश कर रही है. भाजपा ओवैसी को भी प्रोत्साहित कर रही है, ताकि वह मुसलमानों का वोट काट लें. लेकिन, जहां तक मैं समझता हूं कि भारतीय मतदाता अब उस सीमा को लांघ चुके हैं, अब वे परिपक्व हो गए हैं. आप चाहे जितना पैसा बहा लें, वोट काटना अब आसान नहीं है. भाजपा की केंद्र में सरकार है, उसके साथ उपेंद्र कुशवाहा, राम विलास पासवान एवं जीतन राम मांझी जैसे सहयोगी हैं, जिनके अपने प्रभाव वाले पॉकेट्स हैं और जो वास्तव में भाजपा के लिए मददगार साबित होंगे.

दूसरी तरफ़ नीतीश बिहार के अकेले राजनेता हैं, जिनके ख़िलाफ़ किसी तरह का आरोप नहीं है. यहां तक कि भाजपा और उसके सहयोगी भी कह रहे हैं कि जबसे नीतीश ने उनसे नाता तोड़ा है, बिहार का विकास नहीं हुआ है (हालांकि यह ग़लत है). इसके आगे वे नीतीश कुमार के ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं कह सकते. न तो कोई उन पर किसी घोटाले का आरोप लगा सकता है और न उनकी कार्यशैली पर सवाल खड़े कर सकता है. लालू के साथ गठबंधन की वजह से उनके विरोधी जंगलराज की रट लगा रहे हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मतदाताओं पर इसका कोई प्रभाव पड़ेगा. आने वाले कुछ दिनों में यह साफ़ हो जाएगा कि हवा का रुख किधर है. इतना तो तय है कि भाजपा के लिए लड़ाई आसान नहीं है, जैसा कि वह पहले सोच रही थी.

बिगड़ती हुई चीज़ें ठीक करने के लिए अमित शाह को भागकर पटना जाना पड़ा. पार्टी के सांसद एवं पूर्व गृह सचिव आरके सिंह ने खुलेआम आरोप लगाया कि पैसे लेकर पार्टी के टिकट बांटे गए हैं. जदयू-राजद, जिनकी भाजपा आलोचना कर रही है, उन पर भी ऐसे आरोप नहीं हैं. भाजपा, जिसकी केंद्र में सरकार है और जिसके पास बहुत पैसा है, पर टिकट बेचने के आरोप लग रहे हैं, तो यह बहुत अफ़सोसजनक बात है. जहां तक मुझे याद है, कांग्रेस अपने अच्छे दिनों में जीतने वाले उम्मीदवार चुनती थी और चुनाव अभियान के लिए पैसा भी देती थी. अगर आप मज़बूत दल हैं, तो आप योग्य उम्मीदवारों को टिकट दीजिए और उन्हें इतना फंड दीजिए कि वे चुनाव लड़ सकें. पैसा कमज़ोर दल लेते हैं. पहला आरोप मायावती के ऊपर लगा था, क्योंकि उनके पास दलितों का वोट बैंक था. राजनीति के लिए यह अच्छा रुझान नहीं है, चाहे जो भी पार्टी ऐसा करे. असली पार्टी वह है, जो योग्य उम्मीदवारों को टिकट दे और उन्हें चुनाव लड़ने के लिए पैसा भी दे, चाहे वे जीतें या हारें. आशा करते हैं कि बिहार चुनाव के बाद एक स्थायी सरकार बनेगी.

बीसीसीआई ने अभी हाल में अपना अध्यक्ष खोया है. जगमोहन डालमिया ने भारतीय क्रिकेट को मजबूती प्रदान की थी. उनका स्थान लेने के लिए वही पुराने चेहरे मैदान में थे, लेकिन मुझे खुशी है कि शशांक मनोहर जैसे शख्स के नाम पर सहमति बन गई है, जिनका पिछला कार्यकाल (2008-11) ज़ाहिर करता है कि वह बहुत व्यवहारिक व्यक्ति हैं. हालांकि, वह महाराष्ट्र से संबंध रखते हैं और ऐसा सोचा जा सकता है कि शरद पवार के नज़दीक हैं. लेकिन, उनकी कार्यशैली अलग है. वह ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, जो बेहूदगी बर्दाश्त करे. वह बहुत अच्छे वकील हैं, वह ग़ैर-क़ानूनी काम कभी नहीं करेंगे और न होने देंगे. दो साल के कार्यकाल के लिए हमारी शुभकामनाएं उनके साथ हैं. हम आशा करते हैं कि वह क्रिकेट को स्वच्छ बनाने में सफल होंगे. ■

feedback@chauthiduniya.com

फूलन को आत्मसमर्पण करने से किसने रोका-2

इटावा पुलिस ने फेर दिया योजना पर पानी

मलखान सिंह के आत्मसमर्पण के बाद मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश में अब नंबर एक डाकू सरदार घनश्याम ही है. घनश्याम मलखान सिंह का रिश्तेदार भी है तथा उसके गिरोह में भी रह चुका है. यह भी कहा जाता है कि आत्मसमर्पण से पूर्व मलखान ने अपने कई अत्याधुनिक हथियार घनश्याम को बेच दिए थे. सच तो यह है कि घनश्याम के आत्मसमर्पण के लिए पहली कोशिश भी मलखान ने ही शुरू की थी. यह एक महीना पहले की बात है. घनश्याम के पिता भोगीराम एवं भाई विष्णु ने बताया कि मलखान द्वारा आत्मसमर्पण की बात घनश्याम ने यह कहकर ठुकरा दी कि वह किसी डकैत को बीच में डालकर समर्पण नहीं करना चाहता है. खास तौर पर मलखान के माध्यम से कतई समर्पण नहीं हो सकेगा, क्योंकि वह किसी भी तरह मलखान से हैसियत में कम नहीं है. इसी बीच रामपुरा के दो व्यापारियों लल्ला व मातादीन ने घनश्याम से आत्मसमर्पण के लिए बात की. इन दोनों व्यापारियों के घनश्याम से बचपन के ताल्लुकात हैं तथा वह इनकी बात बहुत ज़्यादा मानता है.

इसी वार्ता के आधार पर जालौन ज़िले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ब्रजलाल वर्मा ने सोढ़े के जंगल में घनश्याम से भेंट की तथा बाद में उक्त दोनों व्यापारियों के माध्यम से जालौन के ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक ने भी घनश्याम गिरोह से आत्मसमर्पण की बात की. जालौन के ज्येख़पुलिस अधीक्षक ने भी घनश्याम गिरोह से आत्मसमर्पण की बात की. जालौन के ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक ने उक्त बात झांसी परिक्षेत्र के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री दत्ता व उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक आरपी गोविल को बताई. झांसी में घनश्याम की ओर से उसके पिता भोगीराम,भाई विष्णु एवं हनुमानगढ़ी गांव के महंत अयोध्या प्रसाद के पुत्र ने भी श्री गोविल एवं श्री दत्ता से 11 नवंबर को भेंट की. इस भेंट में भोगीराम ने घनश्याम द्वारा भेजा गया शर्तनामा पेश किया, जिसमें कुल 14 शर्तें थीं. शर्तनामे पर घनश्याम की मुहर भी लगी हुई थी. शर्तनामे की मुख्य शर्त कि आत्मसमर्पण मुख्यमंत्री के समक्ष होगा, को स्वीकार करते हुए श्री गोयल ने आश्वासन दिया कि 17 नवंबर को समर्पण के समय उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्रीपति मिश्र ज़रूर आएंगे. भोगीराम ने बताया कि अच्छी तरह बात हो जाने के बाद तय हुआ कि 17 नवंबर को रामपुरा के इंटर कॉलेज के प्रांगण में आत्मसमर्पण होगा. घनश्याम मुख्यमंत्री की मौजूदगी में ही आत्मसमर्पण क्यों करना चाहता था? क्योंकि, उत्तर प्रदेश की पुलिस से बागियों का विश्वास समाप्त हो चुका है. घनश्याम के पास इस तरह की ख़बरें भी पहुंच रही थीं कि पुलिस उसे किसी प्रकार अपने कब्जे में कर लेना चाहती है.

12 नवंबर को घनश्याम बीहड़ छोड़कर अपने साथियों के साथ अपने गांव हनुमानगढ़ी आ गया, जहां उसने एक टीले पर अपना डेरा डाला. उस समय उसके पास अत्याधुनिक हथियार थे. घनश्याम वहां 15 नवंबर की रात 12 बजे तक

आज पत्रकारिता के मायने बदल गए हैं, बदल रहे हैं अथवा बदल दिए गए हैं, नतीजतन, उन पत्रकारों के सामने भटकाव जैसी स्थिति आ गई है, जो पत्रकारिता को मनसा-वाचा-कर्मणा अपना धर्म-कर्तव्य और कमज़ोर-बेसहारा लोगों की आवाज़ उठाने का माध्यम मानकर इस क्षेत्र में आए और हमेशा मानते रहे. और, वे नवांकुर तो और भी ज़्यादा असमंजस में हैं, जो पत्रकारिता की दुनिया में सोचकर कुछ आए थे और देख कुछ और रहे हैं. ऐसे में, 2005 में प्रकाशित संतोष भारतीय की पुस्तक-पत्रकारिता: नया दौर, नए प्रतिमान हमारा मार्गदर्शन करती और बताती है कि हमारे समक्ष क्या चुनौतियां हैं और हमें उनका सामना किस तरह करना चाहिए. चार दशक से भी ज़्यादा समय हिंदी पत्रकारिता को समर्पित करने वाले संतोष भारतीय देश के उन पत्रकारों में शुमार किए जाते हैं, जो देश और समाज से जुड़े प्रत्येक मुद्दे पर निर्भीक, सटीक, निष्पक्ष टिप्पणी करते हैं.

रुका तथा इस दौरान जिन लोगों ने उससे भेंट की, उनमें जालौन के ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक हाकिम सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ब्रजलाल व रामपुरा के थानाध्यक्ष चिंतामणि यादव प्रमुख थे. इन लोगों ने उससे अनुरोध किया कि 17 नवंबर को वह अपने साथ फूलन देवी का भी समर्पण करा दे. इस बात को घनश्याम ने मान लिया. ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक ने इस बात का वादा किया कि पुलिस उससे छेड़छाड़ नहीं करेगी. इस पर घनश्याम ने उपस्थित सभी लोगों के सामने फूलन के नाम एक मात्र लिखवाया तथा अपने साथी मंशाराम के हाथ उसे इटावा भिजवाया, जहां फूलन के होने की सूचना थी. मंशाराम अपने साथ राम प्रकाश को भी ले गया, जो एक सूचना के अनुसार, भाजपा नेता भी थे. घनश्याम के पिता भोगीराम के अनुसार, फूलन देवी घनश्याम के साथ कई माह तक रही है तथा वह घनश्याम की हर बात मानती है. यही नहीं, फूलन घनश्याम से कई बार कह चुकी थी कि जब वह समर्पण करे, तो उसे न भूले. दरअसल, फूलन अपनी फरारी ज़िंदगी से ऊब चुकी है और अब सामान्य आदमी की तरह जीना चाहती है. घनश्याम का आत्मसमर्पण इसका आदर्श मौक़ा था. सारा मामला तय करने के बाद पुलिस अधिकारी हनुमानगढ़ी से वापस लौट गए और चार दिनों तक हनुमानगढ़ी में छविराम की तरह घनश्याम का भी मेला लगा रहा और रोज हज़ारों लोगों की भीड़ एकत्र होती रही. यहीं नहीं, घनश्याम ने गांव में लाउडस्पीकर लगवा कर एक पेड़ के नीचे कीर्तन कराया तथा आए हुए लोगों को एक राजनेता की भांति संबोधित भी किया.

लेकिन, उत्तर प्रदेश पुलिस का यह महत्वपूर्ण अभियान खंडित चित्त से चल रहा था. पारस्परिक सहयोग और समायोजन का भी भयंकर अभाव था. यही कारण है कि घनश्याम के संदेश वाहक मंशाराम और राम प्रकाश अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके. 14 नवंबर की रात जब इटावा से वे लौट रहे थे, तो फूलन भी उनके पीछे थी. उसने इन दोनों से कहा, तुम लोग तीन खेत आगे-आगे चलो. जालौन से इटावा पुलिस को सूचना मिल गई थी. इसलिए वहां योजना बनी कि फूलन को गिरोह सहित घेरकर मार डाला जाए, तब घनश्याम से निपटा जाए. पुलिस ने मंशाराम तथा राम प्रकाश को फूलन के गिरोह का आदमी समझ कर पकड़ लिया. दोनों ने पुलिस को बताया कि उन्हें समर्पण कराने के लिए भेजा गया है, जिसकी पुष्टि जालौन के एसएसपी से की जा सकती है. पर सहसों थाने के पुलिसकर्मियों ने उनकी एक न सुनी तथा यह कहते हुए दोनों को गोली मार दी कि जालौन में समर्पण कर रहे थे, तो अब बचाने के लिए उन्हीं को बुलाओ. इस मुठभेड़ के बाद ही फूलन गिरोह भी वहां से मध्य प्रदेश सीमा में प्रवेश करके बीहड़ों में चला गया. फूलन ने अपने एक साथी को घनश्याम के पास इस विश्वासघात की सूचना देने के लिए भेजा. 15 नवंबर को सुबह दस बजे जब फूलन का साथी घनश्याम के पास आया, तो वह एक पेड़ के नीचे लाउडस्पीकर से कीर्तन करा रहा था. सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा थी. अपने दो साथियों के मारे जाने की ख़बर सुनकर घनश्याम को बहुत दु:ख हुआ. इसी बीच उसे जालौन के ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक का यह संदेश मिला कि वह 17 नवंबर के आत्मसमर्पण समारोह में मुख्यमंत्री को ला सकने में समर्थ नहीं हैं. अत: प्रदेश के अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक आरपी गोविल उस दिन रामपुरा आएंगे तथा उन्हीं के सामने आत्मसमर्पण की प्रक्रिया पूरी होगी.

मुख्यमंत्री के न आने की ख़बर से घनश्याम को गहरा आघात पहुंचा तथा उसने उसी समय लाउडस्पीकर पर यह घोषणा की कि अब वह 17 नवंबर को आत्मसमर्पण नहीं करेगा तथा पुन: बीहड़ में वापस जा रहा है. इस बीच उसने राम नारायण, फक्कड़, प्रभु आदि छोटे गिरोहों को भी समर्पण के लिए संदेश भिजवा दिया था. उनकी तरफ़ से लालाराम-श्रीराम का संदेश आ गया था कि वे भी आत्मसमर्पण के लिए तैयार हैं. लेकिन, अब स्थिति बदल रही थी. अत: घनश्याम ने दूसरे गिरोहों को रुकने का संदेश भिजवा दिया तथा खुद रात के बारह बजे फिर गायब हो गया. ■ *जारी...*

feedback@chauthiduniya.com

संतोष भारतीय

जब तोप मुक़ाबिल हो

हम दुनिया को धोखा नहीं दे सकते

कुछ सवाल मन में उठते हैं, जो प्रधानमंत्री से जुड़े हैं, भारत सरकार की रणनीति से जुड़े हैं. ये सवाल पूछें, तो किससे पूछें? प्रधानमंत्री के पास तक हमारे सवाल पहुंच नहीं पाएंगे. भारतीय जनता पार्टी के लोग सवालों के ऊपर ध्यान नहीं देंगे और देश के लोग सवालों को अपने आपसे पूछते रहेंगे. लेकिन, कभी-कभी ऐसा लगता है कि ये सारे सवाल देश की गति रोक रहे हैं और देश का बेशक़ीमती वक्त बर्बाद कर रहे हैं.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आख़िर अमेरिका क्यों गए? यह प्रश्न मेरे दिमाग में काफी गंभीरता से घूम रहा है. पांच दिनों तक अमेरिका और एक दिन आयरलैंड में क्यों रहे? हम अमेरिका की बात करें. प्रधानमंत्री का कार्यक्रम बनाने वाले लोगों ने उस समय कार्यक्रम बनाया, जब वहां रूस के ब्लादिमीर पुतिन एवं पोप की यात्रा होने वाली थी और ये तीनों एक साथ अमेरिका में थे. मैंने तलाशा कि अमेरिका के अख़बारों में मोदी की यात्रा को लेकर क्या छपा है. पाया कि मोदी की यात्रा को लेकर अमेरिकी अख़बारों, अमेरिकी मीडिया में कोई उत्सुकता नहीं है और न उन्हें वहां कोई स्थान मिला. स्थान न मिलने को भी हम अनदेखा कर सकते हैं, लेकिन अगर अमेरिकी अख़बारों में यात्राओं की तुलना होने लगे, तो फिर यह दु:खद स्थिति हो जाती है. प्रधानमंत्री वहां मार्क जुकरबर्ग से मिले. मार्क जुकरबर्ग फेसबुक के मालिक हैं. पहली चीज यह देखने को मिली कि मार्क जुकरबर्ग को हटाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपना चेहरा कैमरे के सामने पूरा दिखाने की कोशिश की. इस फोटो की चुटकी अमेरिकी अख़बारों में काफी ली गई और हिंदुस्तान के सोशल मीडिया में तो यह वीडियो और फोटो वायरल हो गया. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी डिजिटल इंडिया का नाम अमेरिका में फहराना चाहते थे कि वहां के लोग आएं और हिंदुस्तान में पैसे लगाएं, लेकिन अमेरिकी अख़बारों ने भारत के मोबाइल फोन कॉल ड्रॉप का मज़ाक उड़ाया और अधिकांश ने लिखा कि यह भारत में एक बुरा सपना बन गया है. हम भी देखते हैं कि कोई भी कॉल तीन बार ड्रॉप हुए बिना लगती ही नहीं है और जब पता लगाया तो मालूम हुआ कि यह अरबों रुपये का खेल है. जिसे बात करनी है, वह दोबारा फोन लगाएगा. जो बात एक कॉल में पूरी हो सकती है, उसके लिए तीन कॉल लग रही हैं. लेकिन, इस पर भारत सरकार चुपचाप बैठी है और मोबाइल कंपनियों को पैसे कमाने की खुली छूट दे रही है. हम यह बिल्कुल नहीं कहते कि मोबाइल कंपनियां सरकारी अधिकारियों या मंत्रियों को विशेष सुविधाएं पहुंचा रही हैं, पर शक तो होता है. जेब से पैसे भारत के उस आम आदमी के जा रहे हैं, जो मोबाइल फोन इस्तेमाल करता है.

अमेरिकी अख़बारों में सिलिकॉन वैली को रिझाने वाले नरेंद्र मोदी की चर्चा के साथ-साथ भारत में सेंसरशिप और निजता के हनन का खौफ भी चर्चा में रहा. पता नहीं, कौन अधिकारी या कौन मंत्री हैं, जो कुछ चीजें हवा में छोड़कर उसका परिणाम देखना चाहते हैं. पहले सोशल मीडिया, खासकर फेसबुक और ट्वीटर के ऊपर सेंसरशिप की बात सरकार की तरफ़ से आई, लेकिन उसे सुप्रीम कोर्ट ने अवैध करार दिया और उसके बाद वाट्सऐप के ऊपर अगर कोई संदेश आप भेज रहे हैं, तो उसे तीन महीने यानी 90 दिनों तक सुरक्षित रखने की बात सरकार की तरफ़ से कही गई. जब इसका देश में बहुत ज़्यादा विरोध हुआ कि यह लोगों की निजी ज़िंदगी में दखल है, तब इसे सरकार ने वापस लिया. पर लगता है कि यह टटोलने की कोशिश हो रही है कि भारत के नागरिकों की निजी ज़िंदगी में कैसे सरकार का दखल बढ़ाया जाए. भारत में मोदी अपने आलोचकों को परेशान कर रहे हैं, यह भी अमेरिकी अख़बारों का विषय रहा और इसमें उदाहरण के रूप में संजीव भट्ट एवं तीस्ता शीतलवाड़ के मामले का उल्लेख हुआ.

मोदी फेसबुक पर अपनी मां को याद करके रोए. मार्क जुकरबर्ग के सवालों ने उनकी आंखों में आंसू ला दिए. लेकिन, नरेंद्र मोदी: द मैन, द टाइम्स नामक किताब लिखने वाले नीलांजन मुखोपाध्याय ने कहा कि उन्हें तो कोई ऐसा सुबूत नहीं मिला, जिससे पता चले कि मोदी की मां दूसरों के घर पर काम करती थीं. अमेरिकी अख़बारों में इसे प्रधानमंत्री मोदी की ग़लत बयानी के रूप में देखा गया और मोदी का अपनी पत्नी से अलग रहना भी अमेरिकी अख़बारों में चर्चा का विषय बना. दरअसल, नरेंद्र मोदी से जुड़ी ज़्यादातर ख़बरें सिलिकॉन वैली से संबंधित हैं और एशिया पेसिफिक की श्रेणी में कोई फ्रंट पेज स्टोरी किसी अख़बार ने नहीं की. वहीं पोप और पुतिन से संबंधित ख़बरें अमेरिकी अख़बारों के प्रथम पेज पर मौजूद दिखाई दीं.

न्यूयार्क टाइम्स में सिलिकॉन वैली से संबंधित ख़बरें छपी हैं. उसके बिजनेस पेज पर एक हेडिंग है, Narendra Modi, Indian Premier, Courts Silicon Valley to Try to Ease Nation's Poverty. और, दूसरी हेडिंग उनके सिलिकॉन वैली के अगले दिन के कार्यक्रम से संबंधित है. यह भी बिजनेस पेज पर है. इसके अलावा न्यूयार्क टाइम्स में मोदी के दौरे से संबंधित कोई ख़बर नहीं है. जबकि पोप और पुतिन अमेरिकी अख़बारों या जिन अख़बारों का हम जिक्र कर रहे हैं, उनके फ्रंट पेज पर मौजूद हैं. उनसे संबंधित ज़्यादा ख़बरें फ्रंट पेज पर हैं. वाल स्ट्रीट जर्नल के अमेरिका,

सवाल सिर्फ़ एक है कि क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका की यात्राओं का आयोजन भारत सरकार इसलिए कर रही है कि उसे हिंदुस्तान में उनकी तस्वीर चमकानी है या इसलिए कि अमेरिका के सामने हिंदुस्तान का अच्छा चेहरा रखना है और हिंदुस्तान में एनआरआई का इंवेस्टमेंट लाना है. भारत में एनआरआई का इंवेस्टमेंट लगभग नहीं हुआ है. प्रवासी भारतीय दिवस कार्यक्रम शुरू हुए एक दशक से भी ज़्यादा समय बीत चुका है, नरेंद्र मोदी भी इसे बहुत तेजी के साथ प्रमोट कर रहे हैं, लेकिन एनआरआई ने हिंदुस्तान में कोई ज़्यादा इंवेस्टमेंट नहीं किया. तब किस इंवेस्टमेंट की बात कही जा रही है?

यूरोप व एशिया संस्करण में ओबामा एवं मोदी की अगले दिन की मीटिंग और सिलिकॉन वैली की एक छोटी-सी ख़बर के अलावा कोई कवरेज नहीं है. जबकि पुतिन और पोप, दोनों फ्रंट पेज पर मौजूद हैं. यूएसए टुडे अख़बार मोदी की जुकरबर्ग से मुलाकात और सिलिकॉन वैली से संबंधित ख़बरें छापता है, लेकिन पुतिन और पोप, दोनों को फ्रंट पेज पर जगह देता है. लॉस एंजेल्स टाइम्स पोप फ्रांसिस और नरेंद्र मोदी के अमेरिकी दौरे का तुलनात्मक अध्ययन करता है और हल्के-फुल्के अंदाज़ में चुटकी भी लेता है. उसका मानना है कि पोप फ्रांसिस और नरेंद्र मोदी का अमेरिकी दौरा एक-दूसरे से बिल्कुल अलग चरित्र का रहा. इस अख़बार का मानना है कि पोप फ्रांसिस और भारतीय प्रधानमंत्री एक ही समय पर अमेरिका के दौरे पर थे. अख़बार लिखता है कि दोनों एक अरब से अधिक लोगों का नेतृत्व करते हैं और दोनों भीड़ खींचने वाली शख्सियत हैं. मजे की बात यह कि दोनों जगह आंसू थे, जलवायु परिवर्तन पर बात थी, महिलाओं से संबंधित मुद्दे थे, लेकिन इसके बावजूद उनके दौरे के जो फ़र्क़ थे, अगर उन्हें ध्यान पूर्वक देखें, तो वे बहुत कुछ इशारा करते हैं.

ओबामा पोप की अगुवाई करने एयरपोर्ट गए और मोदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में गले लगाया. दरअसल, ओबामा और उनकी पत्नी मिशेल ओबामा ने प्रोटोकॉल तोड़कर पोप फ्रांसिस का मेरीलैंड में जाकर अभिवादन किया. पोप ने बेघर लोगों, किसी भी तरह के दुर्व्यवहार के शिकार लोगों और कैदियों के साथ समय बिताया. जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गूगल, फेसबुक और एप्पल के साथ समय बिताया. यहां ध्यान देने की बात यह है कि पोप ऐसे पहले धार्मिक नेता हैं, जिन्होंने अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया. पोप को सुनने के लिए फिलाडेल्फिया में 10 लाख लोग मौजूद थे. मोदी को सुनने के लिए सैप सेंटर सैन जोस में, जो कैलिफोर्निया में है, 18 हज़ार लोग आए थे और उनमें अधिकतर लोग भारतीय मूल के थे. जबकि इससे ठीक एक दिन पहले तक़रीबन 80 हज़ार लोग, जिनका लॉटरी में नाम निकला था, वे न्यूयार्क के सेंट्रल पार्क में पोप के आने का इंतज़ार कर रहे थे. अमेरिकी जनगणना के अनुसार, वहां तक़रीबन सात करोड़ लोग कैथोलिक हैं और 28 लाख से अधिक लोग भारतीय मूल के हैं. इसका मतलब 28 लाख लोगों में से सिर्फ़ 18 हज़ार लोग नरेंद्र मोदी को सुनने के लिए पहुंचे. जलवायु परिवर्तन पर पोप ने मार्टिन लूथर किंग का हवाला दिया, तो मोदी ने गांधी जी का. और, अख़बार कहता है कि यहां दोनों नेताओं ने शांति पसंद नेताओं को उद्धृत किया. पोप ने अपने प्रवचन से जॉन बोहेनर को रूला दिया और वहीं दूसरी तरफ़ मोदी को मार्क जुकरबर्ग ने एक सवाल करके रूला दिया. अख़बार इस नतीजे पर पहुंचा कि पोप का प्रवचन सुनकर बहुत सारे लोग अपने आंसू पोछते नज़र आए, जबकि मार्क जुकरबर्ग के सवाल पर सिर्फ़ मोदी की आंखों में आंसू आए.

मोदी के कैलिफोर्निया के कार्यक्रम और फेसबुक पर उनके इंटरव्यू के दौरान विरोध करने वाले मौजूद थे. कुछ प्रदर्शनकारियों ने जुकरबर्ग को मोदी से हाथ मिलाने के बाद हाथ साफ़ करने के लिए सैनेटाइज़र की 250 बोतलें भेजीं. वहीं पोप द्वारा जुनिपेरो सेर्रा, जिनके ऊपर अफ़्रीकी गुलामों को प्रताड़ित करने का आरोप था, को सेंटहूड दिए जाने के बावजूद कोई बड़ा विरोध प्रदर्शन नहीं हुआ. हां, पोप के एक कार्यक्रम में विरोध हुआ, वह भी एक टेंट को लेकर, जो स्टेज के सामने खड़ा कर दिया गया था और जिसकी वजह से लोग पोप को नहीं देख पा रहे थे.

सवाल सिर्फ़ एक है कि क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका की यात्राओं का आयोजन भारत सरकार इसलिए कर रही है कि उसे हिंदुस्तान में उनकी तस्वीर चमकानी है या इसलिए कि अमेरिका के सामने हिंदुस्तान का अच्छा चेहरा रखना है और हिंदुस्तान में एनआरआई का इंवेस्टमेंट लाना है. भारत में एनआरआई का इंवेस्टमेंट लगभग नहीं हुआ है. प्रवासी भारतीय दिवस कार्यक्रम शुरू हुए एक दशक से भी ज़्यादा समय बीत चुका है, नरेंद्र मोदी भी इसे बहुत तेजी के साथ प्रमोट कर रहे हैं, लेकिन एनआरआई ने हिंदुस्तान में कोई ज़्यादा इंवेस्टमेंट नहीं किया. तब किस इंवेस्टमेंट की बात कही जा रही है? हमारे देश की कंपनियां काम करना चाहती हैं. हमारे देश की कंपनियां काम न करें और विदेशी कंपनियों को हम आमंत्रित करें, अगर यह हमारा उद्देश्य है, तो शायद यह सही उद्देश्य नहीं है.

पर इन सारी स्थितियों में एक सवाल है और वह सवाल है कि अगर देश में बिजली नहीं होगी, तो हमारी कोई योजना चल पाएगी या नहीं? जब हम सरकारी आंकड़े देखते हैं कि पिछले डेढ़ साल में हमने पावर सेक्टर या बिजली उत्पादन के क्षेत्र में क्या किया, तो उसके कोई भी सही आंकड़े नहीं मिलते और न उत्साहित करने वाली कोई तस्वीर मिलती है. दूसरी तरफ़ जितनी योजनाएं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर शुरू हुईं, उनके बारे में ज़मीन पर कोई उत्साहजनक छाप नहीं दिखाई देती. मैं चाहता हूं कि इसके ऊपर मीडिया बात करे, लेकिन अफ़सोस की बात यह कि मीडिया हिंदुस्तान में नरेंद्र मोदी की छवि बनाने के लिए उनके अमेरिकी दौरे को विश्व विजय करने वाले योद्धा के अमेरिकी फतह के रूप में पेश कर रहा है. हम खुद को धोखा दे सकते हैं, लेकिन विश्व को धोखा नहीं दे सकते. ■

editor@chauthiduniya.com

आरक्षण पर बिहार चुनाव के बाद विचार हो

मेघनाद देसाई

जब 1990 में नरसिम्हा राव की सरकार ने उदारीकरण की नीति अपनाई थी, तो भारतीय उद्योगपतियों ने बहुत हो-हल्ला मचाया था, क्योंकि इससे पहले वे समाजवादी व्यवस्था के संरक्षण में थे और अब उन्हें पूंजीवाद की प्रतिस्पर्धा का सामना करने से डर लग रहा था. भारतीय उद्योगपतियों का कहना था कि यह ठीक नहीं है, क्योंकि अभी भारत इसके लिए तैयार नहीं है. खुशकिस्मती से उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया गया और भारत के साथ-साथ उन्हें भी खूब तरक्की मिली. अब मोहन भागवत ने आरक्षण ख़त्म करने का सवाल उठाकर एक निहायत जटिल समस्या को छेड़ दिया है. जो समूह आरक्षण का लाभ ले रहे हैं और जो राजनीतिक दल जाति आधारित वोट बैंक पर चलते हैं, वे भागवत के बयान के ख़िलाफ़ हैं. हालांकि, यह सवाल जायज है, लेकिन भागवत ने इसे उठाने के लिए ग़लत समय का चुनाव किया है, क्योंकि बिहार चुनाव बहुत निकट हैं. भारत में आरक्षण का एक रूप पिछली शताब्दी से मौजूद था. जबसे अंग्रेजों ने सीमित मताधिकार की अनुमति दी, तभी से बेहतरीन नौकरियों से ब्राह्मणों का एकाधिकार ख़त्म करने की मांग होने लगी थी. पुराने मद्रास प्रांत में जस्टिस पार्टी ने ब्राह्मण विरोध का कारगर और सफल अभियान चलाया. ब्राह्मणों ने बाकी की आबादी को शिक्षा से उस वक्त तक वंचित रखा, जब तक कि अंग्रेजों ने ऐसे स्कूल नहीं खोल दिए, जिनमें किसी भी जाति का व्यक्ति पढ़ सकता था. इसलिए जो लोग इस शिक्षा व्यवस्था से निकले थे, उन्होंने अपने लिए अच्छी सरकारी नौकरियों की मांग शुरू कर दी.

वर्ष 1931 की गोलमेज कांफ्रेंस में बीआर अंबेडकर की कोशिशों की वजह से उन जातियों पर एक श्वेतपत्र तैयार किया गया, जिनके लिए विशेष प्रावधान की आवश्यकता थी. उसी के नतीजे में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की श्रेणी सामने आई. संविधान में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति को 15 वर्षों तक आरक्षण देने का प्रावधान रखा गया था. ज़ाहिर है, आरक्षण 15 वर्षों के बाद भी जारी रहा. उसके बाद जनता सरकार के कार्यकाल में मंडल कमीशन का गठन हुआ. सरकार की मंशा साफ़ थी. आज़ादी के 30 वर्षों के बाद 25 वर्षों की पंचवर्षीय योजना ने सुस्त अर्थव्यवस्था और अस्थिर भारी औद्योगिकरण को जन्म दिया था. जो लोग अंग्रेजी माध्यम से नहीं पढ़े थे और ऊंची जाति के नहीं थे, उनके लिए रोज़गार के मामूली अवसर थे. पंचवर्षीय योजनाओं का लाभ एक बड़ी बहुसंख्यक आबादी को नहीं मिला. मंडल कमीशन ने पिछड़ी जातियों, खास तौर पर शूद्र जातियों यानी अन्य पिछड़ा वर्ग के पिछड़ेपन की पहचान की, लेकिन उसने अपना ध्यान केवल हिंदू वर्ण व्यवस्था पर केंद्रित रखा. चलिए मान लेते हैं कि दलितों को इसमें समाहित किया गया, लेकिन दूसरे अल्पसंख्यकों, खास तौर पर मुसलमानों को नज़रअंदाज़ कर दिया गया. सच्चर समिति, जिसका गठन यूपीए सरकार ने किया था, की रिपोर्ट (जिस पर कार्यान्वयन नहीं हुआ) बताती है कि मुसलमान कितने वंचित हैं.

जब 1989 में कांग्रेस का एकाधिपत्य समाप्त हुआ, तो मंडल कमीशन की सिफारिशें लागू करना संभव हो सका. हालांकि, कांग्रेस और भाजपा दोनों इसे नापसंद करते थे, लेकिन व्यापक समर्थन की वजह से न तो कांग्रेस और न भाजपा इसका विरोध कर सकी. लिहाज़ा नरसिम्हा राव की सरकार ने दो मोर्चों पर काम किया. पहला, मंडल पर दशकों की स्थिरता का नुक़सान ठीक किया और दूसरा उदारीकरण की नीति अपना कर अर्थव्यवस्था के विकास को रफ्तार दी.

जब 1989 में कांग्रेस का एकाधिपत्य समाप्त हुआ, तो मंडल कमीशन की सिफारिशें लागू करना संभव हो सका. हालांकि, कांग्रेस और भाजपा दोनों इसे नापसंद करते थे, लेकिन व्यापक समर्थन की वजह से न तो कांग्रेस और न भाजपा इसका विरोध कर सकी. लिहाज़ा नरसिम्हा राव की सरकार ने दो मोर्चों पर काम किया. पहला, मंडल पर दशकों की स्थिरता का नुक़सान ठीक किया और दूसरा उदारीकरण की नीति अपना कर अर्थव्यवस्था के विकास को रफ्तार दी. जहां तक आरक्षण का सवाल है, तो अब एक शताब्दी के बाद यह सवाल ज़रूर पूछा जाना चाहिए कि क्या आरक्षण कारगर साबित हुआ? राजनीतिक तौर पर आरक्षण की कामयाबी को विकृत रूप में ही सही, पटेल आरक्षण आंदोलन ने साबित किया है. अब आरक्षण नीति अपनी अंतिम सीमा तक पहुंच चुकी है. जाट और पाटीदार जैसे समूह तकनीकी तौर पर ओबीसी हैं, लेकिन कुशल भूमि प्रबंधन और पश्चिमी शिक्षा को अपना कर उन्होंने अपना सामाजिक रुतबा बढ़ा लिया है. वे किसी भी लिहाज़ से सामाजिक तौर पर वंचित नहीं हैं. मंडल के ओबीसी प्रमुख रूप से बीमारू राज्यों से आते हैं, जहां आज़ादी के 30 वर्षों बाद के आर्थिक ठहराव को ऊंची जातियों के उत्पीड़न ने और सुदृढ़ किया. इन जातियों की कांग्रेस पर ज़बरदस्त पकड़ थी. फ़िलहाल हमारे पास जाति आधारित जनगणना के आंकड़े हैं. यही समय है कि यह देखा जाए कि उन जातियों को, जिन्हें मंडल कमीशन ने चिन्हित किया था या दलितों की सामजिक हैसियत में आरक्षण की वजह से कोई सुधर आया है? मोदी ने 42 वर्षों से लंबित एक रैंक-एक पेंशन के मसले को सुलझा लिया है. वह कम से कम एक विशेषज्ञ समिति गठित करके यह पूछ ही सकते हैं कि एक शताब्दी से चल रही आरक्षण नीति का कुछ लाभ मिला है? अभी नहीं, बिहार चुनाव के बाद. ■

feedback@chauthiduniya.com

अख़बारों और न्यूज़ पोर्टल्स की सुर्ख़ियों में होगया दिमाग़ का दही

चौथी दुनिया ब्यूरो

डेली मल्टीमीडिया लिमिटेड के बैनर तले फौज़िया अर्शी के निर्देशन में बनी कॉमेडी फिल्म होगया दिमाग का दही की अख़बारों में और इंटरनेट पर धूम मची है. एक तरफ़ जहां फिल्म का ट्रेलर लॉन्च होते ही यू–ट्यूब और अन्य वेबसाइट्स पर लाखों लोगों ने इसे देखा, वहीं दूसरी तरफ़ यह फिल्म मीडिया वेबसाइट्स एवं बॉलीवुड ख़बरों के चैनल्स की सुर्ख़ियां बनी. फिल्म होगया दिमाग का दही को सबसे पहले सुर्ख़ियां कॉमेडी के शहंशाह कादर खान की फिल्मों में वापसी की ख़बर से मिलीं. कादर खान इस फिल्म के साथ तक़रीबन दस वर्षों के बाद फिल्मों में वापसी कर रहे हैं. कादर खान की वापसी का स्वागत करने वाले अमिताभ बच्चन के ट्वीट को टाइम्स ऑफ इंडिया, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, मिड–डे, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान टाइम्स, अमर उजाला, इंडियन एक्सप्रेस और द ट्रिब्यून जैसे प्रतिष्ठित अख़बारों ने प्रमुखता से जगह दी. अधिकांश अख़बारों ने बिग बी अमिताभ बच्चन ने किया कादर खान की वापसी का स्वागत शीर्षक से यह ख़बर प्रकाशित की. देश के तक़रीबन हर अख़बार और वेब पोर्टल ने इस ख़बर को जगह दी. इसके बाद कादर खान ने कहा कि बीमार होने की वजह से फिल्म निर्माताओं ने उन्हें फिल्मों में लेने से मना कर दिया था. उन्होंने कहा कि फौजिया अर्शी ही हैं, जिन्होंने मुझे अपनी फिल्म होगया दिमाग का दही में लिया और मुझे आगे काम करने के लिए प्रेरित किया. यह ख़बर भी अख़बारों में छाई रही. इसे मराठी, गुजराती, पंजाबी, उर्दू एवं अंग्रेजी यानी हर भाषा के अख़बारों में जगह मिली. जानी–मानी फिल्म पत्रिका मायापुरी ने भी कादर खान की वापसी की ख़बर कादर खान का हो गया दिमाग़ का दही शीर्षक के साथ प्रमुखता से प्रकाशित की. अंग्रेजी फिल्म पत्रिका ब्लॉकबस्टर ने कादर खान की वापसी की ख़बर आई लव माय प्रोफेशन शीर्षक के साथ प्रकाशित की. ब्लॉकबस्टर को दिए गए इंटरव्यू में कादर खान ने अपने जीवन से जुड़े कई पहलुओं पर खुलकर बातचीत की.

> कादर खान ने मुंबई में फिल्म के प्रोमो की लॉन्चिंग के मौक़े पर पत्रकारों से कहा कि लोगों को बस सलमान और शाहरुख की फिल्में पसंद आती हैं. इसी वजह से अच्छी फिल्में नज़रअंदाज़ हो जाती हैं. मराठी अख़बार मुंबई चौफेर ने लोक माइला बरोबर काम करायला नकार देदात शीर्षक के साथ कादर खान की पीड़ा जगज़ाहिर की कि बीमार होने की वजह से लोग उनके साथ काम नहीं करना चाहते थे.

कादर खान ने मुंबई में फिल्म के प्रोमो की लॉन्चिंग के मौक़े पर पत्रकारों से कहा कि लोगों को बस सलमान और शाहरुख की फिल्में पसंद आती हैं. इसी वजह से अच्छी फिल्में नज़रअंदाज़ हो जाती हैं. मराठी अख़बार मुंबई चौफेर ने लोक माइला बरोबर काम करायला नकार देदात शीर्षक के साथ कादर खान की पीड़ा जगज़ाहिर की कि बीमार होने की वजह से लोग उनके साथ काम नहीं करना चाहते थे. हिंदुस्तान डॉट कॉम ने कादर खान की वापसी की ख़बर आई विल ब्रिंग क्वालिटी बैक शीर्षक के साथ प्रकाशित की. कादर खान को पद्म सम्मान से नवाजे जाने के बयानों को देश के सभी प्रमुख अख़बारों ने प्रमुखता से जगह दी. हिंदुस्तान टाइम्स ने लिखा, बी–टाउन रूट्स फॉर कादर खान.

मीका सिंह इस फिल्म के एक गीत में एनीमेटेड अवतार में नज़र आएंगे, इस ख़बर को देश के सभी अख़बारों एवं वेबसाइट्स ने जगह दी. यह ख़बर अंग्रेजी दैनिक टाइम्स ऑफ इंडिया ने मीका सिंह डज ए मडोना शीर्षक से प्रकाशित की. जानी–मानी वेबसाइट बॉलीवुड स्पाइस डॉट कॉम ने भी इसे प्रकाशित किया. चंड़ीगढ़ से प्रकाशित होने वाले दैनिक अख़बार आज समाज ने लिखा कि मीका देश के पहले ऐसे गायक बन गए हैं, जिनका कार्टून अवतार फौजिया अर्शी के निर्देशन में बनी फिल्म के गाने में चार चांद लगाएगा. इंडिया ब्लूम्स वेब पोर्टल ने होगया दिमाग का दही के ट्रेलर को दर्शकों द्वारा सराहे जाने की ख़बर छापी. फिल्मी फ्राइडे ने भी जन्माष्टमी के अवसर पर होगया दिमाग का दही टीम द्वारा आयोजित कार्यक्रम को अपनी वेबसाइट पर जगह दी. मराठी अख़बार सकाल ने भी हो गया दिमाग का दही टीम के इस कार्यक्रम की ख़बर प्रकाशित की. बॉलीवुड हंगामा ने फिल्म से जुड़ी हस्तियों, खासकर कादर खान के इंटरव्यू को जगह दी.

अंग्रेजी अख़बार बैंगलोर मिरर के मुताबिक, होगया दिमाग का दही की निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी का कहना है कि कादर खान एक असली, साफ़–सुथरे हास्य कलाकार हैं. फ़ौज़िया अर्शी ने बताया कि उन्हें इस बात का दु:ख है कि इस फिल्म की शूटिंग ताज सिटी आगरा में नहीं हो पाई. नेशनल दुनिया के मुताबिक, लंबे अर्से से सिनेमाई दर्शकों की नज़रों से दूर रहने वाले मशहूर अभिनेता कादर खान का कहना है कि आज सिर्फ़ लोगों को इस चीज से मतलब है कि फिल्म में शाहरुख हैं और सलमान हैं या नहीं. इस नज़रिये का खामियाजा अच्छी फिल्मों को भुगतना पड़ रहा है. ■

feedback@chauthiduniya.com

यह फिल्म बेहतर कॉमेडी के लिए याद की जाएगी : कादर खान

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में पिछले पचास सालों में जिन लोगों ने अपनी कलम की ताकत मनवाई, उनमें कादर खान का नाम प्रमुखता से लिया जाता है. शायद ही कोई ऐसा शख्स हो, जो उनकी अभिनय क्षमता का कायल न हो. कादर खान कई सालों के लंबे अंतराल के बाद एक बार फिर फ़ौज़िया अर्शी निर्देशित फिल्म हो गया दिमाग़ का दही से अभिनय की दुनिया में वापसी कर रहे हैं. इसके मद्देनज़र चौथी दुनिया ने उनसे लंबी बातचीत की. पेश हैं, प्रमुख अंश:-

आप इस फिल्म के ज़रिये कई सालों के बाद कमबैक कर रहे हैं? इस फिल्म से आपको क्या उम्मीदें हैं?

जब भी मैं कोई फिल्म करने की सोचता हूं, तो उसके बारे में बहुत विचार करता हूं. मैंने बहुत सोच-विचार कर इस फिल्म से वापसी का इरादा किया. इससे मुझे बहुत उम्मीदें हैं. फिल्म का कुछ हिस्सा मैंने देखा, उसका प्रोमो देखा, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है. मुझे उम्मीद है कि यह फिल्म न सिर्फ़ कॉमर्शियल सक्सेसफुल होगी, बल्कि कलाकारों के बेहतर हास्य अभिनय के लिए भी याद की जाएगी. लोग मुझे वापस देखकर बहुत खुश होंगे. इस फिल्म को अगर लोगों का वैसा ही प्यार मिला, जैसा पहले मेरी फिल्मों को मिलता रहा है, तो मैं समझूंगा कि लोगों को अब भी मेरी ज़रूरत है. इसकी सफलता मुझे अन्य फिल्में करने के लिए भी प्रेरित करेगी.

एक प्रेस कांफ्रेंस में आपने कहा था कि बीमारी के दौरान कोई भी आदमी आपके साथ काम नहीं करना चाहता था. आपने कैसा महसूस किया, जब आपको ऐसी जगह पर लोगों का सहयोग नहीं मिला, जहां आपने कई दशकों तक काम किया हो. आपने आत्मविश्वास फिर से कैसे हासिल किया?

जीवन में कई दफा ऐसा होता है कि आप जिस बात की उम्मीद न कर रहे हों, वह घटित होती है. ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी हुआ. यह बिल्कुल ठीक है कि जब मैं बीमार हो गया और इंडस्ट्री से दूर हो गया, तो कई ऐसे लोग थे, जिनसे मुझे उम्मीद थी, लेकिन उन्होंने मेरे साथ काम करने से इंकार कर दिया. फिर मुझे नकारात्मक एहसास होने लगा और यह लगा कि अब शायद मैं कुछ कर भी पाऊंगा या नहीं. इसी दौर में मुझे फिल्म हो गया दिमाग़ का दही की निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी मिलीं. उन्होंने मुझे एप्रोच किया और कहा कि मुझे कमबैक करना चाहिए. उस समय तक मैं पूरी तरह से मायूस हो चुका था कि अब दोबारा फिल्म इंडस्ट्री में क़दम नहीं रख पाऊंगा. इस बीच कुछ काम आया भी था मेरे पास, लेकिन मुझे लगा कि इतनी बीमारी में क्या कर पाऊंगा, इसलिए

जीवन में कई दफा ऐसा होता है कि आप जिस बात की उम्मीद न कर रहे हों, वह घटित होती है. ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी हुआ. यह बिल्कुल ठीक है कि जब मैं बीमार हो गया और इंडस्ट्री से दूर हो गया, तो कई ऐसे लोग थे, जिनसे मुझे उम्मीद थी, लेकिन उन्होंने मेरे साथ काम करने से इंकार कर दिया. फिर मुझे नकारात्मक एहसास होने लगा और यह लगा कि अब शायद मैं कुछ कर भी पाऊंगा या नहीं.

मना कर दिया. लेकिन, फ़ौज़िया ने मुझमें काफी विश्वास दिखाया और प्रोत्साहित किया. उन्होंने बहुत मोहब्बत से काम किया और मुझे बिल्कुल एहसास नहीं होने दिया कि मैं बीमार हूं या मुझे कोई परेशानी है.

फिल्मों में आपकी वापसी का सदी के महानायक अमिताभ बच्चन ने स्वागत किया है. इस बारे में आपका क्या कहना है? हमें इस फिल्म की स्टोरी के बारे में भी जानकारी दें.

अमिताभ बच्चन मेरे अजीज मित्रों में हैं. यह मेरे लिए खुशी की बात है कि उन्होंने फिल्मों में मेरी वापसी का स्वागत किया है. मैं उन्हें इसके लिए धन्यवाद देता हूं. अमिताभ एक बेहतरीन अदाकार हैं और उनके इस फिल्म के बारे में ट्वीट करने से फ़ायदा ही होगा. मैंने पिछले कुछ सालों में उन्हें काफी मिस किया है. जहां तक फिल्म की बात है, तो यह मूवी एक बहुत ही सुंदर कॉमेडी ड्रामा है, जिसमें कुछ यंगस्टर्स ऐसी सिचुएशन में आ जाते हैं, जहां वे ख़ुद को इम्प्रूव करते हैं. मैं समझता हूं कि आज का दर्शक सुपर इंटेलिजेंट है. यह सुपर इंटेलिजेंट एज है. आज लोगों को केवल उपदेश देकर नियंत्रित नहीं किया जा सकता. इसलिए हमने ऐसी सिचुएशंस बनाईं, जिनमें हमने दिखाया कि कैसे डिफ्रेंट्स आइडियाज़ के साथ यंगस्टर्स को ग्रूम किया जाए. यह फिल्म इसी के बारे में है. मैं इस फिल्म को लेकर बहुत आशांवित हूं. फिल्म का सेंट्रल आइडिया बहुत सुंदर है. यह पूरी तरह से कॉमेडी मसाला फिल्म है.

इस फिल्म के अलावा भी आप किसी और प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं?

अभी तो नहीं. हां, यह ज़रूर है कि मेरे दिमाग़ में कुछ चीजें चल रही हैं, जिन्हें मैंने अभी एक प्रेस कांफ्रेंस के दौरान बताया भी था. उसमें मैंने यह इच्छा ज़ाहिर की थी कि फ़ौज़िया मेरी फिल्म शमां को डायरेक्ट और प्रोड्यूस करें. शमां मेरे दिल के क़रीब है. इस फिल्म को मैंने बनाया था. मेरा यकीन है कि फ़ौज़िया इसके साथ इंसाफ़ कर सकेंगी. हम लोगों ने इस पर काम शुरू कर दिया है.

फ़ौज़िया अर्शी ने आपको पद्मश्री देने के लिए राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को पत्र लिखा है, जिसे इंडस्ट्री के कई कलाकारों का समर्थन मिल रहा है. इस पर आपका क्या कहना है?

देखिए, मुझे जो कुछ आता था, वह सब मैंने कला को दिया है. अगर लोगों को यह लगता है कि मैंने ज़िंदगी में ऐसा कोई काम किया है, जिसके लिए मुझे पद्मश्री मिलना चाहिए, तो यह उनकी मोहब्बत है. उनकी मोहब्बत से ही मैं यहां तक पहुंचा हूं. ■

feedback@chauthiduniya.com

बिग बी ने किया कादर खान की वापसी का स्वागत

दस वर्षों तक फिल्मों से दूर रहे दिग्गज अभिनेता एवं संवाद लेखक कादर खान फिल्म होगया दिमाग़ का दही के ज़रिये वापसी कर रहे हैं. बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ने उनकी वापसी का ऐलान करते हुए खुशी जताई और उनका स्वागत किया. अमिताभ बच्चन ने ट्वीट किया कि अच्छे सहयोगी, लेखक, मेरी कई सफल फिल्मों में सहायक कादर खान एक लंबे ब्रेक के बाद फिल्मों में वापसी कर रहे हैं. बॉलीवुड के कॉमेडी किंग नाम से प्रसिद्ध कादर खान एक बार फिर से लोगों को गुदगुदाने आ रहे हैं. कादर खान ने अपने करियर में अलग-अलग तरह के किरदार निभाए हैं. उन्होंने कुली, बाप नंबरी बेटा दस नंबरी, हम, बोल राधा बोल, आंखें, राजा बाबू और जुड़वा सहित 350 से अधिक फिल्में कीं. कादर खान केवल अभिनेता ही नहीं, बल्कि निर्देशक और संवाद लेखक भी हैं. फिल्म कुली में अमिताभ के किरदार में जान डालने वाला संवाद-बचपन से सर पर अल्लाह का हाथ और अल्लाह रक्खा है अपने साथ. बाजू पर 786 का है बिल्ला और 20 नंबर की बीड़ी पीता हूं. काम करता हूं कुली का और नाम है इक़बाल. जिसके सर पर हाथ पड़े, बचे ना उसका एक भी बाल कादर खान ने ही लिखा था. इतना ही नहीं, फिल्म अग्निपथ, जिसके लिए अमिताभ बच्चन को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला, में भी अमिताभ के जानदार संवादों का श्रेय कादर खान को ही जाता है. उम्मीद है, कादर खान की 16 अक्टूबर को रिलीज होने वाली फिल्म होगया दिमाग़ का दही को अमिताभ बच्चन जैसे उनके पुराने दोस्तों का भरपूर प्यार मिलेगा. ■

हंगामा डॉट कॉम पर होगया दिमाग़ का दही का हंगामा

बॉलीवुड की मसाला ख़बरें और फिल्मी कलाकारों के इंटरव्यू दिखाने वाली यूं तो कई सारी मनोरंजन वेबसाइटस हैं, लेकिन बॉलीवुड हंगामा डॉट कॉम आजकल लोगों में ज़्यादा लोकप्रिय है. बॉलीवुड हंगामा डॉट कॉम में भारतीय फिल्म उद्योग से जुड़ी ख़बरें, सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली फिल्मों के रिव्यू और बॉक्स ऑफिस से जुड़ी हर रिपोर्ट अपने दर्शकों को दिखाती है. हाल में बॉलीवुड हंगामा डॉट कॉम पर फ़ौज़िया अर्शी द्वारा निर्देशित और डेली मल्टीमीडिया लिमिटेड के बैनर तले बनी कॉमेडी फिल्म हो गया दिमाग़ का दही से जुड़ी ख़बरें दिखाई गईं. बॉलीवुड हंगामा डॉट कॉम ने फिल्म हो गया दिमाग़ का दही की निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी और संतोष भारतीय के साथ कॉमेडी किंग कहे जाने वाले कादर खान का इंटरव्यू लिया. इंटरव्यू में फिल्म के प्रोड्यूसर संतोष भारतीय ने कहा कि फिल्म जगत में बादशाह कहने के लिए तो बहुत सारे नाम हैं, लेकिन कॉमेडी का अगर कोई बादशाह है, तो वह हैं सिर्फ़ कादर खान. हज यात्रा से लौटने के बाद कोई नहीं जानता था कि कादर खान फिल्मों में काम करेंगे या नहीं, लेकिन बड़ी मशक्कत के बाद फिल्म की निर्देशक ने कादर खान को मनाया. फिल्म में एक नेचुरल कॉमेडी है, जो दमदार डायलॉग और शानदार अभिनय पर आधारित है. कादर खान बताते हैं कि जब दिमाग़ का दही होता है, तो इंसान अपने आपसे अलग हो जाता है. जब मैं फिल्म लाइन से अलग हुआ, तो अपने आपसे दूर हो गया था. निर्देशक फ़ौज़िया बताती हैं कि लोग ज़िंदगी के रिश्तों और चुनौतियों का किस तरह सामना करते हैं, उसे हमने इस फिल्म में कॉमेडी अंदाज़ में फिल्माया है. बॉलीवुड हंगामा डॉट कॉम पर एक इंटरव्यू में कादर खान कहते हैं कि वह जब भी दही देखते हैं, तो उन्हें हो गया दिमाग़ का दही याद आ जाता है. फिल्म हो गया दिमाग़ का दही 16 अक्टूबर को रिलीज होगी. ■

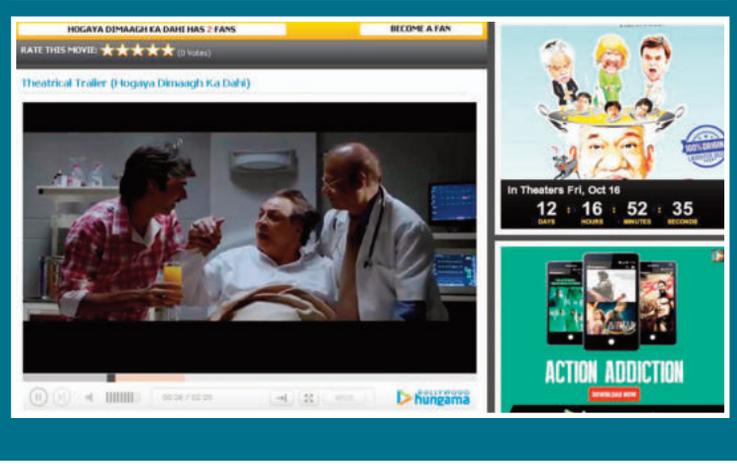

छोटे पर्दे पर होगया दिमाग़ का दही की धूम

चौथी दुनिया ब्यूरो

फिल्म हो गया दिमाग़ का दही का प्रमोशन ज़ोर-शोर से चल रहा है. इसके ट्रेलर और गीतों को अधिकांश समाचार एवं म्यूजिक चैनलों में दिखाया जा रहा है. इसके ट्रेलर और डायलॉग अनायास ही लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं. ओम पुरी का डायलॉग-कब ले जाओगे धीरे-धीरे लोगों की ज़ुबान पर चढ़ रहा है. इसके अलावा किरदारों के परिचय का अनोखा अंदाज़ भी दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल हो रहा है. एक तरफ़ जहां फिल्म में मत कर-मत कर दिमाग़ का दही जैसा टाइटल सॉन्ग है, वहीं दूसरी तरफ़ मौला-मौला जैसी रूहानी कव्वाली. इसके गीत लोगों को अपनी ओर खींच रहे हैं. एनडीटीवी, एबीपी, इंडिया न्यूज, ईटीवी के बिहार-झारखंड, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड, मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़ आदि चैनलों पर फिल्म के टीजर का लगातार प्रसारण हो रहा है. इसके अलावा जी म्यूजिक, जी ईटीसी, ई-24, एसबी म्यूजिक जैसे पॉपुलर चैनलों पर फिल्म के प्रोमो लगातार दिखाए जा रहे हैं. इसके इतर फिल्म के प्रमोशन के लिए होगया दिमाग़ का दही की पूरी टीम देश के विभिन्न शहरों में पहुंच रही है, जहां लोगों के बीच फिल्म के प्रति उत्साह देखते ही बनता है. जी न्यूज (मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़) ने प्रमोशन के लिए भोपाल पहुंची टीम से मुलाक़ात की. अभिनेता ओम पुरी और निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी ने लोगों से फिल्म देखने का अनुरोध किया. ओम पुरी और फ़ौज़िया अर्शी ने बताया कि यह ऋषिकेश मुखर्जी के दौर जैसी फिल्म है. इसमें किसी भी तरह के द्विअर्थी संवाद नहीं हैं. यह पूरी तरह पारिवारिक फिल्म है. इसके गीत इसे दूसरी कॉमेडी फिल्मों से अलग खड़ा करते हैं. ■

होगया दिमाग़ का दही

सोशल मीडिया पर धूम मचाती फिल्म

होगया दिमाग़ का दही

तरुण फोर
feedback@chauthiduniya.com

भारत में हमेशा से लोगों का फिल्मी दुनिया के साथ एक खास रोमांस जुड़ा रहा है. एक समय ऐसा भी था जब इस दुनिया को लोग एक अलग जादूई दुनिया समझते थे. फिल्म का हीरो असल जिंदगी का हीरो था और फिल्म का खलनायक असल जिंदगी में भी खलनायक ही था. फिल्मी कलाकारों की जिंदगी से जुड़ी बेसिर-पैर की अफवाहें भी उड़ा करती थीं और लोग उन्हें सच मान लेते थे. फिल्मों और उनके चाहने वालों के बीच एक बड़ा फासला था. दरअसल, यह फासला एक-तरफा नहीं था. फिल्मी कलाकार भी जनता के मन की बात जल्दी नहीं जान पाते थे. अगर कोई फिल्म रिलीज होने वाली होती थी तो उसे कैसा रिस्पॉन्स मिलेगा. यह किसी को पता नहीं होता था. लेकिन वक्त ने करवट बदली और ज़माना बदल गया. आज फ़िल्मी दुनिया का तकरीबन हर कलाकार अपने चाहने वालों से केवल एक बटन की दूरी पर है.

अब किसी फिल्म के रिलीज होने से पहले उसका प्रमोशन परंपरागत साधनों जैसे टीवी अख़बार के साथ-साथ सोशल मीडिया जैसे यू-ट्यूब, फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्स ऐप, इन्स्टाग्राम, और इन्टरनेट पर भी किया जाता है. और उन्हें मिल रहे रिस्पॉन्स से यह पता चल जाता है कि फिल्म का स्वागत सिने प्रेमी कैसे करेंगे. डेली मल्टीमीडिया के बैनर तले बनी फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** के प्रोमोशन के लिए सोशल मीड़िया का इस्तेमाल बड़ी खूबी से किया गया. फिल्म के संबंध में लोगों की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं. ***होगया दिमाग का दही*** के फेसबुक पेज को 50 हजार से अधिक लोगों ने लाइक किया है.

फेसबुक

होगया दिमाग़ का दही फिल्म के सारे गाने बहुत अच्छे हैं. काफी दिनों बाद कुछ अलग गाने सुनने को मिले.

– *पवन कुमार गुप्ता, नई दिल्ली*

होगया दिमाग़ का दही फिल्म का मौला-मौला कव्वाली बहुत लाजवाब है. कव्वाली के वह कायल हो गए.

– डॉ. आनंद के त्रिपाठी, *इलाहाबाद*

हम होगया दिमाग का दही फिल्म का बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. हम इसे जरूर देखने जायेंगे.

– रोशन मरार, *मुंबई*

क्या है प्रशंसकों की राय

होगया दिमाग़ का दही फिल्म को लेकर सोशल साईट्स पर ही नहीं, बल्कि लोगों में भी काफी उत्साह है, हमने काफी लोगों से बात की उन्होंने फिल्म के ट्रेलर को देखकर अपना नजरिया बताया.

होगया दिमाग़ का दही का ट्रेलर देखकर हंस-हंस के पेट में दर्द हो गया. यह फिल्म काफी अच्छी होगी. मुझे इस फिल्म का बेसब्री से इतजार है. .

– अतुल शर्मा

मौला-मौला क़व्वाली बहुत अच्छे तरीके से फिल्माई गई है. इसको जितनी बार सुनों उतनी बार आन्द आता है और मन करता है इसको सुनते ही जाऊं

– मिनी मधवाल

होगया दिमाग़ का दही फिल्म के सारे गाने और ट्रेलर देखने के बाद मुझे पूरा विश्वास है कि यह फिल्म बहुत ही अच्छी और हिट होगी.

– आकृति गंगुली

होगया दिमाग़ का दही एक हंसाने वाली फिल्म है. इस फिल्म में पंचेज ऐसे हैं, जो किसी को भी हंसा सकते हैं. इस फिल्म में सभी अच्छे हास्य कलाकार हैं. इस फिल्म को मैं जरूर देखने जाऊंगी.

– हिमानी रावत

फिल्म होगया दिमाग़ का दही की रूहानी क़व्वाली मौला मौला बहुत सुंदर क़व्वाली है, जो दिल को छू जाती है.

– शुभा श्रीवास्तव

इस फिल्म में कादर खान जी को देखकर बहुत खुशी हो रही है. मैं यह फिल्म देखने ज़रूर जाऊंगी.

– स्वाति मुंजाल

पहली बार बॉलीवुड में कोई ऐसा गाना देखा है, जो कि ऐनिमेटेड है.

– महीन कपूर, *कोच्चि*

क़ादर ख़ान बहुत बेहतरीन कलाकार हैं. इसलिए उन्हें पद्म श्री पुरस्कार मिलना चाहिए.

– गुंजन शर्मा, *मुंबई*

होगया दिमाग का दही फिल्म में 5 हास्य कलाकार हैं, यह अपने आप में बड़ी बात है. यह फिल्म सुपरहिट होगी. मैं इसे जरूर देखने जाऊंगा.

– वरुण फोर

होगया दिमाग़ का दही के ट्रेलर को देखकर ही फिल्म का अंदाजा हो गया कि इस फिल्म में कितनी कॉमेडी होगी और यह सुपरहिट होगी.

– अकृति सिंह, *नई दिल्ली*

होगया दिमाग़ का दही फिल्म का गाना बाप होना पाप मुझे पसंद है. यह काफी बेहतरीन गीत है.इस फिल्म का मुझे इंतजार है.

– मयंका सलीचा, *राजस्थान*

होगया दिमाग़ का दही फिल्म के डॉयलाग इतने अच्छे है कि हंसी नहीं रुकती.

– निकिता कुलकर्णी, *कलयान*

मौला-मौला कव्वाली ने दिल जीत लिया. बहुत समय बाद ऐसी कव्वाली सुनी है.

– विवेक सिंह, *उत्तर प्रदेश,*

होगया दिमाग़ का दही फिल्म से क़ादर ख़ान फिल्मों में वापसी कर रहे है, यह फिल्म सुपरहिट होगी.

– अंकिता वर्मा, *भोपाल, मध्यप्रदेश*

बॉलीवुड का पहला ऐनिमेटेड गाना बाप होना पाप एक बहुत अच्छा आईडिया है.

– इशिता सूरी

होगया दिमाग़ का दही फिल्म का ***कभी तो सुन गौर से*** गाना मुझे बहुत पसंद आया. मैं सारा दिन यही सुनता रहता हूं.

– अमित चौधरी

होगया दिमाग़ का दही के बारे में लोगों ने ई-मेल के जरिये अपने विचार रखे

मैंने यू-ट्यूब में मूवी का आइटम सॉन्ग सुना जो कुनाल गांजावाला और ऋतु पाठक ने गाया है. गाने में नये कलाकारों का हुनर झलकता है. फिल्म निश्चित ही सफल होगी. जिनमें 5 शानदार हास्य कलाकारों को एक साथ जोड़ा गया है. मैं निश्चित ही अपने पूरे परिवार के साथ यह मूवी देखने जाऊंगा.

– पुष्यमित्र तिवारी

हैलो फ़ौज़िया अर्शी जी आपकी आने वाली फिल्म ***होगया दिमाग का दही*** के सारे गाने बहुत अच्छे हैं. मुझे उम्मीद है कि यह फिल्म हिट होगी.

– निशांत कीतु

कभी तो सुन गौर से यह बहुत ही बेहतरीन और लाजवाब गाना है. यह गीत मेरे दिल को छू गया. मुझे इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार है.

– रुचि यादव, *लक्ष्मी नगर, दिल्ली*

मैंने यू-ट्यूब में इस मूवी का ट्रेलर और गाने देखे. मुझे बहुत अच्छा लगा. सबसे अच्छी बात है इस फिल्म में 5 हास्य कलाकार हैं. यह फिल्म निश्चित ही सफल होगी. मैं यह फिल्म जरूर देखने जाऊंगा.

– दिलीप गुप्ता, *सुभाष नगर, नई दिल्ली*

क़ादर ख़ान काफी समय बाद इस फिल्म से वापसी कर रहे हैं. यह काफी खुशी की बात है, इस फिल्म के गाने सुने. मौला-मौला बहुत ही उम्दा है.

– किरण देवी, *गोरखपुर*

मैंने ***होगया दिमाग़ का दही*** फिल्म के सारे गाने सुने, सारे ही गाने बहुत अच्छे हैं.मुझे इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार है.

– विकास कुमार गुप्ता, *झारखंड (धनबाद)*

कभी तो सुन गौर से बहुत ही बेहतरीन गाना है. होगया दिमाग़ का दही फिल्म को मेरी ओर से बहुत सारी शुभकामनायें.

– अनीता, दिल्ली

होगया दिमाग़ का दही का प्रोमो और गाने बहुत ही अच्छे लगे. यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर धमाल करेगी.

– अशोक कंजानी

सोशल नेटवर्किंग हाईलाइट्स

- ***होगया दिमाग़ का दही*** फिल्म के पेज को लाखों लोगों ने ट्विटर पर फॉलो किया है.
- गूगल प्लस पर भी हज़ारों की संख्या में लोगों ने होगया दिमाग़ का दही के पेज को देखा है.
- व्हाट्स ऐप्प पर ***होगया दिमाग़ का दही*** ग्रुप पर 20 हजार से भी अधिक लोग जुड़े हैं, जिन्होंने गाने और ट्रेलर वहां से डाउनलोड किए.
- इंस्टाग्राम पर होगया दिमाग़ का दही पेज पर हजारों की संख्या में लोग जुड़े. यहां वे रोज पोस्ट देखकर अपने सुझाव देते हैं.
- थिएट्रिकल ट्रेलर होगया दिमाग़ का दही की बॉलीवुड हंगामा, और डेलीमोशन पर भी धूम मचा रही है, यहां पर भी लगभग लाखों से ज्यादा लोगों ने ट्रेलर को देखा है.
- होगया दिमाग़ का दही फिल्म का ट्रेलर यूट्यूब पर भी धमाल मचाया हुआ है. अभी तक ऑफिशियल थिएट्रिकल ट्रेलर को 3 लाख से अधिक लोग देख चुके हैं.
- वहीं होगया दिमाग़ का दही मोशन के पोस्टर को हजारों लोग यूट्यूब पर देख चुके हैं.
- होगया दिमाग़ का दही का टीज़र वीडियो को हज़ारों लोगों ने यूट्यूब पर देखा.
- होगया दिमाग़ का दही के फुल सॉन्ग को लाखों लोग यूट्यूब पर देख चुके हैं.
- होगया दिमाग़ का दही फिल्म में एक क़व्वाली है, जिसके बोल मौला मौला है. इस क़व्वाली को बहुत वाह-वाही मिल रही है. काफी संख्या में लोगों ने इसे यूट्यूब पर देखा.
- होगया दिमाग़ का दही के थिएट्रिकल ट्रेलर-2 को हजारों की संख्या में लोगों ने यूट्यूब पर देखा.
- फिल्म होगया दिमाग़ का दही का एनिमेटेड सॉन्ग आजकल लोगों को खूब पसंद आ रहा है. यूट्यूब पर भारी संख्या में लोगों ने इसको देखा.
- ज़ी म्यूज़िक पर होगया दिमाग़ का दही का टाइटल सॉन्ग लाखों लोग देख चुके हैं.
- ज़ी म्यूज़िक पर होगया दिमाग़ का दही का सॉन्ग बाप होना पाप है काफी लोगों को भा रहा है. इस गाने को हजारों लोग देख चुके हैं.
- चौथी दुनिया यूट्यूब पर भी होगया दिमाग़ का दही फिल्म के गाने और ट्रेलर को लाखों लोगों ने देखा है.
- कुल मिलाकर कहें तो लोगों को होगया दिमाग़ का दही फिल्म के गाने, ट्रेलर, काफी अच्छे लग रहे हैं. गानों को यूट्यूब और बॉलीवुड हंगामा पर लाखों लोग देख चुके हैं.
- हजारों की संख्या में लोगों ने फिल्म होगया दिमाग़ का दही के गानों को डाउनलोड किया है. मौला- मौला क़व्वाली, बाप होना पाप है. कभी तो सुन गौर से, दिमाग का दही. काफी संख्या में लोगों को पंसद आए.

रेडियो पर पहले ही हिट हो चुकी है

होगया दिमाग़ का दही

आरजे संतोष राव

16 अक्टूबर को रिलीज़ होने वाली फ़ौज़िया अर्शी की फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** रेडियो पर अभी से हिट हो गयी है. एफ एम रैनबो (102.6) पर फिल्म के लिए खेले गए कांटेस्ट में लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं. फिल्म की पॉपुलैरिटी का अंदाज़ा फिल्म के बारे में जानने के लिए पूरे देश भर से आये हज़ारों लिसनर्स के कॉल्स से ही लगाया जा सकता है. ये फिल्म एक कामेडी ड्रामा है जिसमे राजपाल यादव, संजय मिश्रा, ओम पुरी, रज्जाक़ ख़ान जैसे हास्य कलाकारों के साथ कॉमेडी के किंग ख़ान की जुगलबंदी देखने को मिलेगी .हज़ारों लिसनर्स दिल्ली, मुंबई ही नहीं बंगाल, झारखंड, केरल, राजस्थान सहित 18 राज्यों से फोन और सन्देश भेज रहे हैं और कुछ ऐसे लिसनर्स भी हैं जो भाग्यशाली विजेता भी चुने गये हैं. जिनके नाम हम यहां प्रकाशित कर रहें हैं. ■

विजेताओं की सूची

क्र.	नाम	शहर का नाम
1	मंजू यादव	लखनऊ
2	बृज किशोर	सहारनपुर
3	आशीष मिश्रा	सुल्तानपुर
4	मोहम्मद बाबुल आलम	बिहार
5	जानवी ठाकुर	भागलपुर
6	दुलाल दास	बंगाल पश्चिम
7	सी.के चक्रवर्ती	उत्तराखंड
8	मनोज कुमार गौला	असम
9	तापस बिस्वास	केरल
10	संजीव	दिल्ली
11	सुभाशिस दास	पश्चिम बंगाल
12	राजन महापात्र	केरल
13	एस.के दुबे	लखनऊ
14	मनीष मुखर्जी	छत्तीसगढ़
15	अरविंद महापात्र	उड़ीसा
16	कुमार गणेश	राजस्थान
17	धीरू सिंह	मैनपुरी
18	दिनेश शुक्ला	कानपुर,
19	निकिता मिश्रा	महाराष्ट्र
20	राजेश	बिहार

क्र.	नाम	शहर का नाम
21	आदित्य	जालंधर
22	रुचि कंबोज	हरियाणा
23	आरिफ वानी	जम्मू-कश्मीर
24	जेनी	नगालैंड
25	आकाश	अरुणाचल प्रदेश
26	मानसी सूद	उत्तराखंड
27	हेमकांत बोरा	पश्चिम बंगाल
28	सुखलाल	असम
29	सोमिन	गोवा
30	कीर्ति कुमार यादव	उन्नाव
31	अनुपम कुमार चौहान	उत्तर प्रदेश
32	प्राण मोहन	पश्चिम बंगाल
33	मो.आसीफ	उत्तर प्रदेश
34	नवाजिस	हरियाणा
35	सुब्रत हाजरा	पश्चिम बंगाल
36	मोहम्मद सद्दामल	बिहार
37	समीर	उत्तर प्रदेश
38	सुमित कुमार सिंह	उत्तर प्रदेश
39	वेंकटेस	कर्नाटक
40	संजय यादव	गोवा

160 में से केवल 40 नाम प्रकाशित हुए हैं. सूची जारी...

क़ादर ख़ान को मिले पद्मश्री
रंग ला रही है मुहिम

चौथी दुनिया ब्यूरो
feedback@chauthiduniya.com

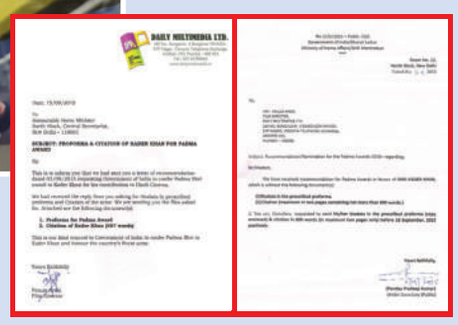

बॉलीवुड की तरफ से अभिनेता कादर खान को पद्मश्री पुरस्कार देने की मांग उठती देख अब गृह मंत्रालय हरकत में आ गया है. गृह मंत्रालय ने फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** फिल्म की निर्माता-निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी द्वारा भेजी गई उस चिट्ठी का जवाब दिया है, जिसमें उन्होंने क़ादर ख़ान साहब को पद्मश्री अवार्ड देने की मांग की थी. 11 सितंबर को भेजे गए पत्र में गृह मंत्रालय ने कहा है कि आप पद्मश्री के लिए क़ादर ख़ान के नाम की औपचारिक अनुशंसा भेजें. इसके जवाब में फौजिया अर्शी ने 15 सितम्बर को गृह मंत्रालय को पत्र लिखकर पद्म पुरस्कार का प्रफॉर्मा और एक प्रशस्ति पत्र भी भेजा है. दरअसल, ओमपुरी, रूमी ज़ाफरी, डेविड धवन, शक्ति कपूर और ऋषि कपूर जैसे कई कलाकारों ने निर्माता-निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी की इस मांग का समर्थन किया था कि भारत सरकार क़ादर खान को पद्मश्री से सम्मानित करे. क़ादर ख़ान फौजिया अर्शी की फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** से एक दशक बाद फिल्म में वापसी कर रहे हैं. निर्माता-निर्देशक फौजिया अर्शी ने पहल करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री राजनाथ सिंह और राष्ट्रपति को पत्र लिखा था और क़ादर ख़ान को पद्मश्री देने की मांग की थी. उनकी इस पहल को बॉलीवुड से व्यापक समर्थन भी मिला था और मीडिया ने भी इस मांग को प्रमुखता से कवर भी किया था. क़ादर ख़ान को पद्मश्री से नवाजे जाने की मांग करते हुए ओमपुरी ने कहा था कि वह यह पुरस्कार डिजर्व करते हैं. उन्होंने इतने साल बतौर एक एक्टर और राइटर फिल्म इंडस्ट्री की खिदमत की है, हमारी सरकार से गुजारिश है कि वह उन्हें पद्मश्री से नवाजे. लेखिका-निर्देशक रूमी ज़ाफरी ने कहा था कि कादर खान पद्मश्री पाने के सबसे प्रबल दावेदार हैं, उन्होंने हिंदी फिल्मों के लिए बहुत योगदान किया है. फिल्म निर्माता डेविड धवन और अभिनेता शक्ति कपूर, क़ादर खान को पद्मश्री दिए जाने के समर्थन में आगे आए. वहीं ऋषि कपूर ने कहा कि उन्हें उनके बेजोड़ लेखन और अभिनय में योगदान के लिए निश्चित तौर पर पद्मश्री से पुरस्कृत किया जाना चाहिए. अपनी बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग के लिए जाने-जाने वाले क़ादर ख़ान ने बॉलीवुड में 400 से भी ज्यादा फिल्मों में अभिनय किया और 250 से अधिक लोकप्रिय फिल्मों की पटकथा और संवाद भी लिखे. उन्हें विभिन्न श्रेणियों के चार फिल्म फेयर पुरस्कार भी दिया जा चुके है. उन्हें साल 2013 में भारत सरकार ने साहित्य शिरोमणि सम्मान से सम्मानित किया था. बहरहाल, फौजिया अर्शी की पहल अब रंग ला रही है और उम्मीद की जानी चाहिए कि जल्द ही भारत सरकार क़ादर ख़ान साहब को हिन्दी फिल्म में उनके योगदान के लिए पद्म श्री पुरस्कार के जरिए सम्मानित करेगी. ■

इंटरनेट पर हिट है ट्रेलर

जबरदस्त डायलॉग्स, शानदार स्टोरी, सुन्दर फोटोग्राफी, कमाल का म्यूजिक, गजब का डायरेक्शन और कामेडी के बेहतरीन सीन्स हैं फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** में. इसी वजह से इंटरनेट पर फिल्म का ट्रेलर जबरदस्त धूम मचा रहा है. ट्रेलर के लॉन्च होते ही इसे यू-ट्यूब पर लाखों लोग देख चुके हैं. पहले ही दिन यू-ट्यूब और अन्य इंटरनेट साइट्स पर फिल्म का ट्रेलर देखने वालों की संख्या दस लाख के आंकड़े को पार कर गई. गौरतलब है कि इस फिल्म से क़ादर खान बॉलीवुड में एक दशक बाद वापसी कर रहे हैं. फिल्म 16 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है. ये फिल्म एक कॉमेडी ड्रामा है. इस फिल्म में ओमपुरी, राजपाल यादव, संजय मिश्रा, रज्जाक ख़ान, विजय पाटकर और सुभाष यादव जैसे मंझे हुए कॉमेडियन के साथ कामेडी के किंग क़ादर ख़ान की जुगलबंदी देखने को मिलेगी. इनके अलावा फिल्म में चित्रांशी रावत, अमिता नागिया, बंटी चोपड़ा, अमित जे, दानिश भट्ट, नेहा कराद आदि कलाकारों ने काम किया है. फिल्म का ट्रेलर धमाकेदार है जो दर्शकों को बांधे रखता है. फिल्म के ट्रेलर की शुरुआत और अंत में ओमपुरी को फोन पर एक अनजान आदमी बार बार एक ही सवाल पूछता है कि ***कब ले जाएंगे***, जिससे ओमपुरी काफी परेशान नजर आते हैं.यह तो ट्रेलर है पिक्चर अभी बाकी है, इससे पता लग रहा है कि फिल्म काफी मजेदार होगी, इसमें वो सभी चीजें हैं जो बॉलीवुड की फिल्मों में आमतौर पर होती हैं. तभी तो ट्रेलर देखने वालों की संख्या दस लाख के आंकड़े को पार कर गई है. फिल्म होगया दिमाग़ का दही का टाइटल सॉन्ग तो पहले ही हिट हो चुका है और अब मेरे मौला मौला गाने को भी लाखों हिट्स मिल रहे हैं. इस गीत को कैलाश खेर और फ़ौज़िया अर्शी ने अपनी आवाज दी है.■

होगया दिमाग़ का दही
फिल्म से जुड़ी कुछ दिलचस्प कहानियां

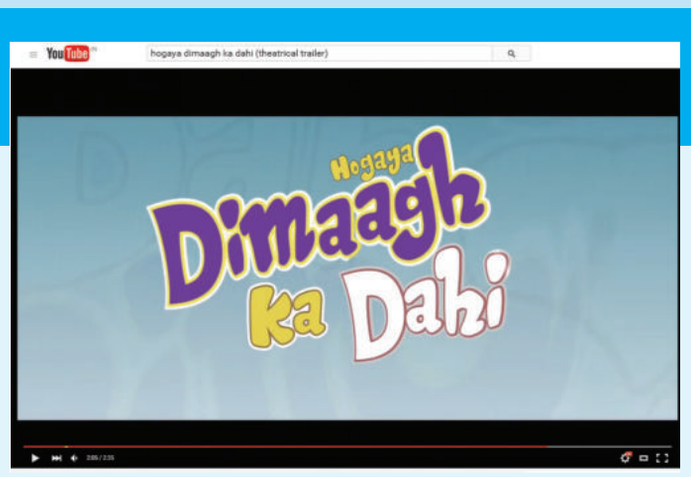

चौथी दुनिया ब्यूरो
feedback@chauthiduniya.com

फिल्म बनाना संजीदा आर्ट है लेकिन इस संजीदगी के दौरान भी कुछ हल्की फुल्की यादें जुड़ जाती हैं जिन्हें सिनेमा प्रेमी सुनना और पढ़ना पसंद करते हैं. फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** बनाने के दौरान भी ऐसी बहुत मज़ेदार घटनाएं हुईं. यहां हम ऐसी ही कुछ घटनाओं का उल्लेख कर रहे हैं.

ज़हमत बनी रहमत

फिल्म की क़व्वाली ***मौला मौला*** की शूटिंग अहमदाबाद स्थित सरखेज रोज़ा पर होनी थी. जब फिल्म की यूनिट वहां पहुंची तो तेज बारिश हो रही थी. एएसआई की तरफ से यहां शूटिंग करने के लिए केवल दो दिन की इजाज़त मिली हुई थी. बारिश थी कि रुकने का नाम नहीं ले रही थी. पहले दिन बारिश की वजह से बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ा. मज़ेदार बात यह है की पूरी यूनिट भीग चुकी थी, बावजूद इसके शूटिंग का काम नहीं रुका. दरअसल बारिश ने क़व्वाली के बैकग्राउंड को और भी खूबसूरत बना दिया.

क़ादर ख़ान मान गए

फिल्म की डायरेक्टर फ़ौज़िया अर्शी क़ादर ख़ान को इस फिल्म के लिए साइन करना चाहती थीं. एक दिन फ़ौज़िया उनके घर पहुंचीं. पहले उनके सेक्रेटरी ने समय देने से इंकार कर दिया, लेकिन बहुत कोशिश के बाद वह मुलाक़ात करवाने के लिए राजी हुए और जब क़ादर ख़ान साहब ने स्क्रिप्ट सुनी तो उन्होंने स्क्रिप्ट को बहुत सराहा. कहा, डायलॉग्स बहुत दमदार हैं, इनमें नयापन है और फिर बीमारी के बावजूद उन्होंने फिल्म में काम किया.

कैसे हुआ दिमाग़ का दही

फिल्म के टाइटल के पीछे भी एक दिलचस्प कहानी है. फ़ौजिया अर्शी कहती हैं कि हिमाचल प्रदेश में फिल्म की शूटिंग लोकेशन की तलाश चल रही थी. फिल्म में एक खंडहर हवेली भी थी. उस खंडहर हवेली को ढूंढ़ने में बहुत वक्त लग रहा था. फौजिया बताती हैं कि हवेली ढूंढने के दौरान एक दिन मेरे मुंह से निकला कि यार दिमाग़ का दही हो गया है. फिर उन्हें ख्याल आया अरे यह तो कमाल का टाइटल है. इसे इंप्रोवाइज करते-करते ***होगया दिमाग़ का दही*** टाइटल को फाइनल कर लिया गया.

ठंडी हवेली की असलियत

फिल्म में जो ठंडी हवेली है, असल में उसका नाम ठंडी हवेली नहीं है. वह पूरा का पूरा बंगला है. जिसे ठंडी हवेली का नाम दिया गया है. वह इतनी ऊंचाई पर थी कि सभी कलाकारों को तकरीबन 100 से 125 सीढियां चढ़कर वहां पहुंचना पड़ता था. सभी लोग थक जाते थे और मजाक में कहते कि इस डायरेक्टर ने हमारे दिमाग का दही कर दिया है. रोजाना सौ सीढियां चढ़वाती है और वह भी दिन में दो बार, इस पर भी सेट पर हमेशा हंसी-मजाक होता रहता था.

एक बार तो भौंक दो...

इस फिल्म में एक कुत्ते का रोल भी है. उसका नाम है गब्बर. फिल्म में एक डॉयलाग है कि इतनी कमीनी शक्ल वाला का कुत्ता आप लाए कहां से. वह कुत्ता वाकइ में कमीना था, फिल्म में कई भौंकने वाले सीन थे पर वह एक बार भी नहीं भौंका. 15 दिन तक वह यूनिट के साथ रहा. एसी में रहता था और एक शॉट देने के बाद फिर से एसी रूम में वापस घुस जाता था. मतलब उससे ज्यादा नखरे सेट पर और किसी के नहीं थे. उसका असली नान हैवेन है और वह एक बार भी नहीं भौंका. ■

बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं *शाहबाज़*

फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** की क़व्वाली मौला मौला इन्टरनेट, टेलीविज़न और सोशल मीडिया पर धूम मचा रही है. यह क़व्वाली एक ऐसे कलाकार पर फिल्माई गई है जो किसी परिचय का मोहताज नहीं है. फिल्म और टेलीविज़न में दिलचस्पी रखने वाला शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो शाहबाज़ ख़ान को नहीं जानता हो. हालांकि शाहबाज़ खान का संबंध एक बहुत ही प्रतिष्ठित संगीत के घराने से है. उनके पिता उस्ताद आमिर अली ख़ान प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत गायक हैं, लेकिन इस के बावजूद उन्होंने अपने लिए अभिनय का मैदान चुना. दूरदर्शन सीरियल दि सोर्ड ऑफ टीपू सुल्तान में हैदर अली के किरदार को कौन भुल सकता है? शाहबाज़ खान ने इस किरदार को इतने जीवंत तरीके से निभाया था, कि उसके आगे संजय खान अभिनीत टीपू सुल्तान का किरदार फीका लगने लगा था. शाहबाज खान का जन्म 1966 में मध्य प्रदेश के इंदौर में हुआ था. वह मुंबई जाने से कुछ साल पहले तक एक स्थानीय बार काम करते थे.

बहरहाल, यह शाहबाज़ खान की प्रतिभा ही है कि फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** की रूहानियत से भरपूर इस क़व्वाली में वह एक कव्वाल ही नज़र आते हैं. क़व्वाली में कैलाश खेर की आवाज़ अगर सुरूर पैदा करती है तो शाहबाज़ का अभिनय अपने साथ लोगों को झूमने पर मजबूर कर देता है. संगीत इस फिल्म का अहम और अटूट हिस्सा है और कव्वाली मौला मौला भी का ताना-बाना भी फिल्म की कहानी से साथ ही बुना गया है. तकनीकी रूप से यह कव्वाली पारंपरिक और आधुनिक कव्वाली का सहज मिलन है. शहबाज़ ख़ान को उनके धारावाहिक और फिल्मों में उनके निगेटिव किरदारों के लिए जाना जाता है, लेकिन इस फिल्म में उनका किरदार बिलकुल अलग नज़र आएगा. उन्होंने दि सोर्ड ऑफ़ टीपू सुल्तान के आलावा दुरदर्शन चैनल पर आने वाले धारावाहिक चन्द्रकांता में कुंवर वीरेन्द्र सिंह का किरदार अदा किया था, जो राजकुमारी चन्द्रकांता से बेहद प्यार करता था. इसके बाद उन्होंने द ग्रेट मराठा, लूटेरी दुल्हन समेत कई धारावाहिकों में लीड रोल किया. शाहबाज़ खान ने धरतीपुत्र, बादल, बिग ब्रदर, एजेंट विनोद और सिंह साहब द ग्रेट समेत कई कामयाब फिल्मों में भी काम किया है. फिल्मों में उनके काम को काफी सराहा गया है. शाहबाज़ खान अपने किरदार को जीवंत बना देते हैं. फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** की कव्वाली मौला मौला में बहुत ही खूबसूरत एक्ट किया है. इस कव्वाली में उनके एक-एक मूव को देखने लायक है. इन्टरनेट, टेलीविज़न और सोशल मीडिया पर इस कव्वाली को खूब पसंद किया जा रहा है. यू-ट्यूब पर इस कव्वाली को अब तक लाखों लोग देख चुके हैं और शाहबाज़ खान को लोग इस रूप में खूब पसंद कर रहे हैं. ■

पर्दे पर आना अलग एक्सपीरियंस है: आरजे माधुरी

फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** की कव्वाली मौला मौला पहली ऐसी सूफी कव्वाली है, जिसमें महिला की आवाज को लिया गया है. इस फिल्म में जो महिला एक्ट करती नजर आएंगी वो एफएम रैनबो की आरजे माधुरी हैं. पेश है, चौथी दुनिया के साथ उनकी बातचीत के मुख्य अंश...

होगया दिमाग़ का दही फिल्म की कव्वाली में एक्टिंग के लिए आपको ऑफर कैसे मिला?

इसके पीछे एक बहुत बड़ी स्टोरी छिपी है. संतोष भारतीय जी ने रेडियो के प्रमोशनल काम के लिए हमें अपने ऑफिस बुलाया था. इस काम के लिए हम अपनी टीम के साथ मुंबई गए. जब हम अपना रेडियो प्रोग्राम खत्म कर वहां से वापस लौट रहे थे, तो संतोष जी ने बताया कि फिल्म के लिए ऑडिशन होना है. जब हम अगले दिन वहां पहुंचे, तो एक से बढ़कर एक लड़कियां मौजूद थीं और उन्हें पता था कि उन्हें यहां क्या करना है. मुंबई मैं पहली बार गई थी और सबकुछ गौर से देख रही थी. तभी पीछे से हमारे प्रोड्यूसर संतोष भारतीय जी की आवाज आई माधुरी जी एक मिनट. मैं संतोष जी के पास गई, तो उन्होंने कहा तुम पांच मिनट में नीचे आ जाओ स्क्रीन टेस्ट लेते हैं. मुझे पता नहीं कि ऑडिशन में मुझे करना क्या है. मैंने कारपेट पर बैठकर अपना एक्ट किया. मुझे पता नहीं था उसमें उन्हें क्या अच्छा लगा, मैं सेलेक्ट हो गई.

आरजे भी एक एक्टर ही होता है, लेकिन उसकी एक्टिंग पर्दे के पीछे होती है. अब आपके श्रोता आपकों एक्टिंग करते हुए बड़े परदे पर देखेंगे. इसको लेकर आप कितनी एक्साइटेट हैं?

मैं मीडिया में आई, तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरा रेडियो में होगा. मेरा शौक डान्स में भी, ड्रामा में भी, सिंगिंग में भी, एंकरिंग में भी था. रेडियो से जुड़ी, तो पता लगा कि हम अपनी आवाज के साथ क्या-क्या कर सकते हैं. सही कहा आपने कि वहां पर भी एक्टिंग होती है. दोनों पार्ट में एक्टिंग होती है, लेकिन पर्दे पर आना वो एक अलग एक्सपीरियंस होता है.

हो गया दिमाग़ का दही फिल्म के बारे में और इनमें काम कर रहे हैं कलाकारों के बारे में आप क्या कहना चाहेंगी?

कलाकारों के बारे में यही कहूंगी कि सभी लोग अपने काम को लेकर डेडिकेटेड हैं. अगर आप एक्टर्स की बात करें, तो उसमें चित्राशी रावत वो चेहरा नहीं हैं कि आप नाम लें और कोई न पहचाने. सभी कलाकारों ने अच्छा किया पंडित जी, दानिश भट्ट जी का उम्दा स्टाइल है और उनका अलग ही स्टाइल है. कव्वली की बात करें, तो शहबाज़ ख़ान ने उसमें इतना अच्छा एक्ट किया है कि उसे जो भी देखता वो भी सबसे पहले शहबाज़ खान की तारीफ करता है. ■

फिल्म का टाइटल लोगों को खूब पसंद आ रहा है: आरजे संतोष राव

संतोष राव एफएम रैनबो के आरजे हैं. उन्होंने फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** के सभी कलाकारों का साक्षात्कार किया है. इस फिल्म के कलाकारों से साक्षात्कार के अनुभव के बारे में उन्होंने चौथी दुनिया से लंबी बातचीत की. प्रस्तुत हैं बातचीत के मुख्य अंश...

आपने होगया दिमाग का दही फिल्म के सभी कलाकारों का साक्षात्कार किया है. आपका उनसे बातचीत का अनुभव कैसा रहा?

फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** के लिए कलाकारों से जब मुलाकात हुई, तो एक अलग ही अनुभव रहा, क्योंकि यह एक ऐसी फिल्म है, जो पंचेज से भरी है. ऐसे-ऐसे डायलॉग हैं कि हर डायलॉग पर हंसी आती है. क़ादर ख़ान जी, ओमपुरी जी, राजपाल यादव, रज्जाक खान, अमिता नागिया, शहबाज़ ख़ान जितने भी इस फिल्म के किरादर रहे हैं सबसे निजी मुलाकात की, बातचीत की और अच्छा अनुभव रहा.

फिल्म होगया दिमाग़ का दही दर्शकों को हंसाने में कितनी कामयाब होगी?

जितना हमने लोगों से बातचीत की है, प्रोमो सुने हैं, ट्रेलर देखे हैं, फिल्म में जितने भी गाने हैं इन सबको देखकर लगता है कि फिल्म बहुत कामयाब होगी. चूंकि ऐसी फिल्में हमारे बॉलीवुड में बहुत कम बनती हैं. लोगों को हंसाने का केवल एक नाम होता है. द्विअर्थी संवादों का इस्तेमाल होता है. इस फिल्म के जो मैंने डायलॉग सुने और जो बातचीत की उससे यही नतीजा निकला कि यह एक पारिवारिक फिल्म है और लोगों को हंसाने में यह बहुत कामयाब होगी.

आप फिल्म हो गया दिमाग़ का दही के गानों और क़व्वाली मौला मौला के बारे में क्या कहना चाहेंगे?

इस क़व्वाली को सूट होते हुए भी हमने देखा है और इस कव्वाली में जो रूहायनती है. वह सबसे ज्यादा आकर्षित करती है. कैलाश खेर की आवाज बहुत बेहतरीन है. इस कव्वाली का एक-एक शब्द में रूहायनती पैदा करती है और हमने जब अपने एफएम पर प्ले किया, तो लोगों ने पूछा की यह कव्वाली किस फिल्म की है.

श्रोताओं ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी होगी. किस तरह की प्रतिक्रियाएं मिलीं

फिल्म का टाइटल लोगों को खूब पसंद आ रहा है. जिन लोगों से हमने निजी तौर पर बात की है या एसएमएस के थ्रू बात की, सबका यही कहना था कि यह फिल्म बहुत अच्छी और हम यह फिल्म जरूर देखेंगे. ■

मौला मेरी आवाज़ को पसंद करता है: कैलाश खेर

कैलाश खेर और सूफी संगीत एक दूसरे के पर्याय हैं. जब कभी किसी संगीतकार को सूफी गीत गाने के लिए गायक की तलाश होती है तो उसकी नज़रें कैलाश खेर की ओर मुड़ जाती हैं. ऐसा एक बार फिर हुआ, जब फिल्म होगया दिमाग़ का दही की निर्देशक और संगीतकार फ़ौज़िया अर्शी ने फिल्म के गीत मौला-मौला को आवाज देने के लिए कैलाश खेर को चुना. कैलाश खेर के साथ सूफिज्म और संगीत के प्रति उनके प्रेम के बारे में चौथी दुनिया संवाददाता ने बातचीत की.

आप उन गीतों के लिए जाने जाते हैं जिनकी शुरूआत मौला शब्द से होती है. क्या इसमें कोई राज है?

सूफी संगीत आध्यात्मिक और चिंतनशील होते हैं. आप फिल्मों में ऐसे गीतों को मजह मनोरंजन के लिए नहीं डाल सकते हैं. आप किसी भी कारण के लिए शब्द मौला का उपयोग नहीं कर सकते हैं. नकली दुनिया में असली काम करने के लिए आपको असली होना पड़ेगा.

क्या मौला आपका सबसे प्रिय शब्द है?

मुझे लगता है कि मौला मेरी आवाज को पसंद करता है. क्या आप जानते हैं कि मैंने आदेश श्रीवास्तव के लिए हनुमान चालीसा और देवी मां की आराधना के लिए गुजराती प्रार्थना भी रिकॉर्ड की है. इस देश में जब आप ईश्वर की आराधना के गीत गाते हैं तब आपको सावधान रहना होता है, लेकिन आपको तभी स्वीकार्यता मिलेगी जब आप अपने काम में खरे होते हैं.

आपने आने वाली फिल्म *होगया दिमाग़ का दही* में मौला मौला जैसा बेहतरीन गीत गाया है, इस गीत और दूसरे सूफी गीतों में क्या फर्क है?

इन गीतों में आपस में तुलना करना असंभव है. जब आप इबादत या प्रार्थना करते हैं तो आप भगवान से जुड़ते हैं. मेरे लिए गायन इबादत की तरह है. मुझे अल्लाह ने गाने की नेमत बख्शी है, इसके साथ मैं मनोरंजन के क्षेत्र से जुड़ा हूं जहां मैं इन गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं का खुलकर इजहार कर सकता हूं.

हाल में बजरंगी भाईजान फिल्म आई थी जो सुपरहिट रही. उसमें अदनान सामी ने क़व्वाली गाई है और अब इस फिल्म में आप की क़व्वाली है. क्या फिर से कव्वाली का ट्रेंड शुरू हो गया है?

देखिए, सिर्फ ट्रेंड कायम नहीं होता. दरअसल बीच-बीच में अच्छी चीजें फिर से आ जाती है. बाहुबली में हमारे शिव तांडव की विश्व स्तर पर चर्चा हुई. होता क्या है कि हमारे इर्द-गिर्द ही कोहिनूर घूमते हैं. तेरी काया नगर में राम-राम, तू जंगल-जंगल क्या ढूंढे/ तेरे रोम-रोम में राम-राम, तू पत्थर में सर क्या मारे.

इस फिल्म के साथ संगीत जगत से एक नया चेहरा जुड़ रहा है. हमें फिल्म की निर्देशक और संगीतकार फ़ौज़िया अर्शी के बारे में कुछ बताइये?

फ़ौज़िया बहुत ही प्रतिभाशाली हैं, वह बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं. वह गिटार बजाती हैं, वह पेंटर हैं, अच्छा लिखती हैं, अच्छा गाती हैं. उन्होंने फिल्म का निर्देशन भी किया है और जाने-माने पत्रकार संतोष भारतीय के साथ फिल्म को प्रोड्यूस भी की हैं. फ़ौज़िया अपने आप में एक अलग तरह की शख्सियत हैं. उन्होंने अपनी प्रतिभा का फिल्म में सहजता से उपयोग भी किया है. भगवान ने उन्हें नेमत बख्शी है, मेरी ओर से उन्हें शुभकामनाएं.

मौला-मौला गीत के बारे में यदि बात करें जिसमें कई जाने माने शायरों अल्लामा इक़बाल, अमीर खुसरो और कृष्ण बिहारी नूर की नज्मों को मिलाकर पेश किया गया है क्या यह इसे और स्पेशल नहीं बनाती है?

बिलकुल! यदि पाठकों को संक्षेप में बतायें तो अल्लामा इक़बाल ने ही सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा लिखा था. अमीर खुसरो किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं यदि कृष्ण बिहारी नूर न होते तो उर्दू साहित्य में एक तरह की रिक्तता होती. मुझे इस बात पर गर्व है कि मुझे इन शायरों को अपनी आवाज दे सका. आजकल का अधिकांश लेखन दोयम दर्जे का है जिसमें गहराई नहीं है.

फ़ौज़िया जी की आवाज भी है उस क़व्वाली में आपके साथ है गायिका के तौर पर आप उन्हें कैसा पाते हैं?

बहुत बहुत प्यारा है. अभी देखिये सब अच्छा है. मेरे दाता ने चाहा तो अब इस को थोड़ा लोग सुनें. गाना आगे जाये और फिल्म लोगों द्वारा देखी जाये. ■

गाने ऐसे, जो कानों के रास्ते दिल में उतरते हैं

आदित्य पांडेय

डेली मल्टीमीडिया लिमिटेड के बैनर तले बनी और 16 अक्टूबर को रिलीज होने जा रही फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** एक ऐसी फिल्म है जिसके गाने फिल्म रिलीज़ होने से पहले ही

सुनने वालों की वाह-वाही बटोर रहे हैं. गानों के बोल शब्बीर अहमद ने लिखे हैं और संगीत निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी ने संगीतबद्ध किया है. कॉमेडी ड्रामा के जौनर (विधा) में बनी फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** के प्रोमो देखने के बाद यह लगता है कि यह फिल्म जहां एक तरफ दर्शकों को हंसा-हंसा कर लोट-पोट कर देगी, वहीं दूसरी ओर इसके गाने सुनने वालों के कानों में रस घोलने का काम करेंगे साथ ही उन्हें थिरकने, झूमने और एक दूसरी दुनिया में खो जाने के लिए मजबूर कर देंगे. फिल्म में जहां एक बहुत ही खूबसूरत क़व्वाली है, वहीं आज के युवाओं की पसंद के मुताबिक थिरकने वाले गीत भी हैं. यानि इन गानों में हर उम्र और हर वर्ग के लोगों की पसंद का ख्याल रखा गया है. फिल्म के संगीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि फिल्मी गानों से गायब हो रही मैलोडी की एक बार फिर वापसी हो रही है. ***कभी तो सुन गौर से*** एक मैलोडीयस गीत है. गीत को दो प्रेमियों पर हिमाचल की हसीन वादियों में फिल्माया गया है. इस गाने को फिल्म की निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी ने अपनी आवाज दी है. उनकी मखमली आवाज ने इस गाने को और भी मधुर बना दिया है. इस फिल्म का संगीत शोर नहीं मचाता है, बल्कि इसकी धुनें जैसे शहद की तरह मिठास कानों में घोलकर कानों के रास्ते सीधे दिल में उतर जाती हैं, इस वजह से सुनने वाले उन्हें फिल्म के गीतों को गुनगुनाने पर मजबूर हो जाते हैं. इस फिल्म में मस्ती में सराबोर एक गीत भी है जिसे जवां दिलों की धड़कन और हर-दिल अजीज गायक मीका सिंह ने गया है. गाने के बोल हैं ***बाप होना पाप***. मस्ती में डूबे इस गीत में मीका सिंह एनिमेटेड अवतार में नज़र आ रहे हैं. यह एक हास्य-आधारित गीत है जो बेटों की हरकतों से परेशान एक बाप की परेशानियों और मुसीबतों को दर्शाता है. मीका सिंह नए जमाने के गायक है और युवाओं के बीच खासे लोकप्रिय हैं. लिहाज़ा उनका एनिमेटेड अवतार युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय हो रहा है. इस गाने में भी एक अनोखा प्रयोग किया गया है. यह गीत हिन्दी सिनेमा का पहला गीत है, जिसमें किसी गायक को एनिमेटेड रूप में दर्शाया गया है. मीका सिंह अपने हर गीत में मस्ती में झूमते-गाते नज़र आते है. इस गीत में मीका सिंह का कार्टून फिल्म के अन्य कलाकारों के कार्टून्स के साथ नाचता-गाता दिखाई देगा. फिल्म का टाइटल ट्रैक कुनाल गांजावाला और ऋतु पाठक ने गाया है.■

रीमिक्स वीडियो झूमने पर मजबूर करता है

फिल्म के पॉपुलर गानों का रीमिक्स वीडियो बनाने का आइडिया काफी अच्छा है, क्योंकि ऐसे गाने क्लबों में बेहद पसंद किए जाते हैं. ***होगया दिमाग़ का दही*** का टाइटल सांग ***दिमाग़का दही*** लोगों की जुबान पर चढ़ा हुआ है. इस गाने को कुणाल गांजावाला ने अपनी आवाज दी है जबकि निर्देशक फौज़िया अर्शी ने ही इसे संगीत से सजाया है. दिमाग का दही के रीमिक्स में कादर खान के साथ अन्य किरदार ओम पुरी, राजपाल यादव, संजय मिश्रा और रज्जाक खान कैरिकेचर रूप में नजर आ रहे हैं इस वजह से यह गीत रिलीज होते ही काफी पॉपुलर हो गया है. दिमाग का दही गाना बहुत ही ह्यूमरस है. इसके साथ 5 महान हास्य कलाकारों की वजह से यह फिल्म निश्चित तौर पर आपको गुदगुदायेगीय.■

चौथी दुनिया पहुंची *होगया दिमाग़ का दही* की टीम

फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** के प्रमोशन के लिए फिल्म की टीम चौथी दुनिया अख़बार के नोएडा स्थित दफ्तर पहुंची. इस दौरान फिल्म के कलाकारों ओमपुरी, राजपाल यादव और निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी ने चौथी दुनिया की संपादकीय टीम के साथ फिल्म से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर बात की. फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** के बारे में ओमपुरी ने कहा कि इस फिल्म को देखकर आप अपनी हंसी नहीं रोक पाएंगे. फिल्म में मसाला का कैरेक्टर निभा रहे राजपाल यादव ने कहा कि फिल्म में जबरदस्त कॉमेडी है और फिल्म में उनका रोल मसाले की तरह वैसा ही काम करेगा जैसा कि अमूमन खाने का स्वाद बढाने में करता है. फिल्म की निर्देशिका फ़ौज़िया अर्शी ने बताया कि सदी के पांच महान कॉमेडियन्स का एक साथ होना इस फिल्म की खासियत है. यह फिल्म 16 अक्टूबर को रिलीज होगी.■

आपको हंसाने आ रही हैं कोमल चौटाला

चित्राशी के मुताबिक कैमरे के आगे सिर्फ एक चीज नज़र आती है इसलिए उसके पीछे जो हम लोग तैयारी करते हैं वो किसी को नज़र नहीं आती. यह तैयारी आपसे बहुत कुछ लेती भी है और आपको बहुत कुछ देती भी है. फिल्म *होगया दिमाग़ का दही* में काम करने का ऑफर मिलने को चित्राशी अपने और फ़ौज़िया अर्शी के बीच के पुराने रिश्ते और फ़ौज़िया द्वारा उनके अभिनय को पसंद करने का परिणाम बताती हैं.

स्टेट लेवल हॉकी प्लेयर चित्राशी रावत ने बड़े परदे पर भी हॉकी खेलकर ही अपने बॉलीवुड करियर की शुरुआत की थी. चक दे इंडिया की कामयाबी के बाद चित्राशी की सफलता का पता इसी बात से चलता है की आज भी कई लोग चित्राशी को कोमल चोटाला के नाम से ही बुलाते हैं. चक दे के बाद फैशन, लक, तेरे नाल लव हो गया जैसी हिट फिल्में कर चुकी चित्राशी अब नज़र आने वाली हैं फिल्म *हो गया दिमाग का दही* में. यह कॉमेडी फिल्म चित्राशी केलिए काफी खास है, क्योंकि इस फिल्म के ज़रिये उन्हें अपने पसंदीदा कलाकारों क़ादर खान, ओम पुरी और राजपाल यादव के साथ काम करने का मौका मिला है.

चित्राशी कहती हैं कि मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि क़ादर खान जी के साथ मैं काम कर पाऊंगी, लेकिन फिल्म *होगया दिमाग़ का दही* में कादर खान और राजपाल यादव जैसे अपने प्रिय कलाकारों के साथ अभिनय करती नज़र आउंगी. हॉकी और अभिनय में से क्या मुश्किल लगता है, पूछे जाने पर चित्राशी कहती हैं कि हॉकी की तरह ही अभिनय में भी आपको अपने आप को मेंटली, फिजिकली और अन्य तरीकों से चैलेंज करना पड़ता है. चित्राशी के

मुताबिक कैमरे के आगे सिर्फ एक चीज नज़र आती है, इसलिए उसके पीछे जो हम लोग तैयारी करते हैं वो किसी को नज़र नहीं आती. यह तैयारी आपसे बहुत कुछ लेती भी है और आपको बहुत कुछ देती भी है. फिल्म *होगया दिमाग़ का दही* में फ़ौज़िया अर्शी द्वारा काम करने का ऑफर मिलने को चित्राशी अपने और फ़ौज़िया अर्शी के बीच के पुराने रिश्ते और फ़ौज़िया द्वारा उनके अभिनय को पसंद करने का परिणाम बताती हैं. उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया कि फ़ौजिया ने उनसे कहा था कि हमें आपकी एक्टिंग बहुत पसन्द है, और मैं जब भी कोई फिल्म बनाऊंगी तो आपको जरूर लूंगी. ■

यह दही मसालेदार है

चौथी दुनिया ब्यूरो

राजपाल यादव की फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** 16 अक्टूबर को रिलीज होने जा रही है. फिल्म में उनके किरदार का नाम मसाला है. इस किरदार से उन्होंने कॉमेडी का ऐसा तड़का लगाया है कि लोगों के पेट हंस-हंसकर फूल जाएंगे. राजपाल यादव की खासियत यह है कि वह हर किरदार के रंग में अपने को रंग लेते हैं. हर फिल्म में उनका किरदार कुछ अलग रंग लिए होता है, ऐसी ही आशा प्रशंसक फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** के मसाला से भी कर रहे हैं, जहां उनके अभिनय का जलवा एक बार फिर बने रहने की उमीद प्रशंसकों को को है. डेली मल्टीमीडिया लिमिटेड के बैनर तले बनी और फ़ौज़िया अर्शी द्वारा निर्देशिक यह फिल्म एक कॉमेडी ड्रामा है, फिल्म में राजपाल नौकर के किरदार में हैं. इस फिल्म में किसी तरह के द्विअर्थी संवाद नहीं है. इस फिल्म में उनके साथ अभिनय करने वाले अभिनता ओम पुरी का राजपाल यादव के संबंध में कहना है कि राजपाल यादव में गजब का सेंस ऑफ ह्यूमर है, वह कॉमेडी ही नहीं हर तरह के रोल बड़ी शिद्दत के साथ कर सकते हैं. उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव से निकलकर मायानगरी में अपनी पहचान बनाने वाले राजपाल आज-कल के युवाओं के लिए आदर्श हैं.

राजपाल ने अपने स्वाभाविक अभिनय प्रतिभा के बल पर दर्शकों के चहेते हास्य कलाकार केरूप में पहचान बनाई है. आलम तो यह है फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** केटीजर को यू-टयूब पर लाखों लोग देख चुकेंहै और इसे खूब पसंद भी कर रहे हैं. फिल्म में राजपाल यादव की मौजूदगी दर्शकों को सिनेमाघरों तक आकर्षित करने की क्षमता रखती है. दरअसल, राजपाल यादव उन अभिनेताओं में शुमार हैं जो हर रस की भूमिकाओं में स्वयं को ढालकर सिनेप्रेमियों की प्रशंसा बटोरने की क्षमता रखते हैं. ■

होगया दिमाग़ का दही

विदेशी मीडिया ने भी की तारीफ

शफीक आलम feedback@chauthiduniya.com

फिल्म होगया दिमाग़ का दही के रिलीज़ के दिन जैसे-जैसे नज़दीक आ रहे हैं फिल्म को लेकर सिनेमा प्रेमियों की दिलचस्पी भी बढ़ती जा रही है. यहां तक कि विदेशी मीडिया ने भी इस फिल्म को भरपूर कवरेज दिया है. पाकिस्तानी अखबारों ने इस फिल्म को दो तरह से कवर किया है. एक तो यह कि कादर खान इस फिल्म से वापसी कर रहे हैं और उनकी वापसी को लेकर सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के ट्वीट को भी अहमियत दे रहे हैं. दूसरी तफ फिल्म के गाने, फिल्म की रिलीज़ और फिल्म में इस्तेमाल तकनीक को भी उर्दू और अंग्रेजी मीडिया में अपनी विषय वास्तु बनाई है. कराची से छपने वाले उर्दू रोजनामा जंग ने क़दर ख़ान दस बरस बाद फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** में जलवागर होंगे के शीर्षक से एक खबर प्रकाशित की. इस रिपोर्ट में कहा गया कि नामवर सहाफी और फिल्म के निर्माता संतोष भारतीय की इस फिल्म में कादर खान केसाथ ओम पुरी, संजय मिश्रा, रज्जाक खान, अमिता नागिया अपनी अदाकारी का जौहर दिखाएंगे. पाकिस्तान की ही वेब टीवी मीडिया-1 ने फिल्म और कादर खान से सम्बंधित दो रिपोर्टें और उनके इंटरव्यू का एक हिस्सा प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने कहा कि जब वे बीमार हुए थे, तो बॉलीवुड के निर्माताओं और निर्देशकों ने उनसे मुंह मोड़ लिया था. इस खबर में इस बात का खास ज़िक्र किया गया है कि इस बॉलीवुड की बेरुखी की वजह से उन्हें काफी तकलीफ पहुंची थी. और ऐसे ही मुश्किल वक़्त में निर्देशक फ़ौज़िया अर्शी ने उनके साथ काम करने की अपनी ख्वाहिश ज़ाहिर की थी. एआरवाई न्यूज़ ने अमिताभ बच्चन केउस ट्वीट को भी प्रकाशित किया है जिसमें उन्होंने कादर खान की फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** के साथ वापसी का स्वागत किया था. उसी तरह डंका डॉट कॉम, गेट न्यूज़, आदि उर्दू अख़बारों और उनके न्यूज़ पोर्टल ने फिल्म और कादर खान को लेकर ख़बरें प्रकाशित कीं.

इस्लामाबाद, लाहौर, कराची और पेशावर से एक साथ छपने वाले अंग्रेजी अखबार दि एक्सप्रेस ट्रिब्यून ने भी फिल्म और कादर खान की वापसी को लेकर दो विस्तृत रिपोर्टें प्रकाशित की हैं. दि एक्सप्रेस ट्रिब्यून की दूसरी रिपोर्ट कादर खान के इंटरव्यू पर आधारित है. ***ओल्ड वाइज कादर*** हेडिंग के साथ ये बताया गया है कि कैसे फिल्म उद्योग में जबरदस्त बदलाव आया है.

अब एक नज़र खाड़ी देशों के अख़बारों पर भी डालते हैं. दुबई से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी अखबार गल्फ न्यूज़ ने ***होगया दिमाग़ का दही*** को एक साफ़-सुथरी कॉमेडी फिल्म करार देते हुए फिल्म में कादर खान की वापसी और अमिताभ बच्चन के ट्वीट को खबर बनाया है. डायरेक्टर फ़ौज़िया अर्शी के हवाले से कहा गया है कि आम तौर पर कॉमेडी फिल्मों में म्यूजिक पर ध्यान नहीं दिया जाता है, लेकिन इस फिल्म में रूह को छूने वाली क़व्वाली भी है और आम लोगों को पसंद आने वाले रोमांटिक गाने भी हैं. खाड़ी देशों के दूसरे अख़बारों एशियन लाइट अरबिया और टाइम्स ऑफ़ ओमान ने भी फिल्म पर रिपोर्टें प्रकाशित की हैं. एशियन लाइट अरबिया ने कादर खान के इंटरव्यू पर आधारित एक विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की है. टाइम्स ऑफ़ ओमान में दो एक्सक्लूसिव चीजें प्रकाशित हुई हैं. पहली, मशहूर प्लेबैक गायक मीका सिंह के ***बाप होना पाप*** गाने को मीका सिंह के एनिमेटेड कैरिकेचर पर फिल्माने की है और दूसरा कैलाश खेर का एक्सक्लूसिव इंटरव्यू है. मीका सिंह संबंधित खबर में बताया है कि वह पहले गायक बन गए हैं, जिनका कैरीकेचर किसी फीचर फिल्म में इस्तेमाल हुआ है. इस अख़बार में गीत ***मौला मौला*** के गायक कैलाश खेर का एक एक्सक्लूसिव इंटरव्यू भी छपा है जिसमें उन्होंने सूफी परम्परा से अपने सम्बन्ध को उजागर किया है. इस इंटरव्यू से एक और बात सामने आई जिसके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी होगी, वह है शाहबाज़ खान की जिन पर मौला मेरे मौला फिल्माई गई है. दरअसल, शाहबाज़ खान एक बहुत ही प्रतिष्ठित संगीत घराने से संबंध रखते हैं.■

आपको गुदगुदाने आ रहे हैं मिर्ज़ा किशन सिंह जोसेफ

ओम पुरी ने अपने शानदार व्यक्तित्व और बुलंद आवाज की बदौलत फिल्म जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई है. बॉलीवुड में अपनी अदाकारी का लोहा मनवाने के अलावा ओम पुरी ने कई हॉलीवुड फिल्मों में भी काम किया है. ओमपुरी अब फ़ौज़िया अर्शी द्धारा निर्देशित और डेली मल्टीमीडिया लिमिटिड के बैनर तले बनी कॉमेडी फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** से लोगों को हंसाने आ रहे हैं. इस फिल्म में ओम पुरी मिर्ज़ा किशन सिंह जोसेफ की भूमिका में नज़र आएंगे.

फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** में ओम पुरी एक ऐसे व्यक्ति का किरदार अदा कर रहे हैं जो चार धर्मों को मानता है. उनका नाम भी चार धर्मों के अनुसार मिर्ज़ा किशन सिंह जोसेफ है. फिल्म के उनके किरदार को काफी पसंद किया जा रहा है. फिल्म में उनकी वेशभूषा भी बेहद अनोखी है. वे खुद भी इस फिल्म को लेकर बेहद उत्साहित हैं और अपने किरदार को बेहद मज़ेदार बताते हैं. वह बताते हैं कि उन्हें मिर्जा किशन सिंह जोसेफ का किरदार अदा करते हुए बहुत मज़ा आया, उनका कहना है कि 16 अक्टूबर को जब यह फिल्म रिलीज होगी और दर्शक मिर्ज़ा किशन सिंह जोसेफ से रू-ब-रू होंगे तो हक़ीकत में उनके दिमाग का दही हो जायेगा.

सन 1981 में फिल्म आक्रोश के लिए ओम पुरी को सर्वश्रेष्ठ सह-अभिनेता के फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया और उसके बाद पुरस्कारों का सिलसिला मानो चलता चला गया. इतना ही नहीं सन 2009 में लंबे समय से फिल्म जगत में अपने शानदार अभिनय के लिये उन्हें फिल्म फेयर पुरस्कार(लाइफ टाइम अचीवमेंट) से भी नवाज़ा गया.■

सबके दिमाग़ का दही करने आ रहे हैं बंटी चोपड़ा, अमित जे और भावना चौहान

बंटी चोपड़ा के मुताबिक, फिल्म *होगया दिमाग़ का दही* एक अच्छी कॉमेडी फिल्म है और बॉलीवुड में काफी अरसे से इस तरह की कोई फिल्म नहीं आयी है. फिल्म में बंटी इंदर का किरदार निभा रहे हैं, जो एक सीधा-साधा लड़का है और अपनी ही धुन में मस्त रहता है जिसे अपने भाइयों से बेहद लगाव है. फिल्म के दूसरे कलाकार अमित जे हैरी के किरदार में नज़र आएंगे, जो एक अच्छा इंसान है, साथ ही एक दिल फेंक आशिक भी है.

नेहा कराद

बंटी चोपड़ा, अमित जे और भावना चौहान, अपनी अदाकारी से फिल्म जगत में धूम मचाने आ रहे हैं. वे ***होगया दिमाग़ का दही*** से फिल्मों में डेब्यू करने जा रहे हैं. तीनों कलाकार अपनी फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** को लेकर बेहद उत्साहित हैं. बंटी चोपड़ा के मुताबिक़ यह एक अच्छी कॉमेडी फिल्म है. बॉलीवुड में काफी अरसे से इस तरह की कोई फिल्म नहीं आयी है. फिल्म में बंटी इंदर का किरदार निभा रहे हैं, जो एक सीधा-सादा लड़का है, जो अपनी धुन में अपनी ही धुन में मस्त रहता है. साथ ही जिसे अपने भाइयों से बेहद लगाव है. फिल्म के दूसरे कलाकार अमित जे हैरी के किरदार में नज़र आएगें, जो एक अच्छा इंसान होने के साथ-साथ एक दिल फेंक आशिक भी है. भावना बताती हैं कि फिल्म में वह मुख्य हिरोइन है. यूं तो फिल्म के सभी डॉयलॉग लोगों को खासे पसंद आ रहे हैं, लेकिन आपका बोनट खुला हैं डॉयलॉग आजकल खूब चर्चा में है. डायलॉग के बारे में पूछे जाने पर फिल्म की दूसरी हिरोइन नेहा बताती हैं कि इस बात के लिये उन्हे लड़कियां मार देने वाली हैं, क्योंकि इस फिल्म में उन्होंने कुछ ऐसे क्रॉप टॉप्स पहने हैं जो आजकल ट्रेंड में हैं. अमूमन क्रॉप टॉप्स में लड़कियों की मिडरीफ दिखाई देती है. कुछ ऐसी मोटी लड़कियां होती हैं जिनके क्रॉप टॉप्स में पेट दिखता है. मेरा किरदार भी कुछ इसी तरह हैं. किरदार में मैं एक मोटी सी लड़की हूं.

> **फिल्म के संगीत के विषय में इन कलाकारों ने बताया कि अमूमन कॉमेडी फिल्मों में लोग संगीत पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं, क्योंकि वह मानते हैं कि कॉमेडी फिल्म में संगीत का क्या काम? लेकिन बंटी के मुताबिक, ऐसा नहीं है, क्योंकि हिन्दुस्तान में बिना गीत के कोई फिल्म बनती ही नहीं है.**

फिल्म की सूफी क़व्वाली ***मौला मेरे मौला*** और रोमांटिक गीत ***कभी तो सुन गौर से तू*** नेहा का पसंदीदा गीत बन गये हैं. फिल्म के संगीत के बारे में बंटी का कहना है कि फिल्म में जितने भी गाने हैं वे सभी उन्हें बेहद पसंद हैं. खासकर मीका सिंह का गाया गीत ***बाप होना पाप*** उन्हें बेहद पसंद है. फिल्म के संगीत के विषय में इन कलाकारों ने बताया कि अमूमन कॉमेडी फिल्मों में लोग संगीत पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं, क्योंकि वह मानते हैं कि कॉमेडी फिल्म में संगीत का क्या काम? लेकिन बंटी के मुताबिक, ऐसा नहीं है, क्योंकि हिन्दुस्तान में बिना गीत के कोई फिल्म बनती ही नहीं है. फिल्म के सभी नए कलाकारों को पहली बार कॉमेडी के बादशाह क़ादर ख़ान, ओम पुरी, संजय मिश्रा, राजपाल यादव और रज्जाक खान के साथ काम करने का मौका मिला है. फिल्म ***होगया है दिमाग़ का दही*** 16 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज़ हो रही है.■

मिस शिमला भी करेंगी दिमाग़ का दही

धारावाहिक तारा की शीना और आने वाला पल की पाखी को भला कौन भूल सकता है. अपने दौर की ग्लैमरस अभिनेत्री कही जाने वाली और मिस शिमला रह चुकीं अमिता नागिया फिल्म होगया दिमाग़ का दही में नज़र आएंगी. फिल्म में अमिता ओमपुरी की बहन की भूमिका में हैं. इसके साथ ही वह फिल्म की दोनों हिरोइनों की बुआ के किरदार में भी नज़र आएंगी. अमिता के मुताबिक फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** में सभी किरदारों ने एक टीम की तरह काम किया है, इस वजह से फिल्म में एक नैचुरल और ग्रुप कॉमेडी देखी जा सकती है. वैसे तो अमिता नागिया प्रियदर्शन के बैनर तले बनी कई फिल्मों में कॉमेडी के किंग कहे जाने वाले क़ादर खान और राजपाल यादव के साथ काम कर चुकी हैं, लेकिन संजय मिश्रा के साथ यह उनकी पहली फिल्म है. अमिता बताती हैं कि फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** में क़ादर ख़ान, राजपाल यादव और संजय मिश्रा के साथ काम करना उनके लिए शानदार रहा. फिल्म का गाना बाप होना पाप है पर अमिता नागिया बताती हैं कि असल में ऐसा कुछ नहीं है. दरअसल यह गाना फिल्म पर दर्शाया गया है, क्योंकि फिल्म में तीन नालायक बेटे हैं और इन तीनों नालायक बेटों की वजह से बाप होना पाप हो जाता है. ■

एक ऐसा आशिक जिसका काम है तलाक़ दिलवाना

> "संजय मिश्रा को फिल्म होगया दिमाग़ का दही की कहानी बहुत पसंद आई. वह बताते हैं कि स्क्रिप्ट सुनते वक्त उनके ज़हन में सत्तर के दशक की कॉमेडी फिल्मों की यादें ताजा हो गईं. अब संजय के प्रशंसकों को उनकी इस नई फिल्म का इंतज़ार है. फिल्म होगया दिमाग़ का दही 16 अक्टूबर को रिलीज हो रही है."

चौथी दुनिया ब्यूरो
feedback@chauthiduniya.com

संजय मिश्रा बॉलीवुड के एक ऐसे हास्य कलाकार हैं जिनकी फिल्म में उपस्थिति मात्र से फिल्म का टेस्ट बदल जाता है. अपने चुलबुले अंदाज में संजय मिश्रा एक बार फिर लोगों को हंसाने आ रहे हैं. कॉमेडी फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** में उनके किरदार का नाम आशिक अली है, जो कि पेशे से वकील हैं. वह अपना परिचय में डाइवोर्स स्पेशलिस्ट, एलएलबी फ्रॉम मार्शल आर्ट बताता है. किरदार का नाम है आशिक अली और काम है तलाक करवाना. इस तरह के विरोधाभास के बीच उनका किरदार बेहद प्रभावशाली नज़र आता है. इससे पहले भी संजय मिश्रा ने कई फिल्मों में वकील का किरदार अदा किया है. फिल्म भूतनाथ रिटर्न में वह एक ऐसे वकील के रूप में नज़र आए हैं, जो एक भूत(अमिताभ बच्चन) की चुनाव लड़ने में मदद करता है. फिल्म भूतनाथ का वकील हकीकत से थोड़ा दूर था, लेकिन संजय ने उस फिल्म में अपनी भूमिका के साथ पूरा न्याय किया था. फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** का आशिक अली वकीलों की उस जमात का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो पैसे लेकर कोई भी और कैसा भी, काम कराने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं.

संजय मिश्रा को फिल्म ***हो गया दिमाग़ का दही*** की कहानी बहुत पसंद आई. वह बताते हैं कि स्क्रिप्ट सुनते वक्त उनके ज़हन में सत्तर के दशक की कॉमेडी फिल्मों की यादें ताजा हो गईं. अब संजय के प्रशंसकों को उनकी इस नई फिल्म का इंतजार है. फिल्म ***होगया दिमाग़ का दही*** 16 अक्टूबर को रिलीज हो रही है. फिल्म के टीज़र को देखकर तो लगता है कि संजय मिश्रा की ओमपुरी और राजपाल यादव जैसे कॉमेडियन के साथ जुगलबंदी, निश्चित तौर पर दर्शकों को हंसा-हंसा कर लोट-पोट कर देगी. ■

होगया दिमाग़ का दही QUIZ के सवाल नंबर-2 के विजेताओं के नाम

1. सुषमा, सुपौल (बिहार)
2. सुनील कुमार, सीतामढ़ी (बिहार)

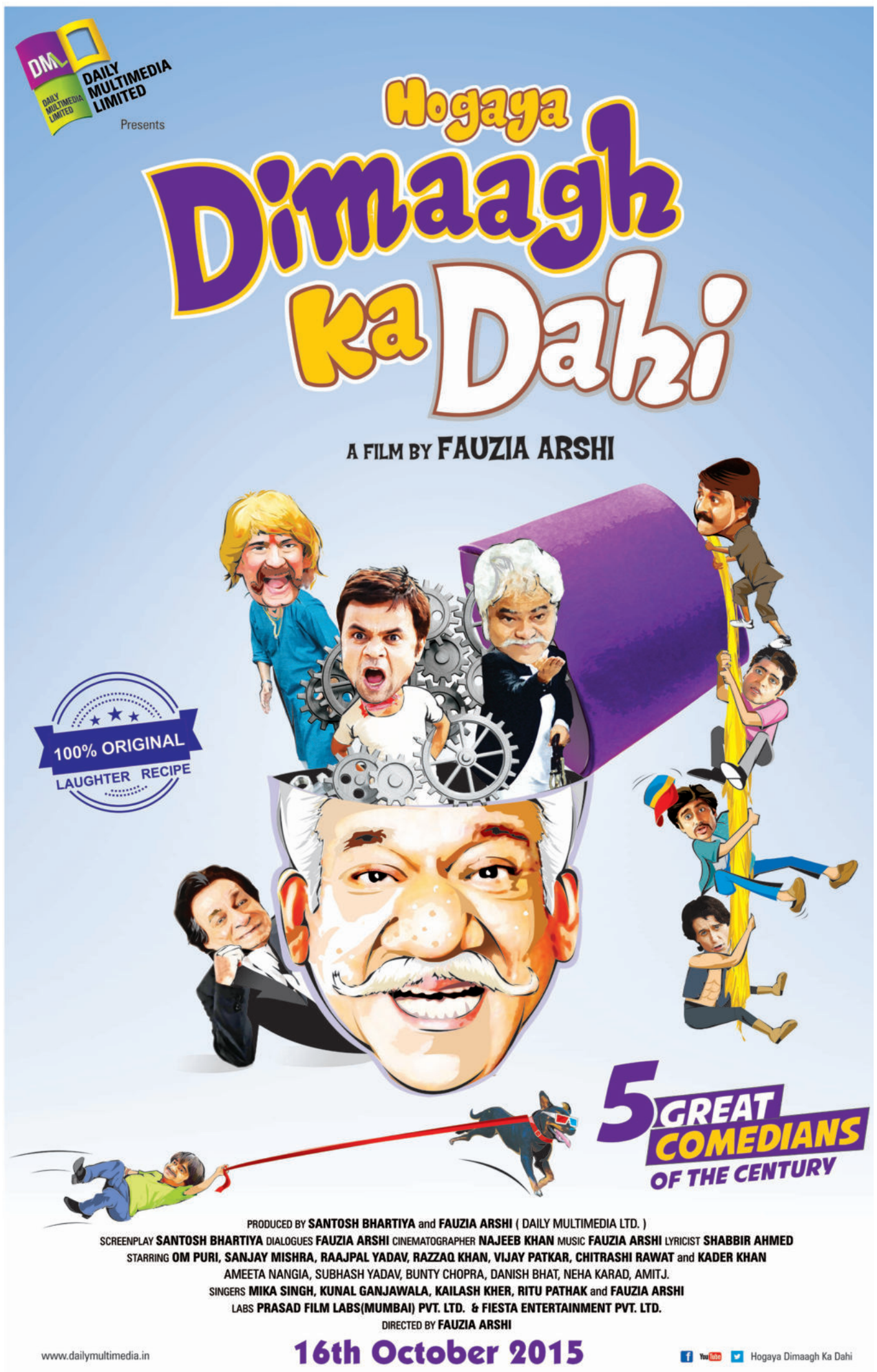

चौथी दुनिया

हिंदी का पहला साप्ताहिक अख़बार

बिहार-झारखंड

12 अक्टूबर-18 अक्टूबर, 2015 Postal Regn. No. DL (ND)-11/6139/2015-17, RNI No. DELHI/2009/30467

अमित शाह का मिशन 123

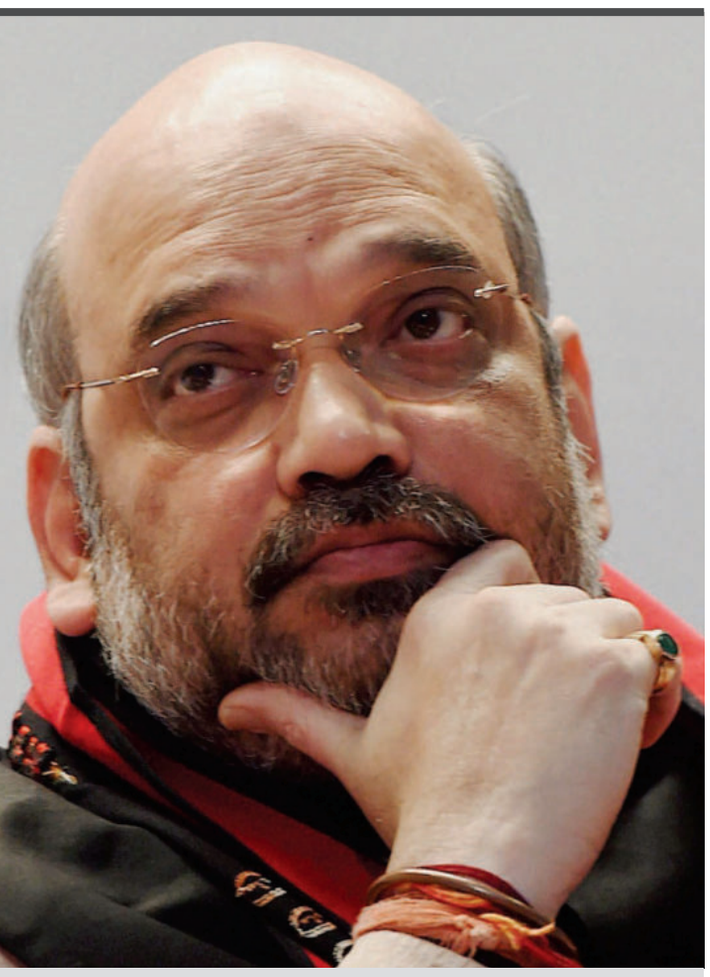

बीते लोकसभा चुनाव में यूपी में अपने मैनेजमेंट और कुशल प्रशासन क्षमता के जरिये पार्टी को 71 सीटें दिलवाने वाले भाजपा अध्यक्ष आगामी विधानसभा चुनाव में भी पार्टी को अकेले ही बहुमत दिलाने के मिशन पर जुटे हुए हैं. वे ज़मीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं से रिपोर्ट ले रहे हैं जिससे पार्टी के चुनावी मिशन को कामयाब बनाया जा सके. सहयोगी दलों के साथ मिलकर उन्होंने 185 प्लस का लक्ष्य निर्धारित किया है. चुनावी तैयारियों के मद्देनज़र हमने अमित शाह की तैयारियों का जायजा लिया. अमित शाह की रणनीति और चुनाव की तैयारियों का खुलासा करती यह रिपोर्ट...

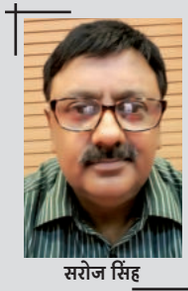

सरोज सिंह

बिहार में हाईवोल्टेज चुनाव प्रचार के बीच अब मतदान का दौर शुरू हो गया है. वैसे तो हर दल और उसके सभी प्रमुख नेताओं की धड़कनें तेज़ हो गई हैं पर सूबे में मौजूद एक शख्स ऐसा भी है जो पूरे इत्मिनान से चुनाव प्रचार से लेकर मतदान की छोटी सी छोटी घटनाओं को बहुत ही बारीक नज़रों से निहार रहा है और होटल के अपने कमरे में अपने चुनिंदा साथियों को मुस्कुराते हुए कह रहा है कि मिशन 123 हर हाल में सफल होगा. जीत के भरोसे से भरे इस शख्स का नाम है अमित शाह. आखिर क्या है अमित शाह के भरोसे का राज? आखिर किस आधार पर अमित शाह कर रहे हैं अकेले अपने दम पर बहुमत लाने का दावा? आखिर अपने साथियों और कार्यकर्ताओं को वह कौन सी दवा पिला रहे हैं जो इस बात की गारंटी दे रही है कि जीत का तमगा भाजपा के सिर ही बंधेगा. अमित शाह को नजदीक से जानने वाले बताते हैं

कि वह अपने मिशन को लेकर बहुत ही क्लीयर रहते हैं. अगर और मगर जैसे शब्दों से उन्हें बेहद नफ़रत है. वह अपना टारगेट तय करते हैं और उसको पाने के लिए एक सटीक रणनीति बनाते हैं. रणनीति बनाते वक्त अमित शाह ज़मीनी फीडबैक को काफी अहमियत देते हैं. अमित शाह की ख़ासियत यह है कि ज़मीनी फीडबैक को लेकर वह बेहद संजीदा रहते हैं और कई माध्यमों से ज़मीनी फीडबैक का संग्रह करते हैं. तीन-चार माध्यमों के फीडबैक का गहन अध्ययन कर फिर एक कॉमन राय पर पहुंचने का काम किया जाता है. फिर शुरू होता है फीडबैक के आधार पर अपने भरोसेमंद साथियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देने का काम. अमित शाह की ख़ासियत यह है कि एक बार ज़िम्मेदारी दे देने के बाद वह उनके कामों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं लेकिन दिए गए कामों का फॉलोअप बहुत ही सख्ती से किया जाता है ताकि काम में कोई ढीलाई नहीं आ सके.

अमित शाह के चुनावी प्रबंधन को नज़दीक से जानने वाले बताते हैं कि एक बार रणनीति तय हो जाने के बाद अमित शाह उसमें सामान्यतः कोई फेरबदल नहीं करते. अगर दिक्क़त आ रही है तो इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि उसी रणनीति के तहत समस्या का समाधान किया जाए. जहां तक बिहार विधानसभा चुनाव की बात है तो लोकसभा चुनाव के बाद से ही अमित शाह ने बिहार में अपनी गोटियां बिछानी शुरू कर दी थीं. भूपेंद्र यादव के कंधे पर जमीनी काम का जिम्मा सौंपा गया. अमित शाह बिहार से आए लोकसभा के चुनाव परिणामों से इतने उत्साहित थे कि उन्होंने उसी समय तय कर लिया था कि सहयोगी दलों से मदद लेंगे और उनका पूरा सम्मान भी होगा लेकिन कोशिश यह होगी कि भाजपा अपने बलबूते बहुमत का आंकड़ा यानि की 123 की संख्या पा ले. उसी दिन से अमित शाह मिशन 123 पर लगे हैं और सहयोगी दलों के साथ मिलकर उन्होंने 185 प्लस का नारा दिया है. अपने मिशन और नारे को अमली जामा पहनाने के लिए अमित शाह खुद पार्टी के अंदर और विरोधियों की हर-छोटी बड़ी बात पर नज़र रख रहे हैं. कार्यकर्ता से लेकर नेता और जनसंघ के ज़माने से भाजपा की सहोदर रहे संगठनों के साथ समन्वय बना रहे हैं. तमाम तरह के कार्यों के तार एक-एक जिम्मेदार से जोड़कर रोजाना फीडबैक लेना उनकी दिनचर्या का अहम हिस्सा बन चुका है. जमीनी स्तर से हर बात रोज उन तक पहुंच रही है. जानकारी के मुताबिक अमित शाह ने स्टेप-टू-स्टेप प्रोग्राम बना रखे हैं. इसी के इर्द-गिर्द उनकी दिनभर की गतिविधियां संचालित होती हैं. बहुत कम बोलकर वे साफ-साफ निर्देश देते हैं. शाह फेजवाइज मंडल से लेकर जिलास्तर तक के प्रमुख कार्यकर्ताओं से पार्टी और प्रत्याशी की तैयारी तथा वस्तुस्थिति का फीडबैक खुद ले रहे हैं. इससे संबंधित निर्देश भी दे रहे हैं. दूसरे स्तर पर आरएसएस, विद्या भारती, संस्कार भारती, किसान, वनवासी केन्द्रों से भी क्षेत्र का हाल-चाल रोजाना ले रहे हैं. शाह ने फोर टायर व्यवस्था बना रखी है. मंडल स्तर के कार्यकर्ता क्षेत्रीय प्रभारियों को, क्षेत्रीय प्रभारी चुनाव प्रभारी अनंत कुमार और संगठन प्रभारी भूपेन्द्र यादव को हर दिन दो बार रिपोर्ट दे रहे हैं. अनंत और भूपेन्द्र रोजाना अमित शाह तक एक-एक फीडबैक पहुंचा रहे हैं और उसके मुताबिक रणनीति बन रही है.

- शेष पृष्ठ संख्या 18 पर

अमित शाह की ख़ासियत यह है कि एक बार ज़िम्मेदारी दे देने के बाद वह कामों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं लेकिन दिए गए कामों का फॉलोअप बहुत ही सख्ती से किया जाता है ताकि काम में कोई ढीलाई नहीं आ सके.

वायदों में भाजपा आगे

नीतीश निश्चय बनाम भाजपा दृष्टिपत्र

महागठबंधन के मुफ्त वाई-फाई के जवाब में भाजपा 50 हजार छात्रों को लैपटॉप देगी. नीतीश ने 2016 तक सबको बिजली देने को कहा तो भाजपा ने 24 घंटे बिजली का वादा किया.

युवा

नीतीश निश्चय : 12वीं के बाद स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड. इससे चार लाख रुपये तक बैंक कर्ज मिल सकेगा. इस पर ब्याज में तीन प्रतिशत सब्सिडी. सभी विश्वविद्यालय और कॉलेजों में छात्रों को मुफ्त वाईफाई की सुविधा. स्वरोजगार के लिए 500 करोड़ रुपये का वेंचर कैपिटल फंड.	भाजपा दृष्टिपत्र : मैट्रिक व इंटर पास पचास हजार मेधावी छात्रों को लैपटॉप, शिक्षा कर्ज की गारंटी, सभी ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड. प्रत्येक परिवार के एक व्यक्ति को ई-शिक्षा. कमजोर वर्गों के छात्र, छात्राओं को तकनीकी व प्रोफेशनल शिक्षा के लिए (राज्य के अंदर या बाहर) विशेष छात्रवृत्ति. प्रमुख शहरों में प्रतिवर्ष रोजगार मेला.

महिला

सभी तरह की सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35 फीसदी आरक्षण दिया जाएगा.	मैट्रिक एवं इंटर पास पांच हजार बालिकाओं को स्कूटी, उच्च शिक्षा के लिए सस्ते कर्ज.

पाईप जलापूर्ति

सभी को स्वच्छ पेयजल पहुंचाया जाएगा.	2022 तक सभी घर वहीनों को शुद्ध पेयजल.

हर घर बिजली

वर्ष 2016 तक हरेक बसावट तक बिजली पहुंचा दी जाएगी.	कृषि कार्यों के लिए अलग फीडर, 12 घंटे बिजली, सभी सरकारी भवनों पर सौर ऊर्जा संयंत्र.

पक्की सड़कें

सभी गांव, टोलों और बसावटों की सड़कों का पक्कीकरण. गांवों की गलियों और नाली का निर्माण भी.	हर गाँव 12 मासी सड़कों से जोड़े जाएँगे, प्रखंडों को जिला मुख्यालयों से जोड़ने के लिए टू लेन सड़क.

एक नज़र

चुनावी हलचल

हम का मिलन समारोह

हाजीपुर के बागमली में स्थित मिलन मंदिर परिसर में हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा (हम) के द्वारा आयोजित समारोह में जदयू के सैकडों बागी कार्यकर्ता ने हम की सदस्यता ग्रहण की. पूर्व मंत्री और हम के वरिष्ठ नेता वृषण पटेल ने पार्टी में शामिल होने वाले कार्यकर्ताओं का स्वागत किया, पार्टी की सदस्यता भी दी. हम के जिलाध्यक्ष प्रो. संजय कुमार सिंह सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत किया, अध्यक्ष ने राजग के सभी उम्मीदवारों को विजय बनने के लिए अभियान चलाने की बात भी कही इस अवसर पर वैशाली जिले के कई जदयू के महत्वपूर्ण नेता हम में शामिल हुए, जिस में मुख्य तौर पर पूर्व अध्यक्ष प्रो. रामानंद गुप्ता, ओम प्रकाश कुशवाहा, देवेन्द्र तिवारी, हाजीपुर प्रखंड अध्यक्ष राकेश कुमार गुप्ता, जिला सचिव नामेश्वर प्रसाद गुप्ता हैं. जिस तरह से जदयू के कार्यकर्ता ने हम का दामन थामा है. इससे महागठबंधन की वैशाली सीट मुश्किल में आ सकती है.

– नसीम रब्बानी

शायर को किया सम्मानित

सीतामढ़ी जिला मुख्यालय स्थित गीता भवन में हिंदी दिवस पखवारा समापन समारोह की पूर्व संध्या पर विचार गोष्ठी सह कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. ई. सचिन्द्र कुमार हीरा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम का संचालन गीतकार गीतेश ने किया. मौके पर वक्ताओं ने वर्तमान परिवेश में हिंदी की दिशा एवं दशा पर विस्तार से प्रकाश डाला. कार्यक्रम के दौरान हिंदी व उर्दू की विशेष सेवा के लिए चर्चित कवि एवं शायर तौहिद अश्क को सम्मानित किया गया. कवि सम्मेलन में डॉ. आनंद प्रकाश वर्मा, पृथ्वीराज राणा, जितेंद्र झा आजाद, रामकृष्ण वेदांती, मनमोहन शरण, अधिवक्ता अशोक कुमार सिंह, सुरेश वर्मा, रामबाबू सिंह, शफी अजीज, सत्येंद्र मिश्र, दीपक कुमार, डॉ शत्रुघ्न यादव, गुफरान राशिद, सुरेशलाल कर्ण, कौशल कुमार झा, शैलेंद्र खिरहर समेत अन्य ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत की.

– ब्रजेश

मतदाता जागरूकता अभियान जोरो पर

सीतामढी जिले में असन्न विधानसभा चुनाव को लेकर मतदाता जागरूकता अभियान जोरो पर है. मतदान का प्रतिशत बढ़ाने को लेकर प्रशासनिक स्तर पर हर संभव प्रयास किये जा रहे है. समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में जिला पदाधिकारी सह जिला निर्वाचन पदाधिकारी राजीव रौशन, डीडीसी ए रहमान, स्वीप कोषांग के नोड़ल पदाधिकारी समरेंद्र नारायण वर्मा समेत अन्य ने जिले के सभी पदाधिकारियों को कई आवश्यक निर्देश दिए है. विभिन्न संगठनों द्वारा प्रतिदिन मतदाता जागरूकता रैली निकाल कर लोगों से आगामी 1 नवंबर को हर हाल में मतदान करने की अपील की जा रही है. उधर मीडिया फॉर बोर्डर हारमोनी के कार्यक्रम समन्वयक सर्वधीर मिश्र ने मतदान प्रतिशत बढ़ाने में बेहतर कार्य करने वालों को चुनाव बाद सम्मानित करने की घोषणा की है.

व्यंग्यकार गीतेश को मिला सम्मान

पिछले 20 सितंबर को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. विवेकानंद शैक्षणिक, भारत सांस्कृतिक एवं क्रीडा संस्थान ,योगमाया मानवोत्थान ट्रस्ट एवं केरल एजुकेशन एण्ड सोशल बेलफेयर सोसायटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सीतामढ़ी जिले के चर्चित हास्य – व्यंग्यकार गीतकार गीतेश को लाला लाजपत राय राष्ट्रीय शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया. छतीसगढ़ के साहित्यकार किसान दीवान एवं क्रीडा संस्थान के केंद्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमार सिंह देव ने भी गीतेश की पुस्तक हंसी अप गम डाइन के लिए सम्मानित किया. सम्मानित गीतकार को डॉ. टीएन सिंह, डॉ. नरेंद्र शाही, डॉ. निर्मल गुप्ता, डॉ लता गुप्ता, डॉ. शिव शंकर महतो, राम शरण अग्रवाल, भूपेंद्र सिंह, डॉ. प्रो राज कुमार गुप्ता समेत अन्य ने बधाई दी है.■

–विकास

केयर योर किडनी

जेनरल सर्जरी के कुशल चिकित्सक डॉ. गौतम अग्रवाल जो कि भागपुर में कार्यरत हैं ने आज किडनी में स्टोन के विषय पर बातचीत की इस चर्चा के दौरान मैने जानना चाहा कि जेनरल सर्जरी के डॉक्टर क्या करते हैं तो उन्होंने पाठकों के लिए बताया कि चीर–फाड़, हाइड्रोशील, हर्निया, बाबसीर, स्टोन व छोटे ऑपरेशन से संबंधित इलाज करते हैं। े बारे में उन्होंने बताया कि इसकी पहचान दोनों साईड के कोंख / लेफ्ट एवं राइट लूम्बर में दर्द होता है साथ–साथ पेशाब में जलन, कभी कभी तो खून भी आता है। स्टोन बनने के कारण पर विचार करें तो पता चलता है कि शरीर में जो खाते हैं, खाने के बाद वह पचता है उसके बाद कई अवशिष्ट पदार्थों से बाहर निकलता है जैसे पसीना, पेशाब, पखाना इत्यादि और सही से नहीं निकल पाने के कारण एवं किडनी जो कि शरीर में फिल्टर का काम करती है सही रूप से वर्क नहीं कर पाती है, इन्फेक्शन भी हो जाता है, इस तरह स्टोन बनने के चांसेज बढ़ जाते हैं। यदि आप इस तरह के लक्षण महसूस करते हैं तो तुरन्त डॉक्टर से सम्पर्क करें।

इस संदर्भ में डॉ. अग्रवाल ने बताया कि इसका बेहतर इलाज है ज्यादा से ज्यादा पानी पियें खासकर गर्मी में 5 लीटर और जाड़े में कम से कम 4लीटर डॉ अग्रवाल का कहना है कि कूर्थी का दाल छोटे स्टोन को गलाकर निकाल देते हैं इसलिए इसका सेवन करते रहें। यदि शुरूआती दौर में इलाज करते हैं तो बिना ऑपरेशन के मेडिसीन से ही ठीक हो जाता है। बिमारी होने पर खाने में चिकेन, मटन, मछली, शकरकन्द,काजू, चाकलेट, पालक नहीं लें। फल शब्जी, अंडा, तेल, इत्यादि को खाने में शामिल अवश्य रूप से करें।■ भारती

NOKSIRA Pharma Pvt.Ltd. A Division of AriskonPharma

मोतिहारी

बागियों के चुनाव मैदान में उतरने से त्रिकोणीय हो रही लड़ाई

मीना द्विवेदी | नीता शर्मा | रामपुकार सिन्हा | महेश्वर सिंह | श्याम बिहारी प्रसाद | मनोज यादव | अवनीश सिंह | बब्लू देव

राकेश कुमार
feedback@chauthiduniya.com

विधान सभा चुनाव के लिए विभिन्न दलों द्वारा प्रत्याशियों के नाम की घोषणा के बाद सभी दलों में घमासान मचा हुआ है. भाजपा, जदयू, राजद सहित रालोसपा के विक्षुब्ध दावेदार बगावत का नारा बुलंद कर रहे हैं. सबसे ज्यादा नाराजगी जदयू में दिख रही है. जदयू के गोविन्दगंज से वर्तमान विधायक मीना द्विवेदी का टिकट कट गया है. वहीं नरकटिया विधान सभा के जदयू विधायक श्याम बिहारी प्रसाद का टिकट भी काट दिया गया है. वहीं पूर्व विधायक और मोतिहारी लोक सभा के प्रत्याशी दबंग नेता अवनीश कुमार सिंह को भी जदयू ने टिकट नहीं दिया. नाराज जदयू नेताओं की फेहरिस्त बहुत लम्बी है. रक्सौल से दावेदार जदयू के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रमोद सिन्हा, सुगौली से टिकट के दावेदार ई. शशि भूषण सिंह, गोविन्दगंज से रतन सिंह, हरसिद्धि के महादलित नेता अवधेश राम और मनोज पासवान जैसे कद्दावर नेता बगावत के तेवर में हैं. वहीं राजद के हरसिद्धि से टिकट के दावेदार सुरेन्द्र कुमार चन्द्रा उर्फ सतीश पासवान, चिरैया से दावेदार राजद जिलाध्यक्ष बच्चा यादव भी टिकट से वंचित रह गये. राजद के विधायक और पार्टी के स्तंभ कहलाने वाले स्वर्गीय यमुना यादव के पुत्र मनोज यादव को भी टिकट नहीं मिल सका. राजद के विक्षुब्धों की संख्या भी कम नहीं है. कमोवेश यही स्थिति भाजपा के भीतर भी है. भाजपा नेत्री नीता शर्मा केसरिया से, भाजपा नेता डॉ लालबाबू प्रसाद नरकटिया से, भाजपा प्रवक्ता राजा ठाकुर चिरैया से, रवि शंकर पाण्डेय गोविन्दगंज से, अरुण गुप्ता मौर्य पीपरा से प्रमुख दावेदार थे, लेकिन किसी को टिकट नहीं मिला. पार्टी से नाराज नेत्री नीता शर्मा केसरिया से चुनाव लड़ने की तैयारी में हैं. यहां भाजपा के नाराज नेताओं में एक अलग बात देखने को मिल रही है. ज्यादातर लोग नाराज तो हैं पर खुलकर सामने नहीं आ रहे हैं. यह गुबार चुनाव में पार्टी के लिए ज्यादा हानिकारक हो सकता है. वहीं रालोसपा नेता रामपुकार सिन्हा ने बागी तेवर अपनाते हुए ढाका विधान सभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप मे चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी हैं. श्री सिन्हा को रालोसपा के अध्यक्ष उपेन्द्र कुशवाहा का चम्पारण में दाहिना हाथ कहा जाता था. श्री सिन्हा भी टिकट को लेकर आश्वस्त थे. बकौल श्री सिन्हा अगर पूर्वी चम्पारण में रालोसपा कोई सीट लेगी तो ढाका. ढाका से मेरा टिकट निश्चित है. लेकिन रालोसपा ने नरकटिया सीट लिया, जहां से जिलाध्यक्ष संत प्रसाद कुशवाहा को टिकट दिया गया है. हालांकि ढाका से निवर्तमान निर्दलीय विधायक पवन जायसवाल भाजपा में शामिल हो गये हैं, लेकिन यहां तर्क दिया जा रहा था कि वह सीट भाजपा की सिटिंग नहीं है इसलिए इस सीट पर भाजपा की दावेदारी नहीं बनती है. अब रामपुकार सिन्हा के निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा के बाद इस सीट पर त्रिकोणीय कांटे की टक्कर होने की संभावना बन गई है. क्योंकि 2010 के चुनाव में पवन जायसवाल ने मात्र 1649 मतों की बढ़त से जदयू प्रत्याशी फैसल रहमान से चुनाव जीते थे. ढाका विस क्षेत्र में सबसे ज्यादा कुशवाहा और मुस्लिम मतदाताओ की संख्या है. मुस्लिम मतों की संख्या लगभग 66,980 और कुशवाहा की संख्या 66,320 है. रामपुकार सिन्हा कुशवाहा जाति से हैं और जमीनी नेता माने जाते है. फैसल रहमान भी इस चुनाव में राजद के टिकट पर मैदान में हैं. मुस्लिमों के साथ उन्हें राजद के परंपरागत यादव मत का सहयोग मिलेगा. यह सीट निकालना सभी के लिए लोहे के चने चबाने जैसा होगा.

इधर दबंग नेता माने जाने वाले अवनीश कुमार सिंह को टिकट नहीं दिये जाने को सभी अन्याय मान रहे हैं. राजनीतिक धुरंधरों के अनुसार अवनीश सिंह ने जदयू के लिए बड़ी कुर्बानी दी है. विगत लोक सभा चुनाव में जदयू के पास कोई बड़ा नेता नहीं था जो भाजपा के कद्दावर नेता राधामोहन सिंह को टक्कर दे सके. मोदी लहर के बावजूद अवनीश सिंह ने भाजपा से किनारा करते हुए जदयू की सदस्यता ली और चिरैया विधायक पद से त्यागपत्र देकर लोस चुनाव लड़ा. भाजपा से पांच बार विधायक रहने के बाद भी मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिलने से वे भाजपा से भी नाराज चल रहे थे. ऐसी स्थिति में भी जदयू द्वारा अवनीश सिंह को टिकट नहीं देने से नाराजगी स्वाभाविक है. जबकि अवनीश सिंह 1990, 1995, 2005 फरवरी, 2005 अक्टूबर में ढाका और परिसीमन के बाद 2010 में चिरैया का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं. टिकट बंटवारे से नाराज अवनीश कुमार सिंह ने 22 सितम्बर को समाजवादी दल का दामन थाम लिया है. पटना में प्रदेश अध्यक्ष रामचन्द्र यादव और वरिष्ठ नेता रघुनाथ झा ने श्री सिंह का मिलन समारोह में स्वागत करते हुए उन्हें चिरैया से सपा उम्मीदवार घोषित कर दिया. इसके बाद चिरैया सीट पर भी दिलचस्प मुकाबला होना तय है. श्री सिंह के त्यागपत्र देने के बाद चिरैया के मध्यावधि चुनाव में राजद के लक्ष्मी नारायण यादव ने भाजपा के लालबाबू गुप्ता को बहुत कम मतों के अन्तर से हराया था. अब अवनीश सिंह के चुनाव मैदान में उतरने के बाद चिरैया सीट कांटे की त्रिकोणीय लड़ाई में फंसा नजर आती है. बागियों के आ जाने से चुनावी समीकरण ही बदलता नजर आ रहा है. कमोवेश यही स्थिति गोविन्दगंज विधान सभा चुनाव का भी होगा. लोजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व विधायक महेश्वर सिंह को भी भाजपा ने नजर अंदाज कर दिया. जबकि टिकट मिलने की शर्त पर महेश्वर सिंह ने लोजपा को छोड़कर भाजपा की सदस्यता ली थी. वादाखिलाफी से नाराज श्री सिंह गोविन्दगंज से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव मैदान में उतरने की रणनीति बनाने में जुटे हुए हैं. गोविन्दगंज विस के पहाड़पुर प्रखण्ड में राजपूतों की खासी संख्या है. श्री सिंह के चुनाव मैदान में उतरने से यहां भी चुनाव दिलचस्प होगा. गोविन्दगंज से राजग गठबंधन के घटक दल लोजपा ने राजू तिवारी को मैदान में उतारा है. वहीं महागठबंधन की ओर से कांग्रेस के ब्रजेश पाण्डेय मैदान में हैं. यहां लड़ाई आमने सामने की थी, लेकिन महेश्वर सिंह के आने के बाद गोविन्दगंज का चुनावी जंग जोरदार हो जायेगा. इधर जदयू की निवर्तमान विधायक मीना द्विवेदी के लोक अधिकार पार्टी में शामिल होने की खबर है. वे भी चुनाव मैदान में उतरेंगी. ऐसे में किसी के जीत का दावा बेमानी है. ज्ञात हो कि ब्रजेश पाण्डेय एनडीटीवी के विख्यात पत्रकार रवीश के भाई हैं.

> **राजद के विधायक और पार्टी के स्तंभ कहलाने वाले स्वर्गीय यमुना यादव के पुत्र मनोज यादव को भी टिकट नहीं मिल सका. राजद के विक्षुब्धों की संख्या भी कम नहीं है. कमोवेश यही स्थिति भाजपा के भीतर भी है. भाजपा नेत्री नीता शर्मा केसरिया से, भाजपा नेता डॉ लालबाबू प्रसाद नरकटिया से, भाजपा प्रवक्ता राजा ठाकुर चिरैया से, रवि शंकर पाण्डेय गोविन्दगंज से, अरुण गुप्ता मौर्य पीपरा से प्रमुख दावेदार थे, लेकिन किसी को टिकट नहीं मिला. पार्टी से नाराज नेत्री नीता शर्मा केसरिया से चुनाव लड़ने की तैयारी में हैं. यहां भाजपा के नाराज नेताओं में एक अलग बात देखने को मिल रही है. ज्यादातर लोग नाराज तो हैं पर खुलकर सामने नहीं आ रहे हैं.**

इधर केसरिया से जदयू के दावेदार पूर्व विधायक राजेश कुमार रौशन उर्फ बबलू देव को भी टिकट नहीं मिला है. महागठबंधन के केसरिया में सबसे सशक्त उम्मीदवार माने जाने वाले श्री देव अपने टिकट को लेकर निश्चिंत थे. श्री देव 2005 में राजद के टिकट पर इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं. 2010 में इन्होने क्षेत्र परिवर्तन कर लिया और मधुबन से चुनाव लड़ा. अब देखना है कि श्री देव का बगावत क्या रंग लाता है. केसरिया में महागठबंधन के राजद उम्मीदवार डॉ. राजेश कुमार हैं. वहीं राजग के भाजपा ने यहां से पूर्व जिलाध्यक्ष राजेन्द्र गुप्ता को उतारा है. इनपर बाहरी होने का आरोप विरोधी लगा रहे हैं. श्री गुप्ता हरसिद्धि के रहने वाले हैं. वही विक्षुब्ध नीता शर्मा भी चुनाव लड़ने का ऐलान कर चुकी हैं. नीता शर्मा केसरिया के दो बार विधायक रह चुके स्वर्गीय राय हरीशंकर शर्मा की बहु और भाजपा नेता स्वर्गीय शिवा रंजन शर्मा की पत्नी हैं. जिले के किसान नेता के रूप में विख्यात राय हरीशंकर शर्मा कृषक संघ, जन संघ, कांग्रेस और भाजपा से जुड़े रहे. नीता शर्मा को राजनीतिक विरासत मिला है. वे संग्रामपुर की जिला पार्षद भी रह चुकी हैं. नीता शर्मा चुनाव मैदान में आकर दोनो गठबंधन के प्रत्याशियों के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं. जातीय आधार पर भी केसरिया में उच्च वर्ग से किसी भी पार्टी ने उम्मीदवार नहीं दिया है, ऐसे में उच्च वर्ग के साथ ही क्षेत्र के किसानों का सहयोग उन्हें मिल सकता है. वहीं महिला उम्मीदवार होने के कारण आधी आबादी उन्हें तरजीह देगी. ऐसे में केसरिया में भी संघर्ष जबरदस्त होना तय है.

इधर जदयू के नरकटिया विधायक श्याम बिहारी प्रसाद भी बागी तेवर में हैं. इन्होंने क्षेत्र परिवर्तन करते हुए रक्सौल से निर्दलीय चुनाव लड़ने की तैयारी की है. श्री प्रसाद 2005 से 2010 तक आदापुर विस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया. 2010 में परिसीमन के बाद इस क्षेत्र का नाम नरकटिया विधान सभा हो गया. 2010 के चुनाव में भी इन्होंने नरकटिया से जीत हासिल की. जदयू द्वारा टिकट नहीं देने के बाद इन्होंने यह फैसला लिया है. वहीं जदयू के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रमोद कुमार सिन्हा ने भी रक्सौल से ही निर्दलीय चुनाव लड़ने का एलान किया है. राजद ने रक्सौल से सुरेश यादव को खड़ा किया है. युवा नेता सुरेश यादव कड़ा संघर्ष देते दिखते हैं. विक्षुब्धों में ई शशि भूषण सिंह भी चुनाव लड़ने का ऐलान कर चुके हैं. वे सुगौली विधान सभा से चुनाव लड़ेंगे. ज्ञात हो कि श्री सिंह ने विगत वर्ष लाखों खर्च कर सुगौली में नीतीश कुमार की सभा का आयोजन कर अपना शक्ति प्रदर्शन किया था. वहीं सुगौली विस के वरीय नेता अर्जुन भारतीय ने नाराजगी में पार्टी की सदस्यता तक छोड़ दी है. कल्याणपुर विधान सभा का चुनाव भी फंसता नजर आ रहा है. क्षेत्र के पूर्व विधायक और यादवों के नेता रहे यमुना यादव के पुत्र मनोज यादव को भी राजद का टिकट नहीं मिला. इससे क्षेत्र के यादवों में खासा आक्रोश है. यादव समाज इसे वादाखिलाफी मान रहा है. विगत वर्ष स्वर्गीय यमुना यादव के प्रतिमा का अनावरण राजद सुप्रीमो लालू यादव ने किया था. इस मौके पर उन्होंने मनोज यादव के गांव जमुनिया के मंच से क्षेत्र का प्रतिनिधित्व मनोज यादव को देने की बात कही थी. मनोज भी अपने टिकट को लेकर आश्वस्त थे. यमुना यादव के साथ लालू यादव के रहे मधुर संबंध और मनोज यादव के क्षेत्र में प्रभाव को देखते हुए माना जा रहा था कि मनोज यादव का टिकट सुनिश्चित है, लेकिन मनोज को भी निराशा हाथ लगी. ज्ञात हो कि मनोज यादव 2010 में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में कल्याणपुर से चुनाव लड़े थे. जिसमें वे 25,761 मत लेकर दूसरे स्थान पर थे. अब श्री यादव तीसरे मोर्चा के घटक दल समाजवादी दल के टिकट पर कल्याणपुर से चुनाव लड़ेंगे. उन्होंने जनसम्पर्क भी शुरू कर दिया है.

मोतिहारी विधान सभा के चुनाव को भी बागी उम्मीदवार जटिल बना सकते हैं. यहां टिकट को लेकर राजद में खूब उठा पटक हुई है. महागठबंधन के राजद से वार्ड पार्षद मणि भूषण श्रीवास्तव का नाम घोषित हुआ और एक सप्ताह के बवेला के बाद लोस के पूर्व प्रत्याशी विनोद श्रीवास्तव को टिकट दे दिया गया. इससे कायस्थ जाति का एक धड़ा महागठबंधन से नाराज है. यहां से राजद के एक और सशक्त उम्मीदवार ई मनोज गुप्ता भी टिकट से वंचित रह गये. वे भी बागी रुख अख्तियार किये हुए हैं.

ये तो बानगी हैं. इस चुनाव में तीसरे मोर्चे के छह दलों सहित हिन्दू महासभा, गरीब जनता दल आदी दर्जनों पार्टियों से प्रत्याशी चुनाव मैदान में नजर आयेंगे. समय के साथ स्थितियां स्पष्ट होंगी, लेकिन इतना तो तय है कि बागियों के चुनाव मैदान में उतरने के बाद सभी दलों के प्रत्याशियों का गला सूखने लगा है और चुनावी जंग त्रिकोणीय होने के साथ साथ कांटे की टक्कर में फंसता जा रहा है.■

feedback@chauthiduniya.com

पृष्ठ 17 का शेष

अमित शाह का मिशन 123

भाजपा अध्यक्ष ने टॉप–टू–बॉटम सभी नेताओं को सख्त हिदायद की है कि कोई खेमेबाज़ी न दिखे. अपनी चाबी टाइट करते हुए उन्होंने कहा है कि कोई इच्छा पूरी न हुई हो, तो अपनी इच्छाओं को भूल कर एकजुट होकर पार्टी को मजबूत कीजिए. पार्टी के हर निर्णय को हर हाल में मानिए. उन्होंने टास्क दिया है कि जहां कहीं भी कोई झोल दिखे, मनमुटाव रहे, उसे स्थानीय नेता ठीक करें. ठीक न हुआ तो कार्रवाई के लिए तैयार रहिए. केन्द्रीय और प्रदेश के नेताओं के कार्यक्रम तय करने से लेकर कौन, किस दिन, किस क्षेत्र में जाएगा यह भी राष्ट्रीय अध्यक्ष के पूरे संज्ञान में तय हो रहा है. अमित शाह ने बिहार मिशन से जुड़े नेताओं से कह दिया है कि एक हजार हार्डकोर कार्यकर्ताओं की टीम हर विधानसभा क्षेत्र में होनी चाहिए. एक हज़ार कार्यकर्ताओं की यह टीम क्षेत्र में पहले से लगे कार्यकर्ताओं के अलावा होगी.

कहा गया है कि दूसरे राज्यों की टीमों से इस मामले में मदद ली जा सकती है. गाजर खाने के शौकीन अमित शाह शूगर फ्री डेजर्ट लेते हैं. सुबह आठ से साढ़े आठ बजे नाश्ता और साढ़े नौ से पहले रात का खाना अनिवार्य रूप से खा लेते हैं. सुबह–दोपहर हो या शाम वे सलाद में गाजर जरूर लेते हैं. नाश्ते में गाजर पराठा और इडली, दोपहर के भोजन में सलाद और ब्रेड रोल तो रात के खाने में चपाती, दाल और सब्जी उनकी पसंद है. अमित शाह ने लालू यादव को निशाने पर ले रखा है और अपने सहयोगियों से भी कह दिया है कि ज्यादा फोकस लालू प्रसाद पर ही रखना है. नीतीश को दूसरे तरीके से जवाब दिया जा रहा है. नीतीश निश्चय के जवाब में भाजपा ने जो विजन डोक्यूमेंट जारी किया है वह सभी मामले में बीस साबित हो रह है. भाजपा ने बड़े ही ताम झाम से इसे जारी किया और अब इसका प्रचार काफी जोरशोर से हो रहा है. अमित शाह से जुड़े लोग बताते हैं कि राष्ट्रीय अध्यक्ष अपने फीडबैक क्लास में सहयोगियों से कह रहे हैं कि अगर नरेंद्र मोदी की सरकार 20 साल दिल्ली में रखनी है तो हर हाल में मिशन 123 पूरा होना चाहिए. अपने साथियों की पीठ भी वह थपथपा रहे हैं कि अभी तक हमलोग सही दिशा में काम कर रहे हैं और अगर यही सिलसिला जारी रहा तो मिशन 123 का सपना हर हाल में पूरा होगा.■

feedback@chauthiduniya.com

चिकित्सकों की नज़र से

डॉक्टरों को चाहिए अमन चैन और शांति

बिहार में इसी साल के नवंबर में नई सरकार का गठन होना तय है. हर बार की तरह इस बार भी प्रत्येक मतदाता नई उम्मीदों और नए उत्साह के साथ मतदान करेगा. लेकिन, उन्हें सहज यकीन नहीं है कि आगामी सरकार भी उनकी उम्मीदों और अपेक्षाओं पर शत-प्रतिशत खरी उतरेगी. बिहार के जाने-माने डॉक्टरों से चौथी दुनिया के संवाददाता रजनीकांत पाण्डेय ने आगामी सरकार के प्राथमिकताओं पर बात की, पेश है कुछ अंश

डॉ. अजय | डॉ. अशरफ | डॉ. मनीषा | डॉ. प्रमोद | डॉ. सुमिता

[illegible]

> **केंद्र में नरेन्द्र मोदी की काम पर उन्होंने बताया कि अच्छा काम कर रहे हैं लेकिन बिहार के विकास कार्य के लिए स्पेशल कुछ नहीं दिया है. मोदी को बिहार को विशेष राज्य का दर्जा और आम जनता की आवश्यकता पर भी ध्यान देना चाहिए. बिहार में आने वाली नई सरकार को सुझाव पर उन्होंने कहा कि, सरकार जनता की सोचे, अच्छी नीति बननी चाहिए जो जहां है वहां अच्छा महसूस कर सके. कंसलटेंट डायटीशियन डॉ. सुमिता कुमारी का मानना है कि नीतीश कुमार बिहार के बेहतर मुख्यमंत्री हैं. लेकिन लालू प्रसाद के साथ आने से उन्हें भय है कि राजधानी की सुरक्षा और विकास कार्य खतरे में पड़ सकते हैं.**

feedback@chauthiduniya.com

बक्सर

महागठबंधन में घमासान एनडीए के लिए वरदान

अजीत चौधरी | ददन यादव | दाउद अली | मुन्ना तिवारी | प्रदीप दुबे | राम बिहारी सिंह

जयमंगल पांडेय
feedback@chauthiduniya.com

[illegible]

> **उठापटक व नाराजगी का लाभ उठाने के लिये हर प्रत्याशी सक्रिय है. भाजपा ने बक्सर की विधायिका तथा पूर्व मंत्री प्रो. सुखदा पांडेय का पत्ता साफ कर भाजयुमो के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप दुबे पर दांव लगाया है. प्रो. पांडेय सार्वजनिक तौर पर कुछ विरोध तो नहीं करती हैं लेकिन भीतर से मर्माहत तथा नाराज हैं. नये चेहरे के रूप में दुबे को भाजपा प्रत्याशी बनाये जाने से युवा वर्ग में खासा उत्साह है.**

बेलदौर व परबत्ता विधानसभा

भितरघात की आशंका से इंकार नहीं

मनेन्द्र /गीता
feedback@chauthiduniya.com

[illegible]

खगड़िया

रामानुज चौधरी | आरएन सिंह

सुहैली मेहता | हेराम चौधरी

पन्नालाल सिंह पटेल | विजय कुमार

[illegible]

सीतामढ़ी - शिवहर

चुनावी समीकरण पर मंडरा रहा राजनीतिक संकट

रून्नीसैदपुर विधानसभा सीट पर इस बार भारी घमासान मचा है. इस सीट पर पिछले दो चुनाव में जदयू का कब्जा रहा है. भूमिहार बिरादरी की गुड्डी देवी जदयू की ओर से बतौर विधायक रही है. अबकी बार विधान परिषद चुनाव में इनके पति राजेश चौधरी स्थानीय निकाय चुनाव में बतौर जदयू प्रत्याशी चुनाव लड़ने वाले थे, परंतु पार्टी नेतृत्व ने अंत समय में सीट पर राजद के दिलीप राय को मैदान में उतारा. इससे आहत होने के बाद भी गुड्डी ने जदयू का दामन नही छोड़ा. जब विधानसभा टिकट बंटवारा का समय आया तो अंत समय में जदयू ने इस सीट को राजद के पाले में डाल कर यादव बिरादरी की पूर्व विधायक स्व. भोला राय की पुत्र वधु मंगीता देवी को टिकट दे दिया.

अजित कुमार झा | अमित कुमार टुन्ना | डॉ. रामचंद्र पूर्वे | गायत्री यादव | गुड्डी देवी
लवली आनंद | मंगीता देवी | डॉ रंजू गीता | सुनील कुमार पिंटू | सुनीता सिंह चौहान

वाल्मीकि कुमार

बिहार विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है. सीतामढ़ी व शिवहर जिला में चौथे चरण में आगामी चुनाव 1 नवंबर को है. निष्पक्ष व शांतिपूर्ण चुनाव के साथ मतदान प्रतिशत को बढ़ाने को लेकर प्रशासनिक स्तर पर हर संभव प्रयास शुरू किये जा चुके है. राजनीतिक स्तर पर तकरीबन सभी पार्टियों ने अपने-अपने दल के प्रत्याशियों के नामों की घोषणा भी कर दी है. अब नामांकन को लेकर सभी अपने-अपने समर्थकों का दरबाजा वंदना शुरू कर दिया है. जाति-पार्टी के साथ ही विकास की दुहाई देकर सभी प्रत्याशी मतदाताओं को अपने पक्ष में करने का प्रयास भी शुरू कर दिया है. अबकी बार की चुनावी फिजा में करीब-करीब सभी दलों के कार्यकर्ताओं के बीच टिकट बंटवारा को लेकर पार्टी नेता के प्रति असंतोष का भाव साफ नजर आ रहा है. पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं की उपेक्षा कर आयातीत धन कुबेरों को टिकट दिये जाने का मामला चर्चा का केंद्र बना है. अगर चुनावी चौपालों पर चल रही चर्चाओं पर यकीन करे तो अबकी बार चुनाव को लेकर किसी भी पार्टी के कार्यकर्ताओं में खास उत्साह नहीं हैं. अगर कोई चुनाव प्रचार में नजर आ रहा है, तो इसे संबंधित प्रत्याशी का करीबी अथवा कथित वोटों का दलाल के रूप में ही देखा जा रहा है. अब सवाल यह उठता है कि क्या चंद तथाकथित वोटों का दलाल के बूते प्रत्याशी चुनावी किला फतह कर पायेंगे? अब तक चुप्पी साध रखा मतदाता को अपने पक्ष में प्रत्याशी कर पाने में सफल होंगे?

सीतामढ़ी के 8 व शिवहर जिले के 1 कुल 9 विधानसभा सीटों पर अगर नजर डाली जाये तो अबकी बार चुनावी समीकरण कुछ अजीब सा लग रहा है. सीतामढ़ी जिले के सीतामढ़ी विधानसभा क्षेत्र की चर्चा करे तो इस सीट पर पिछले चार चुनाव से भाजपा के सुनील कुमार पिंटू बतौर विधायक निर्वाचित होते रहे है. वैश्य बिरादरी के पिंटू को अबकी बार पुन: पार्टी ने प्रत्याशी बनाया है. जबकि महागठबंधन से कुछ साल पूर्व पार्टी में प्रवेश पाये कुशवाहा बिरादरी के सुनील कुशवाहा को बतौर राजद प्रत्याशी चुनावी मैदान में उतारा गया है. इस सीट को लेकर फिलहाल बड़ी बहस जारी है. चर्चा है कि महागठबंधन ने इस सीट को खुद ही संकट में डालने का काम किया है. चुनावी रणनीतिकारों की माने तो भाजपा को शिकस्त देने को लेकर महागठबंधन को किसी वैश्य को ही मैदान में लाना चाहिए था. जबकि राजद खेमा में अंदर ही अंदर पार्टी के पुराने चेहरा को नजर अंदाज किये जाने को लेकर रोष व्याप्त है.

रीगा विधानसभा सीट पर पिछले चुनाव में भाजपा के मोतीलाल प्रसाद ने बाजी मारी थी. अबकी बार पुन: वैश्य बिरादरी के मोतीलाल प्रसाद को ही पार्टी ने प्रत्याशी बनाया है. जबकि पिछली बार दूसरे नंबर पर रहे राजपूत बिरादरी के कांग्रेस प्रत्याशी अमित कुमार टुन्ना को महागठबंधन ने चुनाव मैदान में उतारा है. चर्चा है कि इस सीट पर भी महागठबंधन से चूक हुई है. अगर कोई वैश्य अथवा यादव प्रत्याशी को महागठबंधन से लाया गया होता तो संभवत: लडाई का अंदाज ही कुछ और होता. बेलसंड विधानसभा सीट पर पिछले चुनाव में जदयू ने कब्जा जमाया था. सुनीता सिंह चौहान बतौर विधायक निर्वाचित हुई थी. अबकी बार भी पार्टी ने राजपूत बिरादरी की सुनीता सिंह को बरकरार रखा है. इस सीट पर इस बार बाहरी बनाम स्थानीय प्रत्याशी का मामला गरमा रहा है. एनडीए से इस सीट पर पहले भाजपा के पूर्व विधान पार्षद वैद्यनाथ प्रसाद व फिर लोजपा की पूर्व विधायक नगीना देवी को प्रत्याशी बनाये जाने की चर्चा जोरों पर रही. परंतु टिकट बंटवारा के क्रम में इस सीट से लोजपा ने अल्पसंख्यक बिरादरी के मो. नसीर अहमद को बतौर प्रत्याशी मैदान में उतारा है. इसको लेकर वैश्य व यादव बिरादरी में हलचल शुरू है. चर्चा है कि तीसरा मोर्चा से इस सीट पर वैश्य बिरादरी के पूर्व राजद विधायक संजय गुप्ता बतौर सपा प्रत्याशी अपना भाग्य अजमाने को तैयार है.

रून्नीसैदपुर विधानसभा सीट पर इस बार भारी घमासान मचा है. इस सीट पर पिछले दो चुनाव में जदयू का कब्जा रहा है. भूमिहार बिरादरी की गुडडी देवी जदयू की ओर से बतौर विधायक रही है. अबकी बार विधान परिषद चुनाव में इनके पति राजेश चौधरी स्थानीय निकाय चुनाव में बतौर जदयू प्रत्याशी चुनाव लड़ने वाले थे, परंतु पार्टी नेतृत्व ने अंत समय में सीट पर राजद के दिलीप राय को मैदान में उतारा. इससे आहत होने के बाद भी गुडडी ने जदयू का दामन नही छोड़ा. जब विधानसभा टिकट बंटवारा का समय आया तो अंत समय में जदयू ने इस सीट को राजद के पाले में डाल कर यादव बिरादरी की पूर्व विधायक स्व. भोला राय की पुत्र बधू मंगीता देवी को टिकट दे दिया. अब गुडडी का संयम साथ नहीं दिया और यह जदयू का दामन छोड़ कर तीसरा मोर्चा के समाजवादी पार्टी से जा मिली. इस चुनाव में बतौर सपा प्रत्याशी चुनावी समर में भाग्य आजमा रही है. जबकि एनडीए ने रालोसपा की टिकट पर पंकज कुमार मिश्रा को बतौर प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतारा है. हालात यह है कि इस सीट पर राजद व जदयू दोनों ही दल के कार्यकर्ताओं में रोष की चिंगारी सुलग रही है.

यादव, वैश्य, अल्पसंख्यक व सवर्ण बाहुल्य सुरसंड सीट का भी नजारा इस बार अलग दिख रहा है. पिछले चुनाव में इस सीट से जदयू की टिकट पर शाहिद अली खान बतौर विधायक निर्वाचित होकर सूबे की सरकार में मंत्री बने थे. परंतु सूबे बिहार की राजनीति में आई उथल-पुथल के बीच शाहिद ने जदयू को छोड़ पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी की पार्टी को अपना लिया. अबकी बार वे हम पार्टी की टिकट पर सुरसंड से चुनावी समर में है. जबकि महागठबंधन से पिछले लोकसभा चुनाव में सपा की टिकट पर चुनाव लड़ चुके सैयद अबु दोजाना को बतौर राजद प्रत्याशी मैदान में उतारा गया है. चर्चा है कि इस सीट के साथ भी महागठबंधन ने नाइंसाफी की है. अब तीसरा मोर्चा से चर्चा है कि पूर्व सांसद नवल किशोर राय का पुत्र गुंजेश कुमार नवीन बतौर सपा प्रत्याशी चुनाव मैदान में पहली बार भाग्य आजमाने वाले है. चर्चा यह भी चल रही है कि पूर्व राजद विधायक जयनंदन प्रसाद यादव भी अबकी बार पार्टी की मनमानी के खिलाफ निर्दलीय चुनावी मैदान में ताल ठोकने को तैयार है.

परिहार विधानसभा सीट से पिछली बार भाजपा की टिकट पर यादव बिरादरी के राम नरेश प्रसाद यादव बतौर विधायक निर्वाचित हुए थे. सीतामढ़ी समाहरणालय 1998 गोलीकांड मामले में सजा होने के बाद उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है. अबकी बार भाजपा ने बतौर एनडीए प्रत्याशी उनकी पत्नी गायत्री देवी को चुनावी समर में उतारा है.

परिहार विधानसभा सीट से पिछली बार भाजपा की टिकट पर यादव बिरादरी के राम नरेश प्रसाद यादव बतौर विधायक निर्वाचित हुए थे. सीतामढ़ी समाहरणालय 1998 गोलीकांड मामले में सजा होने के बाद उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है. अबकी बार भाजपा ने बतौर एनडीए प्रत्याशी उनकी पत्नी गायत्री देवी को चुनावी समर में उतारा है. जबकि महागठबंधन से राजद की टिकट पर प्रदेश राजद अध्यक्ष डॉ. रामचंद्र पूर्वे अपना भाग्य आजमाने वाले है. यादव, मुस्लिम व वैश्य बाहुल्य इस सीट से यादव बिरादरी के महेंद्र सिंह यादव की पत्नी सरिता यादव के अलावा अल्पसंख्यक बिरादरी के मो. शम्स शाहनवाज समेत कई अन्य चुनाव मैदान में आने को आतुर है. बथनाहा सुरक्षित सीट पर पिछले चुनाव में भाजपा की टिकट पर दिनकर राम बतौर विधायक निर्वाचित हुए थे. अबकी बार महागठबंधन से इस सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी सुरेंद्र राम को उतारा गया है. नतीजा है कि इस क्षेत्र में जदयू व राजद कार्यकर्ताओं के बीच रोष व्याप्त है. बाजपटटी विधानसभा सीट पर पिछले चुनाव में जदयू का कब्जा रहा. इस सीट से यादव बिरादरी की डॉ. रंजूगीता बतौर विधायक निर्वाचित होकर सूबे की सरकार में मंत्री भी बनी. अबकी बार पुन: इस सीट से बतौर महागठबंधन राजद प्रत्याशी उन्हे उतारा गया है. एनडीए ने रालोसपा की टिकट पर वैश्य बिरादरी की रेखा कुमारी गुप्ता को चुनावी समर में उतारा है. अबकी बार डॉ. रंजूगीता की चुनावी घेराबंदी को लेकर इनके बिरादरी के नानपुर प्रखंड प्रमुख रिंकू देवी का पति मुकेश कुमार यादव चुनावी समर में जी जान से लगे है. चर्चा है कि मुकेश चुनाव मैदान में भी दो-दो हाथ करने की तैयारी में है.

यहां तक शिवहर विधानसभा सीट का सवाल है तो अबकी बार इस सीट पर भी घमासान की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है. पिछले चुनाव में इस सीट से बतौर जदयू प्रत्याशी रहे अल्पसंख्यक बिरादरी के मो. सरफुददीन ने जीत हासिल की थी. अबकी बार पुन: महागठबंधन ने बतौर जदयू प्रत्याशी उन्हें चुनावी समर में उतारा है. जबकि एनडीए से हम की टिकट पर राजपूत बिरादरी की पूर्व सांसद लवली आनंद को चुनावी समर में उतारा गया है. टिकट बंटवारा से पूर्व भाजपा की टिकट पर पूर्व विधायक ठाकुर रत्नाकर राणा के उम्मीदवारी की चर्चा जोरो पर रही. परंतु टिकट बंटवारा के समय उन्हें बेटिकट कर दिया गया. अब बतौर निर्दलीय प्रत्याशी रत्नाकर चुनाव मैदान में आने का मन बना चुके है. उधर राजद से तौबा कर चुके पूर्व सांसद रघुनाथ झा का पुत्र सह पूर्व राजद विधायक अजित कुमार झा तीसरा मोर्चा से बतौर सपा प्रत्याशी चुनावी समर में आ रहे है.

कुल मिला कर देखा जाये तो शिवहर व सीतामढ़ी के अधिकांश सीटों पर महागठबंधन एवं एनडीए ने ऐसे प्रत्याशियों को थोपने का काम किया है, जिनका दूर तक क्षेत्र से कोई लेना देना नहीं रहा है. चर्चा है कि टिकट बंटवारा में पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं की भावना की अनदेखी कर व्यापक स्तर पर मनमानी की गई है. महानगरों में अकूत संपत्ति अर्जित करने वालों को आखिर पार्टी नेताओं ने समर्पित कार्यकर्ताओं की श्रेणी में कैसे लाकर खड़ा कर दिया यह चर्चा का केंद्र बना है. चर्चा यह भी है कि जब आयातीत प्रत्याशी चुनावी मौसम में पैसे के बल पर पार्टी नेताओं को अपने पक्ष में कर रहे है, तो फिर किसी भी दल का समर्पित कार्यकर्ता का आखरी रास्ता क्या होगा ? अब देखना है कि बेटिकट खेमा से उत्पन्न होने वाले संभावित राजनीतिक संकट से पार्टी नेता कैसे उबर पाते है. ■

feedback@chauthiduniya.com

जहानाबाद विधानसभा क्षेत्र

शिवसेना ने बिगाड़ा सभी का खेल

सुनील सौरभ

कभी नरसंहार व नक्सली हिंसा के लिए चर्चित जहानाबाद आज बेरोजगारी, उद्योग-धंधे का अभाव तथा शहरी क्षेत्र में बढ़ती नागरिक समस्याओं से त्रस्त हैं. शहरी क्षेत्र में बढ़ती आबादी और बिना प्लानिंग के बनते मकानों ने भी जहानाबाद को अनेक तरह की समस्याओं से घेर रखा हैं. ऐसे में यहां से बिहार विधानसभा चुनाव लड़ रहे सभी प्रत्याशियों को लोगों के तरह-तरह की बातों से जुझना पड़ रहा हैं. लोग हर प्रत्याशी से वोट देने के पूर्व पक्का वादा करा लेना चाहते है. ऐसे जहानाबाद विधानसभा क्षेत्र 1990 से एक तरह से राजद का परंपरागत सीट माना जाता रहा है. लेकिन पिछले दो चुनावों से भाजपाई सहयोग से जदयू के अभिराम शर्मा जीतते रहे है. लेकिन इस बाद अभिराम शर्मा का टिकट काट दिया और महागठबंधन में यह सीट राजद के खाते में आ गई. वहीं एनडीए ने यह सीट रालोसपा के जिम्मे छोड़ दिया हैं. वाम दलों के मोर्चा माले को दे दिया गया हैं. शिवसेना के अपने प्रत्याशी खड़े कर जहानाबाद विधानसभा क्षेत्र का समीकरण को गड़बड़ा दिया है. राजद ने पुराने प्रत्याशी मुन्द्रिका सिंह यादव को खड़ा किया हैं, तो रालोसपा के प्रवीण कुमार को, माले से संतोष केशरी खड़ा हैं. शिवसेना ने जहानाबाद के तमाम सामाजिक सरोंकारों से जुड़े और पत्रकारिता से तालुल्क रखने वाले संजय कुमार को अपना प्रत्याशी बनाया हैं. भूमिहार बहुल इस विधानसभा क्षेत्र में वैश्य मतदाताओं की भी अच्छी खासी संख्या हैं. 22148 मतदाता वाले इस विधानसभा क्षेत्र में हिंदूवादी सोच रखने वाले मतदाताओं को शिवसेना के प्रत्याशी संजय कुमार अपने हिसाब से गोलबंद करने में लगे हैं. नक्सली घटनाओं से परेशान जहानाबाद के लोग वाममोर्चा के नाम पर परेशान हो जाते है. वहीं राजद के काल को भी यहां के मतदाता याद कर भी सहम जाते है. ऐसे में पिछलें डेढ़ दशक से जहानाबाद में शांति का अलख जगाने वाले शिव सेना प्रत्याशी संजय कुमार शहरी क्षेत्र के लोगो की पहली पंसद बने हुए हैं. क्योंकि रालोसपा प्रत्याशी प्रदीप कुमार पर लोगों की सर्वसहमति नहीं बन पा रही है. कारण है कि शिवसेना प्रत्याशी संजय कुमार जहानाबाद के लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए लम्बे समय से संर्घष करते रहे हैं. यहीं कारण है कि आम लोगों के अलावा हिंदूवादी सोच के लोग शिवसेना प्रत्याशी संजय कुमार पर मन बना रहे हैं. अब देखना है कि क्षेत्र के मतदाता किसे अपना ताज पहनातें हैं. ■

feedback@chauthiduniya.com

चौथी दुनिया

हिंदी का पहला साप्ताहिक अख़बार

12 अक्टूबर–18 अक्टूबर, 2015

Postal Regn. No. DL (ND)-11/6139/2015-17, RNI No. DELHIN/2009/30467

उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड

खाद्य सुरक्षा क़ानून

सरकार की मंशा पर उठ रहे सवाल

प्रभात रंजन दीन

उत्तर प्रदेश में विधानसभा का चुनाव नजदीक आने लगा और जब केंद्र सरकार का दबाव धमकी की शक्ल लेने लगा, तब उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी की सरकार को प्रदेश में खाद्य सुरक्षा कानून लागू करने की याद आई. हालांकि अभी भी कानून लागू करने के बारे में विचार–विमर्श का ही प्रहसन हो रहा है. वर्ष 2013 में ही केंद्र सरकार खाद्य सुरक्षा अधिनियम लाई थी. उस समय केंद्र में भाजपा या नरेंद्र मोदी की सरकार थी भी नहीं. उस समय यूपीए की सरकार थी और समाजवादी पार्टी के नेताओं के सत्ताधारी कांग्रेस से बेहद अंतरंग रिश्ते थे. जब केंद्र में भाजपा की सरकार आई तब भी उत्तर प्रदेश सरकार को बार–बार खाद्य सुरक्षा कानून लागू करने के बारे में कहा जाता रहा और उत्तर प्रदेश सरकार बार–बार यह कहती रही कि अब लागू कर देंगे, फलां महीने से लागू कर देंगे, बस लागू करने ही वाले हैं, वगैरह–वगैरह. इसी वगैरह–वगैरह में समाजवादी पार्टी की सरकार ने सत्ता–अवधि का अधिकांश हिस्सा खुद के लिए तो भोग लिया, पर आम लोगों के लिए इस समय को त्रासद–अनुभव के लिए छोड़ दिया. अब फिर से उत्तर प्रदेश सरकार ने कहा है कि वह प्रदेश में खाद्य सुरक्षा कानून शीघ्र ही लागू करेगी. इस सिलसिले में मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और खाद्य मंत्री रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भइया की पिछले दिनों मुलाकात हुई और प्रहसन की प्रक्रिया फिर से शुरू हुई. अखिलेश पहले भी थे और राजा भइया पहले भी थे, लेकिन दोनों अपनी–अपनी दुनिया और अपनी–अपनी प्राथमिकताओं में मस्त थे.

बहरहाल, प्रदेश में खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू करने के बारे में हुई उच्चस्तरीय बैठक में क्या हुआ इसे आप सरकार द्वारा जारी की गई आधिकारिक भाषा में खुद ही देख लीजिए. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुई उच्चस्तरीय बैठक में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 को राज्य में लागू करने के लिए सहमति बनाई गई. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 को प्रदेश में लागू करने के लिए काफी गहनता से विचार–विमर्श किया गया. यह सहमति बनी कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 को प्रदेश में 3 चरणों में लागू किया जाए. इसके तहत, प्रथम चरण में 24 जनपदों में, दूसरे चरण में 26 जनपदों में तथा तीसरे चरण में अवशेष 25 जनपदों में यह अधिनियम लागू किया जाएगा. आपने सरकारी भाषा का पेंच देखा, जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार खुद ही यह कह रही है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 को प्रदेश में लागू करने के बारे में अब यानी वर्ष 2015 के आखिर में आकर सहमति बन रही है. यह सहमति कितने दिन में जमीन पर असलियत में उतरेगी, इसे लेकर कोई कैलेंडर जारी नहीं किया गया. सरकार ने इसे शीघ्र में ही निपटा दिया. इसी शीघ्रता में पिछले तीन साल से प्रदेश में खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू हो रहा है और इसी शीघ्रता में प्रदेश का विकास–कार्य भी सम्पन्न हो रहा है. मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई इस उच्चस्तरीय बैठक में प्रदेश के खाद्य एवं रसद मंत्री रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भइया खाद्य एवं रसद विभाग के प्रमुख सचिव सुधीर गर्ग, खाद्य एवं रसद आयुक्त अजय चौहान समेत कई वरिष्ठ नौकरशाह मौजूद थे. बैठक में मौजूद मुख्यमंत्री, मंत्री और नौकरशाहों को इतना सामान्य ज्ञान तो है ही कि देश के कई प्रदेशों में खाद्य सुरक्षा कानून लागू हो चुका है या कहें कई प्रदेशों में अधिनियम के लागू हुए काफी वक्त हो चुका है. यानी, उन प्रदेशों में लोगों को खाद्य एवं पोषण की सुरक्षा उपलब्ध हो चुकी है और उन्हें सस्ती दर पर पर्याप्त मात्रा में उत्तम खाद्यान्न उपलब्ध हो रहा है. वे सम्मान के साथ जीवन यापन कर रहे हैं. उत्तर प्रदेश सरकार की प्राथमिकता क्या है, इससे आप वाकिफ ही हैं.

आम लोगों की सरकार, समाजवाद की सरकार, मजलूमों और किसानों की हितवादी सरकार की विडंबना देखिए. खाद्य सुरक्षा अधिनियम जबसे आया तबसे उत्तर प्रदेश सरकार इसे यूपी में लागू करने की नौटंकी कर रही है. अक्टूबर 2013 में भी सरकार ने इसी तरह की उच्चस्तरीय बैठक की थी और यूपी में खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू करने की कवायद शुरू करने का बयान जारी किया था. खाद्य एवं रसद विभाग के तबके मंत्री राजेंद्र चौधरी और तबके प्रमुख सचिव दीपक त्रिवेदी ने मीडिया को बताया था कि अधिनियम लागू करने के लिए सबसे पहले सिस्टम का सम्पूर्ण कम्प्यूटरीकरण किया जाना आवश्यक है. तब बताया गया था कि योजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए मुख्य सचिव के निर्देशन में संचालन समिति का भी गठन कर दिया गया है, जो प्रत्येक माह योजना की प्रगति की समीक्षा करेगी. राशन कार्डों के डाटा–डिजिटाइजेशन और नए राशन कार्ड निर्गत करने का काम शुरू कर दिया गया है और इस दिशा में सभी जिलाधिकारियों ने काम शुरू भी कर दिए हैं. राशन कार्डों से सम्बन्धित समस्त सूचनाओं को ऑनलाइन करने का काम तीन नवंबर (2013) तक पूरा कर लिया जाएगा. 15 दिसम्बर 2013 तक राशन कार्डों का ऑनलाइन मुद्रण और उसका वितरण सुनिश्चित कर लिया जाएगा. खाद्य एवं रसद विभाग के तत्कालीन प्रमुख सचिव ने, तो जुलाई 2014 तक सभी पात्र परिवारों की पहचान करने का काम पूरा कर लेने का समय भी निर्धारित कर लिया था, लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार की वह बात झूठी और बेबुनियाद साबित हुई. पिछले दिनों हुई उच्चस्तरीय बैठक में तत्कालीन झूठ पर कोई चर्चा भी नहीं हुई.

खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू करने को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार की ढिलाई या झूठ पर केंद्र सरकार ने सरकार को कई चेतावनियां भी दीं. दिसम्बर 2014 में केंद्र सरकार ने उत्तर प्रदेश सरकार से कहा कि अगले साल मार्च (2015) तक प्रदेश में अगर खाद्य सुरक्षा कानून लागू नहीं किया गया, तो प्रदेश सरकार को गरीबी रेखा से ऊपर के लोगों के लिए सस्ती दर पर दिया जाने वाला अनाज बंद कर दिया जाएगा, लेकिन इसका यूपी सरकार पर कोई असर नहीं पड़ा. उत्तर प्रदेश सरकार ने केंद्र को भरोसा दिया था कि मार्च 2015 तक प्रदेश के 64 जिलों में खाद्य सुरक्षा कानून लागू कर दिया जाएगा, लेकिन यह टांय–टांय–फिस्स साबित हुआ. जब उत्तर प्रदेश में मार्च 2015 में भी खाद्य सुरक्षा कानून लागू नहीं किया जा सका, तब केंद्र ने यूपी सरकार को फिर से हिदायत दी. इस हिदायत पर यूपी सरकार ने गन्ना किसानों के करोड़ों रुपये के बकाए का रोना रोया, फिर प्राकृतिक आपदा से बर्बाद हुए किसानों को राहत देने का बहाना बनाया, लेकिन असलियत में क्या हुआ? न किसानों को गन्ने का बकाया मिला और न प्राकृतिक आपदा के मारे किसानों को कोई राहत मिल पाई. यहां तक कि ओलावृष्टि से खराब हुई फसलों को खरीदने के लिए तय मानक में छूट के लिए भी राज्य सरकार ने केंद्र को काफी देर से लिखा. प्रदेश सरकार इस पर भी ध्यान नहीं दे रही कि यूपी में अनाज की सरकारी खरीदारी सबसे कम क्यों है.

खैर, राज्य सरकार ने खाद्य सुरक्षा कानून लागू करने में हो रही देरी के प्रति लापरवाही बरतते हुए केंद्र से फिर से समय मांगा और इस तरह प्रदेश सरकार समय की हत्या करती रही. राज्य सरकार ने इसे लागू करने के लिए अक्टूबर 2015 तक का समय मांगा है, लेकिन यह समय भी अब जाने ही वाला है. ■

feedback@chauthiduniya.com

खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू करने को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार की ढिलाई या झूठ पर केंद्र सरकार ने यूपी सरकार को कई चेतावनियां भी दीं. दिसम्बर 2014 में केंद्र सरकार ने उत्तर प्रदेश सरकार से कहा कि अगले साल मार्च (2015) तक प्रदेश में अगर खाद्य सुरक्षा कानून लागू नहीं किया गया, तो प्रदेश सरकार को गरीबी रेखा से ऊपर के लोगों के लिए सस्ती दर पर दिया जाने वाला अनाज बंद कर दिया जाएगा, लेकिन इसका यूपी सरकार पर कोई असर नहीं पड़ा. उत्तर प्रदेश सरकार ने केंद्र को भरोसा दिया था कि मार्च 2015 तक प्रदेश के 64 जिलों में खाद्य सुरक्षा कानून लागू कर दिया जाएगा, लेकिन यह टांय-टांय-फिस्स साबित हुआ.

सरकार केवल पेट-भरों को पहचानती है

उत्तर प्रदेश की क्या जमीनी हकीकत है, इसे आप सब जानते हैं. उत्तर प्रदेश में कुपोषण बढ़ रहा है. पुष्टाहार योजना फेल हो चुकी है. भावी नस्लें कैसी निकलेंगी, इसका भयावह अंदाजा लगाया जा सकता है. बच्चों के पुष्टाहार की हालत के जो नौ सबसे गरीब प्रदेशों के आधिकारिक आंकड़े हैं, उसमें उत्तर प्रदेश की स्थिति सबसे खराब है. केंद्र सरकार और यूनिसेफ के साझा सर्वेक्षण में यह उजागर हो चुका है कि कुपोषण की वजह से उत्तर प्रदेश के गरीब बच्चों में बौनापन और सूखापन बढ़ रहा है. अधिकांश बच्चे सामान्य वजन से काफी कम वजन के हैं. यानी, बच्चों के शारीरिक विकास में उत्तर प्रदेश सरकार पूरी तरह फेल है. बाल पुष्टाहार के नाम पर तमाम योजनाएं केवल खाने-कमाने का धंधा बन कर रह गई हैं. सरकार आधिकारिक तौर पर यह स्वीकार कर चुकी है कि कुपोषण के खिलाफ जंग में उत्तर प्रदेश पिछड़ चुका है. प्रदेश के बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग का कहना है कि पिछले पांच वर्षों के दौरान प्रदेश सरकार ने कुपोषण के सम्बन्ध में कोई भी अध्ययन या सर्वेक्षण नहीं कराया है. लिहाजा, सरकार को पता ही नहीं कि प्रदेश में कुपोषण के शिकार लोगों की संख्या कितनी है. साफ है कि सरकार यह नहीं जानती कि पिछले पांच साल में प्रदेश में कुपोषण के शिकार पुरुष, महिलाएं, किन्नर, बालक, बालिकाएं और शिशुओं की संख्या कितनी है. जब पिछले पांच वर्ष का यह हाल है, तो उसके पूर्व की स्थिति और कुपोषण के आंकड़े के बारे में जानने की आप कोई कोशिश ही न करें. यह सवाल अनुत्तरित ही रहेगा कि आखिर किस आधार पर मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने राज्य पोषण मिशन की शुरुआत पर प्रदेश के सभी जरूरतमंद लोगों तक पौष्टिक खाद्य पदार्थ पहुंचाने का दावा किया था और जब आंकड़े ही उपलब्ध नहीं हैं, तो कैसे इस मिशन से प्रदेश की एक लाख महिलाओं को जोड़े जाने का दावा किया गया था?

भुखमरी है बीमारी और आत्महत्या है पागलपन

जो गैर सरकारी आंकड़े उपलब्ध हैं, वे अधिक सटीक और जमीन से जुड़े हैं. यह बताता है कि उत्तर प्रदेश में गरीबी घटने के बजाय दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है. ग्रामीण आबादी का, तो और भी बुरा हाल है. केंद्र और राज्य दोनों मिल कर कागज पर केवल आंकड़े बनाने (मैनिपुलेट) और कागज पर गरीबी कम दिखाने के गोरखधंधे में लगे हैं. शहरी गरीबों की तुलना में खेतिहर मजदूरों में गरीबी भयावह है. उत्तर प्रदेश में भुखमरी को प्रशासन बीमारी से हुई मौत करार देता है और किसानों की आत्महत्याओं को पागलपन. खाद्य सुरक्षा कानून लागू करने में प्रदेश सरकार इसलिए भी देरी कर रही है, ताकि राशन व्यवस्था में बड़े पैमाने पर घोटाले, राशन की कालाबाजारी, लाखों टन अनाज की तस्करी, लोगों को सड़ा अनाज देना और सम्पन्न लोगों को भी लाल राशन कार्ड देने के धंधे पर कहीं अंकुश न लग जाए. भारत में सबसे बड़ा खाद्यान्न भंडार होने का दावा किया जाता है, लेकिन गरीबों तक उसे पहुंचाने में सरकारें नाकाम हैं. राज्य द्वारा उठाया गया खाद्यान्न कुछ ही जरूरतमंदों तक पहुंच पाता है, बाकी बाजार में बिक जाता है. तभी तो बच्चे कम वजन वाले और बौने निकल रहे हैं. तभी तो कुपोषण में हमारा उत्तर प्रदेश अव्वल साबित हो रहा है.

जब आम लोगों के हाथ में होगा लाइसेंस टु किल

उत्तर प्रदेश में खाद्य सुरक्षा कानून लागू करने के नाम पर बैठकें दर बैठकें तो हो रही हैं, लेकिन एक भी बैठक में खाद्यान्नों की खुलेआम हो रही तस्करी, चोरी, ब्लैक-मार्केटिंग और जमाखोरी पर कोई बात नहीं होती. मुख्यमंत्री अखिलेश यादव एक बार भी इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं लेते कि प्रदेश का सबसे बड़ा खाद्यान्न घोटाला किस दशा और दिशा में है, वे इसका कोई जायजा नहीं लेते. ठीक है कि खाद्यान्न घोटाले की जांच सीबीआई कर रही है, लेकिन मुख्यमंत्री इस बात की तस्दीक, तो कर ही सकते हैं कि घोटाला उजागर होने के बाद क्या उत्तर प्रदेश में खाद्यान्नों की चोरी-चकारी रुक गई? संजीदगी वाली समाजवादी सरकार के मुखिया होने का दावा करने वाले अखिलेश यादव कम से कम इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस ऐतिहासिक मंतव्य को ही ध्यान में रखते कि वह दिन दूर नहीं, जब सरकार और न्यायिक व्यवस्था से ऊबे आम लोग कानून को अपने हाथ में ले लें और सार्वजनिक हत्याएं शुरू हो जाएं. खाद्यान्न घोटाले के परिप्रेक्ष्य में इलाहाबाद हाईकोर्ट की यह आशंका चिंतावान नागरिकों को सिहरा देती है, लेकिन सियासतदानों की खाल पर कोई असर ही नहीं पड़ता. हाईकोर्ट ने खाद्यान्न घोटाले पर कहा था कि उत्तर प्रदेश का पूरा प्रशासनिक तंत्र भ्रष्ट हो चुका है. इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा था कि उत्तर प्रदेश सरकार को जेम्स बॉन्ड की फिल्म लाइसेंस टु किल की तरह लाइसेंस टु करप्ट मिल गया है, लेकिन जब आम नागरिक के हाथ में लाइसेंस टु किल मिल जाएगा, तो क्या होगा? उत्तर प्रदेश का बहुचर्चित खाद्यान्न घोटाला मुलायम सिंह यादव के मुख्यमंत्रित्व काल में शुरू हुआ और मायावती के मुख्यमंत्रित्व में परवान चढ़ गया. घोटाले में शामिल नेताओं, नौकरशाहों और दलालों ने उत्तर प्रदेश का अनाज बांग्लादेश, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और अफ्रीका तक के बाजारों में बेच डाला. जिस समय घोटाला खुला उस समय ही प्रदेश के 31 जिलों में 50 हजार करोड़ का घोटाला सामने आ चुका था. सरकार की तमाम योजनाओं का अनाज नेता, नौकरशाह और माफियाओं ने खुले बाजार में बेच डाला. बीपीएल योजना, मिड डे मील, बाल पुष्टाहार, अन्त्योदय जैसी तमाम योजनाओं का अनाज जरूरतमंदों तक पहुंचने के बजाय कई देशों और राज्यों तक पहुंच गया. अनाज की जैसे खुलेआम लूट मची थी. चोरी का सरकारी अनाज डंके की चोट पर रेल और ट्रकों पर लाद-लाद कर ले जाया गया. विडंबना देखिए कि वर्ष 2002 से लेकर 2007 तक उत्तर प्रदेश के 31 संदर्भित जिलों में पांच करोड़, 10 लाख, 62 हजार, 792 मीट्रिक टन गेहूं का उत्पादन हुआ, लेकिन मंडियों में 15 करोड़, 41 लाख, 89 हज़ार, 678 मीट्रिक टन माल पहुंच गया. यानी, सरकारी योजनाओं का अनाज मंडियों में बिकने के लिए पहुंच गया. प्रदेश की राजधानी लखनऊ का हाल देखिए वर्ष 2002 से लेकर 2007 के बीच लखनऊ में 10 लाख 26 हज़ार 614 मीट्रिक टन गेहूं पैदा होता है, लेकिन मंडी में पहुंचता है 32 लाख 40 हज़ार 440 मीट्रिक टन गेहूं. उत्पादन से अधिक गेहूं मंडी में बिकने के लिए कैसे पहुंच गया? सरकार ने इस चमत्कार के बारे में कोई खोज-खबर नहीं ली, क्योंकि इस चमत्कार में सरकार खुद भी शरीक थी. फिर उत्तर प्रदेश सरकार यूपी में क्यों लागू करे खाद्य सुरक्षा कानून?

आईपीएस धमकी प्रकरणः हाईकोर्ट की सख्ती के बाद सरकार ने छोड़ी जिद

मुलायम पर दर्ज हुआ मुक़दमा

उत्तर प्रदेश सरकार के इशारे पर नौकरशाहों द्वारा प्रताड़ित किए जाने के खिलाफ आईपीएस अधिकारी अमिताभ ठाकुर और उनकी पत्नी डॉ. नूतन ठाकुर ने अदालत की शरण ली. अदालत ने ठाकुर दम्पति की शिकायत को गंभीरता से संज्ञान में लिया. ठाकुर दम्पति ने उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव आलोक रंजन, गृह विभाग के प्रमुख सचिव देबाशीष पांडा, डीजीपी जगमोहन यादव समेत कई अन्य वरिष्ठ अफसरों द्वारा उन्हें जानबूझ कर परेशान करने की न्यायिक जांच कराने की इलाहाबाद हाईकोर्ट से मांग की.

सूफी यायावर

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव द्वारा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी अमिताभ ठाकुर को फोन पर धमकी दिए जाने के मामले में कोर्ट के आदेश के बावजूद एफआईआर दर्ज नहीं किए जाने के कारण हाईकोर्ट की नाराजगी देखते हुए सरकार ने एफआईआर दर्ज कर ली है. निचली अदालत ने इस बारे में हजरतगंज पुलिस से जवाब मांगा था. जबकि इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने इस पर नाराजगी जताई थी. हाईकोर्ट में सरकार ने आश्वासन दिया था कि एफआईआर शीघ्र ही दर्ज की जाएगी. सनद रहे कि अमिताभ ठाकुर को 10 जुलाई 2015 को फोन पर धमकी देने के मामले में लखनऊ की सीजेएम सोमप्रभा मिश्रा ने 14 सितम्बर को ही समुचित धाराओं में एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया था. लेकिन लखनऊ पुलिस ने अदालत के आदेश का पालन नहीं किया था. अदालत की इस खुली अवहेलना के खिलाफ आईपीएस अफसर अमिताभ ठाकुर हजरतगंज थाना के सामने अनिश्चितकालीन धरना पर बैठ गए थे, लेकिन एफआईआर दर्ज होने के बाद शाम को उन्होंने अपना धरना वापस ले लिया.

निलंबित आईपीएस अधिकारी अमिताभ ठाकुर को फोन पर धमकी देने के मामले में आरोपी सपा सुप्रीमो मुलायम सिंह यादव के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर हजरतगंज पुलिस ने जांच शुरू कर दी है. कोतवाली प्रभारी विजयमल यादव ने एक अक्टूबर को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में रिपोर्ट प्रेषित कर कहा कि 14 सितम्बर के अदालत के आदेश के अनुपालन में धारा 506 (जान से मारने की धमकी) के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है तथा मामले की विवेचना जारी है. उल्लेखनीय है कि इस मामले में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सोमप्रभा ने 14 सितंबर को हजरतगंज कोतवाली प्रभारी को मामले में रिपोर्ट दर्ज कर विवेचना करने का आदेश दिया था. कई दिनों तक रिपोर्ट न दर्ज होने पर अमिताभ ठाकुर ने अदालत में अर्जी दाखिल कर हजरतगंज थाने से रिपोर्ट तलब किए जाने की मांग की थी.

एफआईआर दर्ज करने के 30 सितंबर को दिए गए सरकार के आश्वासन के बाद मुख्य न्यायाधीश डॉ. डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायाधीश एसएन शुक्ला की पीठ ने अमिताभ ठाकुर और उनकी पत्नी डॉ. नूतन ठाकुर को प्रशासन द्वारा परेशान करने की न्यायिक जांच कराने संबंधी याचिका यह कहते हुए निस्तारित कर दी थी कि आईपीएस अफसर को अकारण परेशान नहीं किया जाए. हाईकोर्ट ने कहा कि यद्यपि वे वर्तमान में मुख्य सचिव आलोक रंजन, डीजीपी जगमोहन यादव सहित अन्य वरिष्ठ अफसरों के खिलाफ न्यायिक जांच की मांग को नहीं मान रहे हैं, पर यह भी आगाह किया कि कोर्ट द्वारा सरकार के कार्यों का हमेशा ही अन्वेषण किया जा सकता है. कोर्ट ने कहा कि ठाकुर भविष्य में इन मामलों में उनके मौलिक अधिकारों का हनन होने पर कभी [illegible]

कैट में भी याचिका

[illegible]

पड़ा, जिसमें 03 जनवरी को धमकी, 17 जनवरी को रेप के फर्जी आरोप, 10 जुलाई को मुलायम सिंह द्वारा धमकी, 11 जुलाई को रेप का फर्जी मुक़दमा, 13 जुलाई को निलंबन और विभागीय कार्रवाई और 16 सितम्बर को आनन-फानन में आय से अधिक सम्पत्ति का मुकदमा दर्ज होना शामिल है. ठाकुर दम्पति का कहना था कि वे शुरू से इनमें से हर मामले में वरिष्ठ अफसरों से गुहार लगाते रहे, पर उनकी किसी स्तर पर सुनवाई नहीं हुई. इसके विपरीत मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के सीधे दबाव के कारण उनके खिलाफ नियमों के विपरीत तमाम कार्रवाइयां की गईं.

ठाकुर दम्पति ने भी शिकायत की कि उनपर की गई कार्रवाइयों के अभिलेख भी नहीं दिए जा रह हैं, जबकि दस्तावेज प्राप्त करना उनका कानूनी अधिकार है. अमिताभ ठाकुर का कहना था कि उन्हें 17 जुलाई को सतर्कता अधिष्ठान की जांच की जानकारी हुई. उन्होंने 19 जुलाई को ही यह जानकारी मांगी थी कि उनके खिलाफ किन परिसम्पत्तियों को गलत ढंग से रखने का आरोप है. बार-बार यह बुनियादी जानकारी मांगे जाने के बाद भी उन्हें यह नहीं बताया गया. इस पर उन्होंने 11 सितम्बर को मुख्य सचिव आलोक रंजन सहित तमाम वरिष्ठ अफसरों से मिल कर संदर्भित जानकारियां मांगीं, लेकिन जानकारी देने के बजाय आनन-फानन में 15 सितम्बर को जांच को स्वीकृति देकर 16 सितंबर को उनके खिलाफ आय से अधिक सम्पत्ति का मुकदमा दर्ज करा दिया गया.

इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने अमिताभ ठाकुर को आरोपों के सम्बन्ध में आवश्यक अभिलेख उपलब्ध नहीं कराए जाने को अनुचित बताया और सरकार को निर्देश दिया कि अमिताभ ठाकुर को संदर्भित अभिलेख उपलब्ध कराए जाएं. जब सरकारी पक्ष ने गोपनीयता का हवाला दिया, तो मुख्य न्यायाधीश डॉ. डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायाधीश एसएन शुक्ला की पीठ ने कहा कि एक आईपीएस अफसर पर मुकदमा किया गया है. प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के अनुसार उन्हें उन पर लगे आरोप और सम्बन्धित अभिलेख तत्काल दिए जाएं.

उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव आलोक रंजन, डीजीपी जगमोहन यादव सहित अन्य वरिष्ठ अफसरों द्वारा निलंबित आईपीएस अफसर अमिताभ ठाकुर सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. नूतन ठाकुर को जानबूझ कर परेशान करने की न्यायिक जांच कराए जाने की मांग पर हाईकोर्ट ने दोनों पक्षों की बात सुन कर दोनों से अब तक हुए घटनाक्रम और विभिन्न न्यायिक फोरम में लंबित मुकदमों का विवरण मांगा. हालांकि हाईकोर्ट ने मामले की न्यायिक जांच की मांग अस्वीकृत कर दी. ■

feedback@chauthiduniya.com

भागवत के बयान के बाद गरमाई राजनीति

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत के बयान के बाद आरक्षण की राजनीति गर्म हो गई है. उत्तर प्रदेश बिहार से पीछे नहीं है. यूपी में भी इस मुद्दे पर भाजपा विरोधी माहौल बनाने में समाजवादी पार्टी व बहुजन समाज पार्टी सक्रिय हो गई हैं.

डॉ. रामभरोसे दास

जातिगत आरक्षण के खिलाफ माहौल बन रहा है. अब यह मांग धीरे-धीरे प्रदेश के कई हिस्सों तक पहुंच रही है कि पिछड़ेपन का मानक किसी की जाति नहीं बल्कि उसकी आर्थिक स्थिति बननी चाहिए. संघ प्रमुख मोहन भागवत की ओर से आरक्षण नीति की समीक्षा करने की मांग के बाद से प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी अब आरक्षण विरोधी बहस सोशल मीडिया के साथ-साथ सामाजिक मंचों पर चल रही है. इन बहसों में प्रदेश के कई शिक्षाविद भी शामिल हो रहे हैं. अब यह भी कहा जा रहा है कि यूपी में भी सोशल मीडिया के जरिए गुजरात की तरह ही आरक्षण-व्यवस्था बदलने के व्यापक आंदोलन की भूमिका खड़ी की जा रही है. छात्रों का एक तबका जंतर-मंतर पर धरना देने की तैयारी करने में जुटा है. छात्र समुदाय का भी मानना है कि अब जाति के आधार पर आरक्षण बंद कर आर्थिक स्थिति के आधार पर आरक्षण की व्यवस्था शुरू होनी चाहिए. लखनऊ में जातिगत आरक्षण के विरोध में बौद्धिक बैठकों और प्रदर्शनों का सिलसिला तेजी से शुरू हो गया है. आरक्षण नीति में संशोधन को लेकर छात्रों में एक बदलाव देखा जा रहा है, जिसमें तकरीबन सारी जातियों के छात्र शामिल हो रहे हैं. हालांकि विरोध में भी गोलबंदी की कोशिशें समानान्तर हो रही हैं, लेकिन वह फीका पड़ रहा है. छात्रों का दल लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर में आरक्षण विरोधी मुहिम चला रहा है, जिसे और प्रभावकारी बनाने की योजना है. उसके बाद लखनऊ के छात्र दिल्ली के जंतर-मंतर पर बड़ी संख्या में धरना देकर केंद्र सरकार तक यह संदेश पहुंचाएंगे कि जातिगत आरक्षण की व्यवस्था अब बंद होनी चाहिए. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी के प्रवक्ता कमल जायसवाल भी अब सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को आरक्षण के खिलाफ जागरूक कर रहे हैं.

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में रिसर्च स्कॉलर अजीत सेन अब वहां के छात्रसंघ चुनाव में इस मुद्दे को शामिल करने जा रहे हैं. उनका कहना है कि यह बेहतर समय है, जब इस आरक्षण की प्राचीन काल से चली आ रही नीति में बौद्धिक संशोधन के मुद्दे पर छात्रों को जोड़ा जाए. इसके लिए वे भी सोशल मीडिया के साथ-साथ सामाजिक मंचों पर भी मुहिम चला रहे हैं. उत्तर प्रदेश में विधानसभा का चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है, वैसे-वैसे आरक्षण की मांग करने वाले सियासतदां भी अलग-अलग सियासी सुर निकाल कर सामने आ रहे हैं. अब उत्तर प्रदेश में ओबीसी को अनुसूचित जाति-जनजाति की तरह ही आबादी के हिसाब से आरक्षण दिए जाने की मांग भी उठने लगी है. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत के बयान के बाद आरक्षण की राजनीति गरमा गई है. उत्तर प्रदेश बिहार से पीछे नहीं है. यूपी में भी इस मुद्दे पर भाजपा विरोधी माहौल बनाने में समाजवादी पार्टी व बहुजन समाज पार्टी सक्रिय हो गई हैं. हालांकि यूपी में अभी चुनाव में देर है. संघ प्रमुख मोहन भागवत ने एक इंटरव्यू में कहा था कि देश में आरक्षण की समीक्षा की जानी चाहिए. समीक्षा के लिए एक ऐसी कमिटी बनाई जानी चाहिए, जिसमें जानकार हों लेकिन नेता शामिल न हों. भागवत ने कहा था कि संविधान में सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग पर आधारित आरक्षण नीति की बात है, लेकिन आज इसका राजनीतिक इस्तेमाल हो रहा है. अगर संविधानकारों की सोच के मुताबिक यह व्यवस्था चलती, तो आज ऐसे सवाल खड़े नहीं होते. भागवत के इस बयान पर राजनीति भड़क उठी. गुजरात में पटेल समुदाय की आरक्षण की मांग ने इस आग में घी का काम किया.

बिहार में चुनाव है, तो इसका असर वहां ज्यादा हुआ और लालू प्रसाद ताल ठोक कर सामने आ गए. इधर उत्तर प्रदेश में बसपा नेता मायावती मुखर हो उठीं, तो सपा ने अपने मझोले दर्जे के नेताओं को आगे कर दिया. राष्ट्रीय निषाद संघ राष्ट्रीय सचिव व समाजवादी पार्टी के नेता चौधरी लौटन राम निषाद ने भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर आरक्षण मुद्दे पर दोहरी नीति अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि एक तरफ आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत आरक्षण की समीक्षा की बात करते हैं, तो दूसरी तरफ भाजपा व केंद्र सरकार उससे अलग बताते हुए पिछड़ों, दलितों को भ्रमित करने का काम कर रही है. जबकि यह जगजाहिर है कि भाजपा का रिमोट कंट्रोल संघ के हाथ में है. उन्होंने कहा कि संघ प्रमुख के बयान पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आ ही रही थीं कि राजस्थान के मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने पांच घुमंतू जनजातियों सहित गुर्जर समाज को पांच प्रतिशत विशेष पिछड़ा वर्ग आरक्षण व आर्थिक रूप से पिछड़ी सवर्ण जातियों को 14 प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय ले लिया. निषाद संघ ने केन्द्र सरकार से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति की ही तरह अन्य पिछड़ा वर्ग व आर्थिक रूप से पिछड़ी सामान्य वर्ग की जातियों को जनसंख्यानुपात में आरक्षण दिए जाने की मांग की है.

निषाद ने कहा कि केन्द्र सरकार को चाहिए कि आरक्षण मुद्दे पर जातीय व वर्गीय संघर्ष व टकराव को खत्म करने के लिए सभी वर्गों को जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित करे. निषाद ने तमिलनाडु राज्य में 68 प्रतिशत आरक्षण व्यवस्था को चुनौती देने वाली याचिका का हवाला देते हुए कहा कि इस संदर्भ में 13 जुलाई 2011 को निर्णय देते हुए उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट किया था कि राज्य सरकार अपने राज्य में जितने भी प्रतिशत आरक्षण चाहे दे सकती है, बशर्ते कि उसके पास जनगणना का पुष्ट आंकड़ा उपलब्ध हो. चौधरी ने कहा कि कर्नाटक में आरक्षण 62 प्रतिशत है तथा महाराष्ट्र में पहले से एससी, एसटी, ओबीसी, एनटी, डीटी, एसबीसी को 52 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था रही है. महाराष्ट्र सरकार ने विधानसभा चुनाव से पूर्व मुस्लिमों को पांच प्रतिशत व आर्थिक, शैक्षिक पिछड़ापन को आधार मानते हुए मराठा समाज को 16 प्रतिशत आरक्षण दिया था, जो न्यायालय के विचाराधीन है.

निषाद ने आरक्षण की सीमा को खत्म करते हुए मंडल कमीशन की पूरी रिपोर्ट लागू करने और वर्गीय विभाजन के साथ-साथ सभी वर्गों को जनसंख्यानुपात में आरक्षण की व्यवस्था कर नौवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग की है. उन्होंने कहा कि 52 प्रतिशत पिछड़े वर्ग को 1993 में 27 प्रतिशत आरक्षण दिया गया, जो नैसर्गिक न्याय के विपरीत था, इसके बाद भी 1999 में भाजपा सरकार ने अति सम्पन्न जाट, कुर्बा, लिंगायत, मोढ़ घांची, बोक्कालिगा आदि जातियों को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल कर दिया. निषाद ने कहा कि पिछड़ा वर्ग को जनसंख्या के बराबर आरक्षण दिया जाना चाहिए. ■

feedback@chauthiduniya.com

आजम कर रहे पटेल का समर्थन

गुजरात में पाटीदार आरक्षण आंदोलन के प्रमुख नेता हार्दिक पटेल को उत्तर प्रदेश में एक विवादास्पद व्यक्तित्व का वरिष्ठ नेता प्रशंसक के बतौर मिल गया है. यह सपा आलाकमान के लिए चौंकाने वाली बात नहीं बल्कि सपा की सुनियोजित-सियासत को समझने वाली बात है. अखिलेश सरकार में कैबिनेट मंत्री आजम खान ने हार्दिक पटेल की जमकर तारीफ की है.
आजम ने कहा कि हार्दिक पटेल उभरते हुए सितारे हैं, जो एक बड़े समूह को नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं. आजम खान ने कहा कि गुजरात सरकार द्वारा हार्दिक पटेल को आतंकी बताने के बावजूद उन्होंने अपने नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया. आजम के बयान पर समाजवादी पार्टी ने अपना कोई रुख स्पष्ट नहीं किया और न आजम के बयान का कोई खंडन ही किया. पटेल आरक्षण आंदोलन पर सपा की चुप्पी सधी हुई है. लेकिन राजनीति के जानकार आजम के बयान को औचक नहीं बल्कि सोचा-समझा बयान मानते हैं. ■

थारू जनजाति के लोगों को मुख्यधारा से जोड़ने की समाजवादी पहल

सियासत में भी तो मौका दीजिए

वैष्णवी वंदना

नेपाल में जन-विरोधी संविधान के खिलाफ चल रहे आंदोलन में मधेसी और थारू समुदाय के लोग अहम भूमिका अदा कर रहे हैं. भारत से लगे नेपाल के विशाल सीमा क्षेत्र में रहने वाले लोगों को पहाड़ के नेपाली मधेसी नाम से पुकारते हैं. थारुओं की पीड़ा यही है कि इस समुदाय की न भारत में कोई पूछ है और न नेपाल में कोई इज्जत है, लिहाजा अब लड़ने के सिवाय उनके पास कोई रास्ता नहीं बचा है. उत्तर प्रदेश सरकार ने थारुओं को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रयासरत रहने का दावा किया है. जबकि सरकार का यह दावा भी महज सियासी ही है. समाजवादी पार्टी ही क्या अन्य तमाम पार्टियों ने भी थारू समुदाय के लोगों को राजनीति की धारा में लाने का कोई प्रयास नहीं किया है. उत्तर प्रदेश हो या बिहार, थारू समुदाय के लोग कहीं भी राजनीति में स्वीकार्य नहीं हैं. समाजवादी पार्टी ने बिहार में नीतीश-लालू-सोनिया का महागठबंधन तोड़ कर अपना अलग मोर्चा बनाया. यूपी के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने पटना जाकर दम-खम से चुनाव में उतरने का ऐलान भी किया, लेकिन थारू समुदाय के एक भी व्यक्ति को अपना प्रत्याशी बनाने पर विचार नहीं किया. महागठबंधन हो या भाजपा-नीत राजग हो, किसी ने भी थारू समुदाय के व्यक्ति को टिकट नहीं दिया. जबकि बिहार और उत्तर प्रदेश के सीमा क्षेत्र में थारुओं की लाखों की आबादी है. इस बृहत्तर समुदाय को उपेक्षित कर इन्हें प्रतिक्रियावादी बनने का मौका दिया जा रहा है. नेपाल के नये संविधान ने थारुओं को वहां भी हाशिए पर फेंक दिया है.

थारू जनजाति की महिलाओं और बालिकाओं के एक दल को शैक्षणिक भ्रमण के लिए मध्य प्रदेश के ओरछा के लिए रवाना करने के मौके पर 30 सितम्बर को लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव बोल रहे थे कि राज्य सरकार थारू जनजाति को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए लगातार प्रयासरत है. जिससे इस जनजाति के लोग भी शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएं प्राप्त कर जागरूक बन सकें और अपना भविष्य बेहतर बना सकें. उन्होंने यह भी कहा कि थारू जनजाति के विकास की योजनाओं के लिए धन की कमी नहीं होने दी जाएगी. अखिलेश ने यह माना कि आज भी थारू जनजाति की स्थिति में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है. वे आज भी जंगल में रहते हैं, हालांकि जंगलों को बचाए रखने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है. थारू जनजातीय क्षेत्र में विकास की गतिविधियां जैसे, बिजली अथवा टेलीफोन की लाइनें बिछाना या घर बनाने में कठिनाइयां आती हैं. इसके बावजूद राज्य सरकार कानून के दायरे में सभी संभव तरीकों से थारू जनजाति के विकास के लिए प्रयास करती रहेगी. मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि दिल्ली हाट की तरह लखनऊ में भी एक बाजार का निर्माण कराया जा रहा है, जहां पर प्रदेश के हस्तशिल्पी अपने उत्पादों का प्रदर्शन एवं विक्रय कर सकेंगे. थारू महिलाएं भी अपने हस्तशिल्प का यहां पर प्रदर्शन और विक्रय कर सकेंगी.

उत्तर प्रदेश सरकार ने एक नई पहल करते हुए प्रदेश के थारू जनजातीय क्षेत्र की उद्यमी बालिकाओं और महिलाओं को मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ स्थित ओरछा के ताराग्राम में शैक्षणिक भ्रमण के लिए भेजने का फैसला किया है. इसके तहत लखीमपुर खीरी एवं बहराइच जिले के थारू क्षेत्र की 20-20 बालिकाओं-महिलाओं का चयन किया गया है. लगनशील, मेहनती तथा सीखने की इच्छा से भरपूर इन बालिकाओं-महिलाओं को एनआरएलएम के तहत शिक्षित करके कम्प्यूटर की भी जानकारी दी गई है. इन्हें थारू जनजाति के सम्बन्ध में सरकार की विकास योजनाओं से अवगत कराया गया है. ओरछा भ्रमण के दौरान इन बालिकाओं-महिलाओं को तारा निर्माण केन्द्र, तारा हैंडमेड पेपर रि-साइकिलिंग, तारा लाइवलीहुड एकेडमी, देसी पावर, जयतारा वाटर फिल्टर, महिला साक्षरता, रेडियो बुंदेलखंड (एफएम 90.4), चेक डैम आदि का भ्रमण व अध्ययन करने के साथ ही, इन कार्यों को व्यावहारिक रूप से भी सीखने का अवसर मिलेगा. ■

feedback@chauthiduniya.com

थारुओं को टिकट नहीं देती पार्टियां

नेपाल की सीमा से लगे बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले के चार प्रखंडों में दो लाख से अधिक थारू रहते हैं, जिन्हें कई दशक तक संघर्ष करने के बाद वर्ष 2003 में अनुसूचित जनजाति का दर्जा मिला था. इसी इलाके में उरांव जनजाति के लोग भी रहते हैं, लेकिन यहां से कोई आदिवासी संसद तो छोड़िए, विधानसभा तक भी कोई नहीं पहुंच पाया. कोई भी पार्टी इस समुदाय को मौका नहीं देती, केवल इनसे वोट लेती है. एनडीए, महागठबंधन या सपा के साथ बने तीसरे मोर्चे में से किसी ने भी किसी थारू को उम्मीदवार नहीं बनाया है. इससे आदिवासियों में काफी गुस्सा है. भारतीय थारू कल्याण महासंघ के क्षेत्रीय अध्यक्ष हेमराज पटवारी कहते हैं, गुस्सा तो है, लेकिन क्या करें, कोई पार्टी हमें मौका ही नहीं देती. विडंबना यह है कि थारू बहुल इलाके में भी आदिवासियों के लिए कोई सीट आरक्षित नहीं है. 2011 की जनगणना के आधार पर सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को निर्देश दिया था कि जरूरत के हिसाब से क्षेत्रों का परिसीमन हो, लेकिन थारुओं के लिए कुछ नहीं हुआ. ■

नेपाल के थारू अलग परेशान

पश्चिम नेपाल का टीकापुर थारू बनाम गैर थारू राजनीति का केंद्र बन गया है. नेपाल में 17 लाख थारू हैं, जो अलग थारू प्रदेश की मांग लंबे समय से कर रहे हैं. इन 17 लाख थारुओं में से पचास फीसदी थारू पश्चिमी नेपाल के चार जिलों में बसते हैं. भारतीय सीमा से लगे ये चारों जिले इन दिनों राजनीतिक रूप से अत्यधिक संवेदनशील हैं. कैलाली को नेपाली सेना ने अपने नियंत्रण में ले रखा है. नेपाल में 103 अलग-अलग जाति-समूहों के लोग हैं, जिन्हें नए संविधान में वाजिब अधिकार नहीं मिला. नेपाल सरकार ने नए संविधान द्वारा राज्यों का विभाजन पक्षपातपूर्ण तरीके से किया. तराई में मधेस प्रदेश की मांग पहले से थी. नए संविधान ने नेपाल में पहाड़ी बनाम थारू और पहाड़ी बनाम मधेसी की बड़ी विभाजक रेखा खींच दी है. एक जुलाई 2015 को सरकार ने संविधान सभा में नए संविधान का पहला मसौदा रखा था. उसकी प्रतिक्रिया में बीरगंज में मधेस जनाधिकार फोरम के नेता प्रोफेसर भाग्यनाथ गुप्ता ने संविधान मसौदे की कॉपी जलाई थी. भाग्यनाथ ने वर्ष 2007 में भी ऐसा किया था.
2 जुलाई 2015 को संयुक्त मधेसी फ्रंट के चार घटक तराई मधेस लोकतांत्रिक पार्टी, संघीय समाजवादी फोरम नेपाल, सद्भावना पार्टी और तराई-मधेस सद्भावना पार्टी ने काठमांडू से लेकर नेपाल के विभिन्न हिस्सों में संविधान के ड्राफ्ट की प्रतियां फूंकीं. नेपाल में संविधान बनने के बाद शुरू हुई हिंसा अत्यंत खतरनाक है और नेपाल की राजनीति आत्मघाती साबित हो रही है. नेपाल सरकार को तराई, थरुआन, चूरे भांवर और पहाड़ के विभिन्न नेताओं की आम सहमति से संविधान का प्रारूप तय करना चाहिए था. लेकिन ऐसा नहीं हुआ और नेपाल भीषण हिंसक संघर्ष की चपेट में एक बार फिर से बुरी तरह फंस गया है. ■

मोदी सरकार की बेरुखी से उत्तराखंड पर्यटन विभाग निराश

रेनू शर्मा

विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर मोदी सरकार की उत्तराखंड के प्रति बेरुखी साफ दिख रही है. प्रधानमंत्री के इशारे पर जिस तरह उत्तराखंड को पाई-पाई के लिए मोहताज करने की नीति पर अमल हो रहा है. उसका साफ असर अब दिखने लगा है. प्रदेश सरकार ने लगातार इस बात की कोशिश की कि कम से कम केंद्र पोषित योजना विश्व पर्यटन दिवस के मौके पर राज्य को मिले. वर्ष 2014 में भी मोदी सरकार ने प्रदेश को कोई नई योजना नहीं दी थी, जबकि केंद्र द्वारा संचालित दो दर्जन से ज्यादा योजनाएं केंद्रीय धन समय पर नहीं मिलने की वजह से पूरी तरह से चरमरा गई हैं. करीब चार ऐसी केंद्रीय योजनाएं हैं, जो कभी भी बंद होने की स्थिति में हैं.

विश्व पर्यटन दिवस पर भी प्रदेश सरकार कुछ भी खास करने में असमर्थ दिखी. केवल सफाई अभियान, विचार गोष्ठी व वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम करके पूरे प्रदेश में पर्यटन विभाग ने अपनी खानापूर्ति की, जबकि विश्व पर्यटन दिवस के मौके पर उम्मीद लगाई गई थी कि कोई न कोई विशेष योजना मोदी सरकार राज्य के पर्यटकों को सौंपेगी, लेकिन ऐसा कुछ भी नही हुआ. केंद्र सरकार के हाथ खीचने के बावजूद सूबे की सरकार स्वाभिमान से सर ऊंचा रखने की नीति पर कायम है.

केन्द्र के पर्यटन मंत्री ने देवभूमि की धरती से घोषणा किया था कि धन की कमी आड़े नहीं आने देंगे, लेकिन सब कुछ हवा हवाई सिद्ध हुआ. अब केंद्र सरकार का साफ-साफ कहना है कि राज्य सरकार अपनी योजनाओं को सशक्त करे. छोटी बड़ी मिलाकर करीब 150 पर्यटन से जुड़ी योजनाएं राज्य पोषित हैं. जिसमें 70 फीसद राज्य पोषित योजनाएं फंड की कमी की वजह से पटरी से उतर गई हैं. पर्यटन विभाग की होने वाली समीक्षा बैठकों में बार-बार फंड की कमी को लेकर चर्चा की जाती है. सरकार की ओर से पर्यटन विभाग को भी भरोसा दिया जाता है कि पर्यटन से जुड़ी योजनाओं में धन की कमी नहीं होने दी जाएगी, लेकिन धरातल पर कहीं भी नहीं दिख रहा है. केंद्र में कम से कम आठ से 10 प्रस्ताव पर्यटन के फंसे हुए हैं और अब तक रिलीज नहीं होने की वजह से इन पर कोई काम शुरू नहीं हो पाया है. सूत्रों की मानें, तो इसमें से चार ऐसे प्रस्ताव हैं, जिसे केंद्र ने राज्य को वापस इसलिए भेजा है कि वे अधूरे हैं. राज्य के पर्यटन विभाग का दावा है कि जल्द ही अधूरी योजनाओं को पूरा करके केंद्र के पास भेजा जाएगा. पर्यटन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि विश्व पर्यटन दिवस के मौके पर कोई नई योजना धन के अभाव में पर्यटकों को नहीं सौंपी गई है. अधिकारी के मुताबिक सरकार चाहती है कि पहले इन योजनाओं को सशक्त किया जाए, जो धन के अभाव में दम तोड़ रही हैं. राज्य के पर्यटन से जुड़े आला अफसरों ने उम्मीद नहीं छोड़ी है. उन्हें अतिरिक्त फंड मिलने की अभी भी उम्मीद है, जिससे राज्य पोषित योजनाओं में तेजी आएगी. मुख्यमंत्री रावत का साफ मानना है कि जनता के मान सम्मान के खिलाफ हम धन पाने के लिए कोई कदम नहीं उठाएंगे, क्योंकि जनता का सहयोग हमारे साथ है. ■

feedback@chauthiduniya.com

कांग्रेस की कलह सतह पर आई

राजकुमार शर्मा

कांग्रेस में सत्ता परिवर्तन व विधानसभा में बहुमत के लिए संख्याबल पूरा होने के बाद शह-मात का खेल कांग्रेस के दिग्गज विजय बहुगुणा और हरीश रावत के बीच नए सिरे से शुरू हुआ. संगठन में शीर्ष पदों पर बैठे लोगों ने पीडीएफ को बहाना बनाकर सत्ता प्रतिष्ठान पर दवाब बनाने की कोशिश की, पीडीएफ को सत्ता में सहयोगी बनाए रखने के मुख्यमंत्री के फैसले के बाद दबाव की रणनीति काम नहीं आई. पूर्व मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा के कांग्रेस भवन में आकर प्रदेश अध्यक्ष किशोर उपाध्याय से लंबी गुफ्तगू को सामान्य भेंट बताया जा रहा हो, इसके निहितार्थ कुछ और ही निकाले जा रहे हैं. पीडीएफ की मौजूदगी व 2017 के विधानसभा चुनावों में टिकटों को लेकर कांग्रेस के बड़े नेताओं की पीड़ा एक समान है. इसी पीड़ा को साझा करने के साथ बहुगुणा किशोर उपाध्याय को विजय मंत्र भी दे गए, ताकि दूसरा पक्ष हरीश रावत खेमा दबाव महसूस करे. दिल्ली में कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से बहुगुणा की मुलाकात को इसी कड़ी के रूप में देखा जा रहा है. जिन क्षेत्रों में पीडीएफ विधायक कैबिनेट मंत्री हैं, उन क्षेत्रों में कांग्रेस कार्यकर्ताओं की उपेक्षा का आरोप लगाकर पीडीएफ को सरकार से हटाने का नया तरीका तलाशा गया, फिलहाल वह भी कामयाब होता नहीं दिखाई दे रहा है. पीडीएफ के विधायकों का सरकार में बने रहने से न केवल विधानसभा चुनाव बल्कि अगले लोकसभा चुनाव की राजनीतिक गणित पर भी असर पड़ता है, खासकर टिहरी संसदीय सीट पर. टिहरी संसदीय सीट के अंतर्गत आने वाली दो महत्वपूर्ण विधानसभा सीटों, टिहरी व उत्तरकाशी में पीडीएफ के दिनेश धनै व प्रीतम सिंह पंवार हरीश रावत सरकार में कैबिनेट हैं और सूबे की सरकार में अहम के साथ मलाईदार विभाग संभाले हुए हैं. वर्ष 2017 में होने वाले विधानसभा चुनावों तक रावत सरकार की पीडीएफ के साथ जुगलबंदी चुनावों में कांग्रेस के टिकटों के बंटवारे को भी गड़बड़ा सकती है. यदि ऐसा हुआ, तो विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ दल की तासीर भी और तस्वीर भी बदल सकती है. मौजूदा समय में जो निर्दलीय हैं वे कांग्रेसी हो सकते हैं और जो कांग्रेसी हैं वे निर्दलीय के रूप में चुनाव मैदान में उतर सकते हैं. पार्टी सूत्रों का कहना है कि इन्हीं बिंदुओं पर पूर्व मुख्यमंत्री बहुगुणा व पीसीसी अध्यक्ष उपाध्याय के बीच गुफ्तगू हुई और संभवत: इसके निदान के लिए राह तलाशने की कवायद भी. सूत्रों का दावा है कि गत दिनों बहुगुणा पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी से उनके नईदिल्ली स्थित निवास पर मिले. विजय बहुगणा का मुख्यमंत्री पद से हटना, हरीश रावत के मुख्यमंत्री बनने के बाद सतपाल महाराज का कांग्रेस छोड़ना, अमृता रावत का हरीश रावत कैबिनेट से इस्तीफा व दिनेश धनै के हरीश रावत कैबिनेट में शामिल होने तक के घटनाक्रम ने सत्ता प्रतिष्ठान से जुड़े शीर्ष पदों पर बैठे लोगों के रिश्तों को और अधिक बिगाड़ दिया है, जिससे इंकार नहीं किया जा सकता. सत्ता परिवर्तन से उपजे राजनीतिक घटनाक्रम के बाद कांग्रेस में कुछ लोगों की पीड़ा भी एक समान है. बदले हालात में मेल-जोल बढ़ने से दबाव की राजनीति काम आ सकती है. ■

feedback@chauthiduniya.com

गुरु ने दी थी मोदी को मां गंगा ने बुलाया है की प्रेरणा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आध्यात्मिक गुरु ब्रह्मलीन स्वामी दयानंद सरस्वती विलक्षण प्रतिभा के धनी थे. स्वामी दयानंद सरस्वती की प्रतिभा ही कहेंगे कि वह सामने वाले व्यक्ति के हाव-भाव को देखकर उसके मन की बात जान लेते थे. प्रश्न पूछने से पहले ही जवाब सुनकर कई बार उनके अनुयायी अचरज में पड़ जाते थे. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी स्वामी दयानंद की इस विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित थे. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को जब काशी से चुनाव लड़ने की बात आई, तो उस समय गुजरात छोड़ कर काशी जा कर लोकसभा का चुनाव लड़ने की बात पर उलझ गए. उन्हें फैसला लेने में कठिनाई हो रही थी, तब मोदी के गुरू ब्रह्मलीन स्वामी दयानंद सरस्वती ने साफ कहा था जा बेटा तुमको मां गंगा ने बुलाया है. काशी पहुंच कर इसी सच को मोदी ने अपने मंच से घोषित किया था. गंगा में दिनों दिन बढ़ते प्रदूषण से सरस्वती जी बेहद चिंतित रहते थे. उन्होंने मोदी जी को गंगा की सफाई के लिए मिशन 2020 के साथ विजन दे कर दुनिया से विदाई ली. उन्होंने संत समाज से गंगा में जल समाधी न लेने, गंगा को गंदगी से मुक्त रख कर गंगा के सफाई को अपना एक हिस्सा बनाने की प्रेरणा भी दी. गुरू को महासमाधी लेने के बाद लोगों की अपेक्षा प्रधानमंत्री मोदी से है कि गंगा को स्वच्छ, निर्मल गंगा बनाने का सपना साकार करेगें. इस काम को भी पुरा कराने का संकल्प गुरू जी ने मोदी जी से करवाया जरूर है, इसी कारण मोदी गंगा के मसले पर कुछ ज्यादा ही गंभीर हैं.

देश-विदेश से स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुयायी उनसे सलाह लेने धर्मनगरी ऋषिकेश पहुंचते थे. इसके साथ ही स्वामी दयानंद सरस्वती संकल्प के साथ नया कार्य शुरू करवाते थे. उनकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वह किसी भी नए काम को शुरू करने से पहले संकल्प करवाते थे, जो कभी अधूरा नहीं होता. समाजसेवा में अग्रणी स्वामी दयानंद का लक्ष्य वर्ष 2020 तक देश के प्रत्येक जिले में छात्रावास खोलने का था, जहां बच्चे पढ़ाई कर अपने सुनहरे भविष्य की राह आसान कर सकें.

उत्तराखंड में कर्णप्रयाग, श्रीनगर, रानीपोखरी, हरिद्वार में छात्रावास की सुविधा है, जहां सैकड़ों नौनिहाल रहते हैं. शिक्षा-चिकित्सा का कार्य देख रहे स्वामी शिव ब्रह्मनंद सरस्वती बताते हैं कि स्वामी जी ने वर्ष 2020 का विजन वर्ष 2000 में ही तैयार किया था. 2020 तक देशभर में 300 छात्रावास खोलने की स्वामी दयानंद ने योजना बनाई है. अब तक 150 जिलों में छात्रावास खोले जा चुके हैं. वह प्रत्येक जिले में एक छात्रावास खोलकर गरीब बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलवाना चाहते थे. वर्ष 2000 में ऑल इंडिया मूवमेंट फॉर सेवा का गठन इसी कार्य के लिए किया गया. उनके छात्रावास में रहने वाले बच्चों को प्रतिभा के मुताबिक सबसे अच्छे स्कूल में पढ़ाई करवाई जाती है. अब तक कई गरीब मेधावी बच्चे बीटेक, एमबीबीएस, स्नातक कर बेहतर संस्थानों में सेवा दे रहे हैं. कई सेना में अधिकारी भी हैं. ■

चौथी दुनिया ब्यूरो

feedback@chauthiduniya.com